लखनऊ
रविवार 6 जुलाई 2025
वर्ष : 10 | अंकः 349
मूल्य : 1 रुपये
पृष्ठ : 8

हिंदी दैनिक आर्यावर्त क्रांति

UPHIN/2014/57034

हमें परिमित निराशा को स्वीकार करना चाहिए, लेकिन अपरिमित आशा को कभी नहीं खोना चाहिए। - मार्टिन लूथर किंग, जूनियर

TODAY WEATHER

DAY 37° Hi
NIGHT 26° Low

संक्षेप

बुजुर्ग महिला से साइबर ठगी मामले में 3 गिरफ्तार, पुलिस बोली- ठगों ने खरीदे हथियार

नोएडा। नोएडा की साइबर सेल एक बुजुर्ग महिला के साथ हुई ठगी मामले में तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इन ठगों ने एक बुजुर्ग महिला को डिजिटल अरेस्ट का डर दिखाकर 3.29 करोड़ रुपये की ठगी की थी। इस गिरफ्तारी के बारे में एडीसीपी मनीष सिंह ने पूरी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि तीनों आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। इनमें दो दिल्ली और एक नोएडा का रहने वाला है। ठगी के 17 लाख रुपये भी फ्रीज कराए हैं। 30 जून को पीड़ित बुजुर्ग महिला ने साइबर सेल थाने में शिकायत दर्ज कराई थी। शिकायत के मुताबिक, ठगों ने फोन कॉल के जरिए महिला को डराया कि उनके बैंक खाते से जुआ और अवैध हथियारों की खरीदारी हुई है। डर और धमकी के दबाव में महिला ने ठगों के बताए खातों में 3.29 करोड़ रुपये ट्रांसफर कर दिए। एडीसीपी के मुताबिक, जांच में पता चला कि आरोपियों ने अपने और अन्य लोगों के बैंक खातों का इस्तेमाल ठगी के लिए किया। पूछताछ के दौरान सामने आया कि इन खातों में 71 लाख और 93 लाख रुपये की राशि विभिन्न समय पर जमा की गई थी। एडीसीपी मनीष सिंह ने बताया कि आरोपियों ने अपने बैंक खाते किराए पर देकर ठगी को अंजाम दिया। ये खाते अन्य अपराधियों को उपलब्ध कराए गए थे, जिनका इस्तेमाल साइबर ठगी के लिए किया गया। पुलिस ने तीनों आरोपियों को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया, जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। पुलिस ने मामले में 17 लाख रुपये फ्रीज किए हैं और बाकी राशि की बरामदगी के लिए जांच जारी है।

बड़े उद्योगपति गोपाल खेमका का मर्डर, बाइक सवार अपराधियों ने सिर में मारी गोली; 6 साल पहले बेटे की भी हुई थी हत्या

पटना। बिहार की राजधानी पटना में शुक्रवार रात एक सनसनीखेज वारदात हुई, जहां गांधी मैदान थाना क्षेत्र में जाने-माने व्यवसायी गोपाल खेमका की गोली मारकर हत्या कर दी गई। यह घटना 4 जुलाई की रात करीब 11 बजे की है। मिली जानकारी के अनुसार, गोपाल खेमका पनास होटल के पास स्थित अपने अपार्टमेंट के पास जैसे ही अपनी कार से उतरे, अज्ञात हमलावरों ने उन पर गोलीबारी कर दी। मौके पर ही उनकी मौत हो गई। सूचना मिलते ही गांधी मैदान थाना पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस ने घटनास्थल को सील कर दिया है और एक गोली और एक खोखा बरामद किया है। पुलिस ने बताया कि घटना की जांच शुरू कर दी गई है और आरोपियों की तलाश जारी है। पटना एसपी दीक्षा ने बताया कि, 4 जुलाई की रात 11 बजे के करीब व्यवसायी गोपाल खेमका की गांधी मैदान के दक्षिणी इलाके में गोली मारकर हत्या कर दी गई। घटनास्थल को सुरक्षित किया गया है और जल्द ही अपराधियों की गिरफ्तारी की जाएगी। गोपाल खेमका पटना के प्रमुख व्यवसायियों में से एक थे और मगध अस्पताल के मालिक भी थे। इससे पहले 6 साल पहले, उनके बेटे गुंजन खेमका की भी वैशाली जिले के औद्योगिक थाना क्षेत्र में अपराधियों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी। उस समय भी इस घटना को लेकर काफी बवाल मचा था।

बच्चों की सुरक्षा पर सुप्रीम कोर्ट चिंतित, जस्टिस सूर्यकांत बोले- अब बच्चों को गवाह नहीं, इंसान समझिए

हैदराबाद, एजेंसी। देश में बच्चों के खिलाफ अपराध तेजी से बढ़ रहे हैं। लेकिन दुख की बात यह है कि ऐसे मामलों में न्यायिक व्यवस्था और बच्चों की सुरक्षा का सिस्टम खुद बच्चों के लिए परेशानी का सबब बन जाता है। सुप्रीम कोर्ट के जज जस्टिस सूर्यकांत ने इसी पर कड़ा बयान दिया। उन्होंने कहा कि भारत का बच्चों की सुरक्षा से जुड़ा ढांचा अभी भी बिखरा हुआ है और पूरी तरह सक्षम नहीं है। हमें बच्चों को सिर्फ गवाह नहीं, बल्कि पूरी देखभाल और सुरक्षा की जरूरत वाले इंसान की तरह देखने की सोच विकसित करनी होगी।

हैदराबाद में पॉक्सो कानून पर आयोजित स्टेट लेवल मीट 2025 के

उद्घाटन सत्र में बोलते हुए सुप्रीम कोर्ट जज जस्टिस सूर्यकांत ने कहा कि बच्चों के खिलाफ अपराध के मामलों में न्याय व्यवस्था को बच्चों के जख्मों को और न बढ़ाने वाला बनाना होगा। उन्होंने कहा कि जब तक बच्चे सही मायनों में न्याय महसूस नहीं करते, तब तक हमारा काम अधूरा है।

सिर्फ अदालत नहीं, बाहर भी चाहिए बच्चों की सुरक्षा

जस्टिस सूर्यकांत ने कहा कि बच्चों की सुरक्षा सिर्फ अदालत के अंदर तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। उन्हें घर, स्कूल, मोहल्ले और समाज में हर जगह सुरक्षित महसूस कराना जरूरी है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि जब कोई बच्चा अपने साथ हुए अपराध की बार-बार पुलिस, शिक्षक, डॉक्टर, वकील और फिर जज के सामने कहानी सुनाता है, तो उसकी आवाज कमजोर पड़ जाती है। यही सिस्टम की असल खामी है।

बच्चों की सुरक्षा सिर्फ कानून का नहीं, नैतिक दायित्व भी

जस्टिस सूर्यकांत ने कहा कि बच्चों की सुरक्षा सिर्फ कानूनी जिम्मेदारी नहीं, बल्कि नैतिक कर्तव्य भी है। भारत जैसे सामाजिक देश में यह संविधान का भी वादा है। उन्होंने कहा कि बच्चों के पुनर्वास को किसी फुटनोट की तरह नहीं, बल्कि पूरी व्यवस्था की बुनियाद बनाना होगा।

तेलंगाना में 'भरोसा प्रोजेक्ट' बच्चों की मदद को आगे

तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने भी कार्यक्रम में कहा कि बच्चों और महिलाओं की सुरक्षा उनकी सरकार की पहली प्राथमिकता है। उन्होंने बताया कि तेलंगाना में 'भरोसा प्रोजेक्ट' के तहत 29 केंद्र चल रहे हैं, जहां बच्चों और महिलाओं को पुलिस, कानूनी मदद, डॉक्टर और काउंसलिंग की सुविधा मिलती है। उन्होंने कहा कि POCSO और जुवेनाइल जस्टिस एक्ट बेहतरीन कानून हैं, लेकिन चुनौतियां अभी बाकी हैं।

कांवड़ यात्रा नेमप्लेट विवाद पहुंचा सुप्रीम कोर्ट, हिंदू संगठनों की मनमानी गतिविधियों पर रोक लगाने की गुहार

नई दिल्ली, एजेंसी। कांवड़ यात्रा नेमप्लेट विवाद का मामला एक बार फिर सुप्रीम कोर्ट पहुंच गया है। पिछले साल सर्वोच्च अदालत ने इस मामले में यूपी सरकार के आदेश पर रोक लगा दी थी, जबकि इस साल यूपी सरकार की बजाय हिंदू संगठनों के द्वारा यात्रा के रास्ते में आने वाली दुकान, ढाबा व रेहड़ी-पटरी मालिकों की पहचान को लेकर मनमानी गतिविधियां की जा रही है। इसके खिलाफ सर्वोच्च अदालत में आवेदन दायर हुआ है और ऐसी सभी गतिविधियों पर रोक लगाने का निर्देश यूपी, उत्तराखंड, दिल्ली और मध्य प्रदेश को जारी करने की मांग की गई है। वकील नरेंद्र मिश्रा के माध्यम से मोहम्मद अहमद की ओर से दायर आवेदन में सुप्रीम कोर्ट से मांग की गई है कि यूपी, उत्तराखंड, दिल्ली और मध्य प्रदेश में इस तरह की सभी गतिविधियों पर तत्काल रोक लगाई जाए।

दलाईलामा ने कर डाली बड़ी भविष्यवाणी, अभी 40 साल और जिंदा रहूंगा, मुझ पर है इनकी कृपा

नई दिल्ली, एजेंसी। तिब्बती धर्मगुरु दलाई लामा तेनजिन ग्यात्सो के 90वें जन्मदिन से एक दिन पूर्व शनिवार को उनके दीर्घायु की कामना के लिए दो दिवसीय विशेष धार्मिक प्रार्थना समारोह की शुरुआत मैक्लोडगंज स्थित मुख्य तिब्बती मंदिर त्सुगलाखंग में हुई। इस अवसर पर दलाई लामा ने अपने संबोधन में कहा, कई भविष्यवाणियों को देखते हुए मुझे लगता है कि अवलोकितेश्वर की कृपा मुझ पर है। मैंने अब तक अपना सर्वश्रेष्ठ दिया है और आगे भी 30-40 साल तक जीने की आशा करता हूं। आपकी प्रार्थनाएं अब तक फलदायी रही हैं।

उन्होंने कहा कि भले ही तिब्बतवासी निर्वासन में जीवन जी रहे हैं, लेकिन भारत में रहते हुए

उन्होंने अनेक लोगों की सेवा और कल्याण के लिए कार्य किया है। उन्होंने यह भी दोहराया कि वे जब तक संभव होगा, जीवों की भलाई के लिए समर्पित रहेंगे। समारोह में केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (ष्टञ्ज्र) द्वारा समस्त तिब्बती समुदाय की ओर से दीर्घायु प्रार्थना अर्पित की गई। कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री किरन रिजिजू, अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पेमा खांडू, हॉलीवुड अभिनेता व तिब्बत समर्थक रिचर्ड गेरे, और अन्य विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे।

तिब्बती मूल के विभिन्न बौद्ध सम्प्रदायों के धार्मिक नेताओं ने भी समारोह में भाग लिया और दलाई लामा की दीर्घायु के लिए प्रार्थनाएं कीं। लगभग 9:45 बजे दलाई लामा मंदिर पहुंचे, जहां उम्रजनित कमजोरी के बावजूद वे प्रसन्नचित्त दिखाई दिए और श्रद्धालुओं को आशीर्वाद देते हुए कई बार रुके। हालांकि दलाई लामा का जन्मदिन ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार 6 जुलाई को आता है, लेकिन तिब्बती पंचांग के अनुसार यह विशेष जन्मोत्सव 30 जून से धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ मनाया जा रहा है। समारोह में पूरे विश्व से श्रद्धालु जुटे हैं।

सांस्कृतिक संबंधों के लिए दूरी कोई बाधा नहीं, अर्जेंटीना में भव्य स्वागत पर बोले प्रधानमंत्री मोदी

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को कहा कि सांस्कृतिक संबंधों के लिए दूरी कोई बाधा नहीं है। यह बात उन्होंने अर्जेंटीना के ब्यूनस आयर्स में अल्वियर पैलेस होटल पहुंचने पर भारतीय समुदाय द्वारा किए गए गर्मजोशी भरे और पारंपरिक स्वागत के बाद कही।

प्रधानमंत्री मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कुछ तस्वीरें शेयर करते हुए लिखा, सांस्कृतिक जुड़ाव के मामले में दूरी कोई बाधा नहीं है! ब्यूनस आयर्स में भारतीय समुदाय द्वारा किए गए शानदार स्वागत से सम्मानित महसूस कर रहा हूं। यह देखना वाकई बहुत अच्छा है कि कैसे घर से हज़ारों किलोमीटर दूर, भारत की भावना

हमारे भारतीय समुदाय के माध्यम से चमकती है। अर्जेंटीना के ब्यूनस आयर्स स्थित अल्वियर पैलेस होटल पहुंचने पर भारतीय समुदाय ने गर्मजोशी से मोदी-मोदी, जय हिंद और भारत माता की जय के नारों के साथ प्रधानमंत्री मोदी का स्वागत किया। इस दौरान पारंपरिक भारतीय शास्त्रीय नृत्य का प्रदर्शन किया गया, जिसमें भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की छाप दिखी। वहां मौजूद लोगों ने प्रधानमंत्री मोदी से ऑटोग्राफ भी लिया। बता दें कि पीएम मोदी की यह अर्जेंटीना यात्रा 57 साल में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली द्विपक्षीय यात्रा है, जो इसके ऐतिहासिक महत्व को दर्शाती है। पीएम मोदी राष्ट्रपति जेवियर माइली के निमंत्रण पर अर्जेंटीना पहुंचे हैं। दोनों नेताओं के बीच आखिरी मुलाकात नवंबर 2024 में ब्राजील के रियो डी जेनेरियो में जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान हुई थी।

इस यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी अर्जेंटीना के राष्ट्रीय नायक जनरल जोस डी सैन मार्टिन की प्रतिमा पर श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। उनका औपचारिक स्वागत किया जाएगा और राष्ट्रपति माइली के साथ प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता होगी, जिसके बाद उनके सम्मान में दोपहर का भोजन आयोजित किया जाएगा।

यह यात्रा प्रधानमंत्री मोदी की पांच देशों की यात्रा का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य वैश्विक दक्षिण के साथ संबंधों को गहरा करना है। अर्जेंटीना की यात्रा के बाद पीएम मोदी ब्राजील जाएंगे, जहां वे ब्रासीलिया की द्विपक्षीय यात्रा करने से पहले रियो डी जेनेरियो में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे।

केंद्र ने पुल, फ्लाईओवर, सुरंग वाले राजमार्गों के लिए टोल रेट्स में 50 प्रतिशत तक की कटौती की

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्र सरकार ने वाहन चालकों को बड़ी राहत देते हुए राष्ट्रीय राजमार्गों के कुछ हिस्सों पर टोल रेट्स में 50 प्रतिशत तक की कमी की है। इन हिस्सों में सुरंग, पुल, फ्लाईओवर और एलिवेटेड रोड जैसे स्ट्रक्चर शामिल हैं। इस कदम का उद्देश्य यात्रा की लागत को कम करना और सड़क यात्रा को लोगों के लिए अधिक किफायती बनाना है।

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने राष्ट्रीय राजमार्ग शुल्क नियम, 2008 में संशोधन किया है और टोल चार्ज की गणना के लिए एक नया फॉर्मूला अधिसूचित किया है। नए नियम के अनुसार, अब टोल की गणना इस तरह से की जाएगी कि राजमार्ग के उन हिस्सों पर शुल्क में कमी आएगी, जिनमें मुख्य रूप से महंगे इंफ्रास्ट्रक्चर शामिल हैं।

अधिसूचना के अनुसार, अगर राष्ट्रीय राजमार्ग के किसी हिस्से में फ्लाईओवर या सुरंग जैसे स्ट्रक्चर शामिल हैं तो टोल की गणना या तो स्ट्रक्चर की लंबाई का दस गुना या राजमार्ग खंड की कुल लंबाई का पांच गुना दोनों में से कम मूल्य के आधार पर की जाएगी। मंत्रालय ने उदाहरण देते हुए कहा कि अगर राजमार्ग का 40 किलोमीटर का हिस्सा पूरी तरह से पुल या फ्लाईओवर जैसे स्ट्रक्चर से बना है तो टोल की गणना स्ट्रक्चर की लंबाई का 10 गुना (400 किमी) या कुल लंबाई का 5 गुना (200 किमी) में से कम मूल्य आधार यानी 200 किमी के आधार पर की जाएगी, जिससे प्रभावी रूप से दर आधी हो जाएगी।

भारत में हर घंटे 60 अतिरिक्त उड़ानें जुड़ी और हर 40 दिन में एक नया हवाई अड्डा बना : नागरिक उड्डयन मंत्री

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू ने कहा कि हर 40 दिन में एक नए हवाई अड्डे के साथ देश में मात्र 10 वर्षों में 88 नए हवाई अड्डे बने हैं और हर घंटे 60 अतिरिक्त उड़ानें जुड़ी हैं। केंद्रीय मंत्री के अनुसार, आज भारत में उड़ान भरना अधिक सुलभ और किफायती हो चुका है। केंद्रीय मंत्री नायडू ने कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, भारतीय आकाश अधिक जुड़ा हुआ, प्रतिस्पर्धी और सहयोगात्मक है। उन्होंने समावेशी विमानन विकास को प्राप्त करने के लिए सहयोगात्मक, राज्य-विशिष्ट रणनीतियों के लिए मंत्रालय की प्रतिबद्धता दोहराई। नागरिक उड्डयन मंत्रालय द्वारा आयोजित उत्तर क्षेत्र नागरिक उड्डयन मंत्रियों का सम्मेलन 2025 में केंद्रीय मंत्री ने कहा, इस रणनीतिक पहल के माध्यम से हमारा उद्देश्य क्षेत्रीय

अवसरों की पहचान करना और टियर 2 और 3 श्रेणी के शहरों की अपार क्षमता को साकार करना है।

कार्यक्रम में उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि नागरिक उड्डयन क्षेत्र राज्य में क्षेत्रीय कनेक्टिविटी, पर्यटन और सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने नागरिक उड्डयन क्षेत्र में हो रही प्रगति की सराहना की और राज्य की पहाड़ी भू-भागों में हेलीकॉप्टर संचालन की सुरक्षा सुनिश्चित करने की महत्ता को रेखांकित किया, जिसके लिए राज्य सरकार और मंत्रालय दोनों प्रतिबद्ध हैं। मंत्रालय द्वारा विमानन क्षेत्र में राज्यों के लिए अवसरों पर कई प्रस्तुतियां दी गईं। मंत्रालय द्वारा राज्यों के लिए उपलब्ध अवसरों पर प्रस्तुतियों के बाद केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री नायडू के नेतृत्व में राज्य सरकारों के प्रतिनिधिमंडलों और मंत्रालय के अधिकारियों के मध्य बैठकें आयोजित की गईं।

संभल हादसे पर प्रधानमंत्री मोदी ने जताया दुख, मृतकों के परिजनों को 2-2 लाख की आर्थिक सहायता

नई दिल्ली, एजेंसी। उत्तर प्रदेश के संभल जिले में हुए भीषण सड़क हादसे में 8 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हैं और उनका इलाज अलीगढ़ मेडिकल कॉलेज में चल रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस हादसे पर गहरा दुख जताते हुए मृतकों के परिजनों और घायलों के लिए आर्थिक सहायता का ऐलान किया।

प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पीएम मोदी के हवाले से लिखा, संभल, उत्तर प्रदेश में दुर्घटना के कारण जानमाल के नुकसान से गहरा दुख हुआ है। जिन लोगों ने अपने प्रियजनों को खोया है, उनके प्रति संवेदनाएं। घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं। पीएमएनआरएफ से प्रत्येक मृतक के परिजनों को 2-2 लाख रुपए और घायलों को 50 हजार रुपए की अनुग्रह राशि दी जाएगी।

दरअसल, शुक्रवार शाम थाना जुनावई क्षेत्र में एक तेज रफ्तार बोलेरो बेकाबू होकर जनता इंटर कॉलेज की दीवार से टकरा गई। सभी बोलेरो सवार संभल के ग्राम हरगोविंदपुर (थाना जुनावई) के रहने वाले थे। वे बिल्सी (जिला बदायूं) बारात लेकर जा रहे थे। इसी दौरान गाड़ी अनियंत्रित होकर जनता इंटर कॉलेज की दीवार से जा टकराई और पलट गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि गाड़ी के परखच्चे उड़ गए और मौके पर ही दूल्हे समेत 5 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई।

धीमी हो रही जनसंख्या वृद्धि दर, क्या कोरोना महामारी है इसके पीछे की वजह? चौंका रहे ये आंकड़े

नई दिल्ली, एजेंसी। जब कोविड-19 महामारी फैली, तो सभी को पता था कि मौतों की संख्या सामान्य से ज्यादा होगी और जैसा कि उम्मीद थी वैसा ही हुआ। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि महामारी के चरम पर पहुंचने के बाद भी 2022 में जन्मों के मुकाबले मौतों का अनुपात बहुत ज्यादा रहा। मध्य प्रदेश और राजस्थान को छोड़कर लगभग हर राज्य में जन्मों के मुकाबले मौतों का अनुपात 2019 के स्तर तक नहीं आया है।

वास्तव में, ज्यादातर लोगों के लिए यह 2020 की तुलना में भी अधिक है, जो यह दर्शाता है कि यह केवल एक अस्थायी कोविड झटका नहीं था, बल्कि संभवतः एक दीर्घकालिक जनसांख्यिकीय बदलाव था। उदाहरण के लिए, गोवा को ही लें। 2022 में, मौतों की संख्या जन्मों का 87 प्रतिशत थी, जो 2019 में दर्ज 70 प्रतिशत के स्तर से कहीं अधिक थी और 2020 की तुलना में भी अधिक थी।

चौंका रहे इन राज्यों के आंकड़े

तमिलनाडु में भी इसी तरह का रुझान देखने को मिलता है, जहां 2022 में यह अनुपात 74 प्रतिशत था, जो 2020 के बराबर है, लेकिन कोविड से पहले के 67 प्रतिशत के आंकड़े से काफी ऊपर है। केरल का अनुपात भी 74 प्रतिशत पर बना हुआ है, जो 2019 के 56 प्रतिशत से काफी ऊपर है। सिक्किम, जिसकी प्रजनन दर सभी भारतीय राज्यों में सबसे कम है। यहां भी 2022 में 61 प्रतिशत का अनुपात देखा गया, जो कोविड से पहले के वर्ष 2019 और महामारी के वर्ष 2020 दोनों से अधिक है। यहां तक कि चंडीगढ़ और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह जैसे केंद्र शासित प्रदेश, जहां 2021 में तेज उछाल देखा गया था, वो भी पहले के स्तर पर वापस नहीं आ पाए हैं। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह ने 2022 में 69 प्रतिशत मृत्यु-से-जन्म अनुपात की जानकारी दी, जबकि 2019 में यह 58 प्रतिशत था। इस बीच, बिहार, उत्तर प्रदेश और झारखंड जैसे युवा आबादी वाले राज्यों में मृत्यु-से-जन्म अनुपात बहुत कम है, जो 30 प्रतिशत से कम है (बिहार के मामले में, यह 15 प्रतिशत से भी कम है)। यूपी और झारखंड जैसे राज्यों में जनसंख्या वृद्धि के संकेत हैं, जिनमें से 2021 में उल्लेखनीय उछाल दिखाई देता है, लेकिन 2022 में थोड़ा कम हो गई।

कम हो रही जनसंख्या वृद्धि दर

अब ऐसे में सवाल उठ रहा है कि क्या जन्म के मुकाबले मौत की दर के अनुपात का ये रुझान जारी रहेगा? तो अगले कुछ सालों के आंकड़े यह समझने के लिए महत्वपूर्ण होंगे कि क्या भारत वास्तव में नए जनसांख्यिकी चरण में प्रवेश कर चुका है या एक अस्थाई विकृति है। हालांकि, अब तक की स्थिति से साफ संकेत मिल रहे हैं कि जनसंख्या वृद्धि की दर धीमी हो रही है।

कंगना रनौत का ट्रोलर्स को जवाब, बोलीं – बाढ़ प्रभावित इलाकों में पहुंचने की कोशिश की, लेकिन...

मंडी। हिमाचल प्रदेश में भारी बारिश ने इन दिनों तबाही मचा रखी है। अचानक आई बाढ़, लैंडस्लाइड और बादल फटने से हाहाकार मचा हुआ है। मंडी सीट से लोकसभा सांसद और बॉलीवुड एक्ट्रेस कंगना रनौत अपने क्षेत्र में नजर नहीं आ रही हैं, जिसे लेकर वह ट्रोल हो रही हैं। वह विरोधियों के साथ अपनों के भी निशाने पर आ गई हैं। कंगना रनौत ने शुक्रवार को ट्रोलर्स को करारा जवाब दिया। कंगना रनौत ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, हिमाचल प्रदेश में लगभग हर साल बाढ़ से होने वाली तबाही को देखना दिल दहला देने वाला है। मैंने सेराज और मंडी के अन्य इलाकों में बाढ़ प्रभावित इलाकों में पहुंचने की कोशिश की, लेकिन विपक्ष के सम्मानित नेता जयराम ठाकुर ने सलाह दी कि जब तक संपर्क और

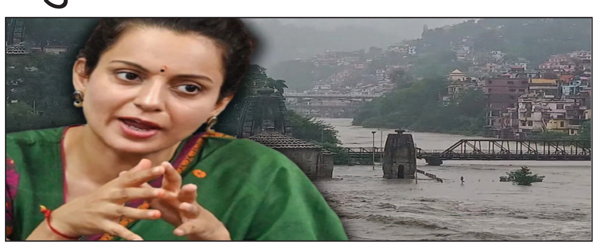

प्रभावित इलाकों तक पहुंच बहाल नहीं हो जाती, तब तक इंतजार करें।

लोकसभा सांसद ने बताया कि मंडी डीसी ने शुक्रवार को भी रेड अलर्ट जारी किया है। इस पर अधिकारियों की मंजूरी का इंतजार है, जल्द से जल्द वहां पहुंचूंगी। सोशल मीडिया पर जयराम ठाकुर का एक वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है। इस वीडियो में पत्रकारों ने पूछा कि कंगना रनौत आपदा में मंडी के प्रभावित इलाकों से दूर क्यों हैं? इस सवाल के जवाब में पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि उन्हें नहीं मालूम कि उन्होंने ऐसा क्यों किया? जयराम ठाकुर ने कहा, यहां हम लोग मंडी की जनता के साथ जीने-मरने के लिए हैं। जिनको इसकी चिंता नहीं है, उनके बारे में बोलना नहीं चाहता।

कांग्रेस की प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने एक्स पर जयराम ठाकुर का वीडियो शेयर करते हुए लिखा, हिमाचल के मंडी में बादल फटने से बहुत नुकसान हुआ है। पत्रकार ने भाजपा नेता जयराम ठाकुर से पूछा, सांसद कंगना ने इसपर एक ट्वीट भी नहीं किया। उनका जवाब, जिन्हें चिंता है वे बोल रहे हैं।

यूपी में दूल्हे समेत आठ की मौत: दीवार से चिपक गई थी बोलेरो...बुरी तरह फंसे थे लोग, इस वजह से हुआ दर्दनाक हादसा

आर्यावर्त संवाददाता

संभल। उत्तर प्रदेश के संभल में दर्दनाक सड़क हादसा बोलेरो चालक को लापरवाही से हुआ है। बोलेरो रफ्तार बेकाबू थी। इसके चलते ही चालक ने स्टेयरिंग से नियंत्रण खो दिया और अचानक से गाड़ी पलट गई। हादसा इतना भीषण था कि दूर तक आवाज पहुंची, लोग मौके पर आए, लेकिन मदद नहीं कर सके क्योंकि क्षतिग्रस्त बोलेरो दीवार से चिपक जैसी गई थी। पुलिस के पहुंचने पर शव और घायल बोलेरो से बाहर निकाले गए। एसपी कृष्ण कुमार विश्नोई ने यह जानकारी दी है। उन्होंने कहा कि वह हादसे के बाद मौके पर पहुंच गए थे। उन्होंने पुलिस के साथ आम लोगों से भी हादसे की जानकारी ली।

एसपी ने बताया कि प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक हादसा चालक की लापरवाही से हुआ है। बोलेरो की रफ्तार तेज थी। अचानक से ही कॉलेज की दीवार से जा भिड़ी। इस भीषण हादसे में आठ लोगों की जान चल गई है, एक घायल का उपचार चल रहा है, जिसकी हालत गंभीर है। तीन वर्षीय बालिका की हालत ठीक है। मौके पर पांच लोगों ने दम तोड़ा था। घटनास्थल पर पुलिस को आधार कार्ड मिले थे। उसके माध्यम से सूचना पीड़ित परिवार तक पहुंचाई गई।

एसपी ने बताया कि हादसे के बाद पुलिस मौके पर पहुंची तो क्रेन से बोलेरो को दीवार से दूर किया गया। इसके बाद मशीन से बोलेरो के दरवाजे काटे गए। तब शव और घायलों को निकाला गया। पहले सीएचसी भर्ती कराया और बाद में अलीगढ़ के लिए रेफर कराया गया।

तत्काल मिलता उपचार तो शायद बच सकती थी कई की जान

घटनास्थल और थाने की दूरी करीब 400 मीटर है। हादसा करीब 7:30 बजे हुआ है। सूचना पर तत्काल पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस के पहुंचने तक राहगीर मदद करने के प्रयास में लगे रहे। जब पुलिस पहुंची तो घायल सीएचसी ले जाए गए। पांच लोगों की तो मौके पर ही मौत हो गई थी। पांच लोग तड़प रहे थे। हादसा होने और उपचार मिलने में करीब 40 मिनट का समय लग गया। ग्रामीणों ने कहा कि यदि इन घायलों को तत्काल उपचार मिल जाता तो शायद कई लोगों की जान बच सकती थी। हादसा भीषण होने के कारण सभी का खून ज्यादा बह गया। ज्यादा खून बहना और गहरे जख्म होने को ही लोग मौत का कारण मान रहे हैं।

दूल्हे के रवाना होने से आधा घंटा पहले निकल गई थी बरात, शायद इसलिए चालक ने भरी रफ्तार

गांव हरगोविंदपुर से बरात करीब साढ़े छह बजे रवाना हो गई थी। 11 वाहनों में सवार होकर बराती रवाना हुए थे लेकिन तैयारियों और रस्म अदा होने के चलते दूल्हे की रवानगी में देर हुई। सात बजे के बाद ही दूल्हा और परिवार के लोग कार से रवाना हुए तो जुनावई के नजदीक करीब 700 मीटर बाद ही हादसा हो गया।

माना जा रहा है कि चालक ने रफ्तार बरात की गाड़ियों को पकड़ने के लिए भरी थी। इसके चलते ही वह रफ्तार भरता गया और नियंत्रण खो जाने से हादसा हो गया। ग्रामीणों ने बताया कि बरात बदायूं की तहसील बिल्सी के गांव सिरसौल जानी थी। जिसकी दूरी हरगोविंदपुर से करीब 50 किलोमीटर है। कार से एक घंटे का सफर माना जाता है।

बरात की सभी गाड़ियां पहले रवाना हो गई थीं इसलिए चालक ने रफ्तार बढ़ा दी थी। क्योंकि बरात की गाड़ियां करीब 20 किलोमीटर दूर ही गांव दहकमा तक ही पहुंच सकी थीं। हादसे की सूचना जब बरातियों को दी गई थी तो सभी वाहन रास्ते से ही लौट आए। रिश्तेदार और परिजनों का रो रोकर बुरा हाल हो गया। गांव में भी मातम छा गया।

यूपी में दूल्हे समेत आठ की मौत

मेरठ-बदायूं रोड पर शुक्रवार की शाम करीब 7:30 बजे बरातियों की बोलेरो अनियंत्रित होकर इंटर कॉलेज की दीवार से टकरा गई। हादसे में दूल्हे सूरज पाल (20) समेत आठ लोगों की मौत हो गई। मृतकों में दूल्हे की बहन, चाची, चचेरी बहन और रिश्तेदार भी शामिल हैं।

संभल के जुनावई थाना क्षेत्र के हरगोविंदपुर गांव निवासी सुखराम ने अपने बेटे सूरज की शादी जनपद बदायूं के थाना बिल्सी इलाके के सिरसौल गांव में तय की थी। शुक्रवार की शाम बरात गांव सिरसौल जा रही थी। बरातियों की 11 गाड़ियां पहले ही सिरसौल के लिए रवाना हो गईं थीं। एक बोलेरो पीछे रह गई थी, जिसमें दूल्हे समेत 10 लोग सवार थे।

रास्ते में बोलेरो जुनावई स्थित जनता इंटर कॉलेज की दीवार जा टकराई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि बोलेरो के परखच्चे उड़ गए। गाड़ी में सवार सभी लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। ग्रामीणों ने किसी तरह से घायलों को बोलेरो से बाहर निकला और सीएचसी ले गए।

डॉक्टरों ने दूल्हे सूरज पाल (20), उसकी बहन कोमल (15), चाची आशा (26), चचेरी बहन एश्वर्या (3), चचेरे मामा बुलंदशहर के हींगवाड़ी निवासी सचिन (22), सचिन की पत्नी मधु (20) ममेरा भाई बुलंशहर के खुर्जा निवासी गणेश (2) पिता देवा, गांव निवासी चालक रवि (28) की मौत हो गई। जबकि गंभीर रूप से घायल हिमांशी और देवा को अलीगढ़ में भर्ती कराया गया है।

हादसे की जानकारी मिलते ही शादी वाले घर में कोहराम मच गया। परिजन और रिश्तेदार भी दुर्घटनास्थल पर पहुंच गए। संभल एसपी कृष्ण कुमार बिश्नोई ने बताया कि तेज रफ्तार के कारण हादसा हुआ है। बोलेरो कॉलेज की दीवार से टकरा गई थी।

विधायक पुत्र और पूर्व विधायक ने परिजनों को ढांढस बंधाया

हादसे के बाद विधायक गुन्नौर रामखिलाड़ी यादव के बेटे अखिलेश यादव सूचना पाकर सीएचसी पहुंचे और घायलों व उनके परिजनों को ढांढस बंधाते हुए हर संभव मदद का भरोसा दिलाया। इसी दौरान पूर्व विधायक अजीत कुमार उर्फ राजू यादव ने भी मौके पर पहुंच कर घटना की जानकारी ली और मृतकों और घायलों के परिजनों को सांत्वना दी। उधर, सीएमओ डॉ. तरुण पाठक समेत नायब तहसीलदार बबलू कुमार और अनुज कुमार ने सीएचसी पहुंच कर जानकारी ली है। वहीं पुलिस अधीक्षक कृष्ण कुमार विश्नोई घटनास्थल का मुआयना किया।

मनरेगा योजना में 82 मजदूरों की फर्जी हाजिरी का मामला

बल्दीराय/सुल्तानपुर। मनरेगा योजना के तहत स्वीकृत तालाब निर्माण कार्य में 82 मजदूरों की फर्जी उपस्थिति दर्ज करने का मामला सामने आया है। मामले की जांच का जिम्मा एडीओ आईएसबी शिवकुमार, लघु सिंचाई विभाग के अभियंता आकाश सिंह तथा एपीओ मनरेगा नवीन मिश्रा को सौंपा गया है। जांच में यह तथ्य सामने आया कि करीब 9 लाख 22 हजार रुपये की लागत से स्वीकृत इस कार्य का मस्टररोल 2 जुलाई से 17 जुलाई तक तैयार किया गया था। निरीक्षण में कार्यस्थल पर जेसीबी मशीन के निशान पाए गए और सारा कार्य मशीन से कराए जाने की पुष्टि हुई। फर्जी हाजिरी दर्ज करने में संलिप्त पाई गई महिला मेट राजवती को तत्काल प्रभाव से हटा दिया गया है। खंड विकास अधिकारी बल्दीराय राधेश्याम ने बताया कि अब उक्त तालाब निर्माण कार्य को श्रमदान में परिवर्तित कर दिया गया है।

काशी विश्वनाथ धाम में दर्शन के लिए यहां से मिलेगा प्रवेश, सावन में एक करोड़ से ज्यादा भक्त आएंगे

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

वाराणसी। सावन में श्रद्धालुओं को श्री काशी विश्वनाथ मंदिर के गेट नंबर चार, नंदू फारिया, सिल्को गली, ढुंढिराज और सरस्वती फाटक से प्रवेश दिया जाएगा। गंगा में बाढ़ की वजह से ललिता घाट से श्रद्धालुओं का प्रवेश अस्थायी रूप से प्रतिबंधित किया जा सकता है। दर्शन के लिए आने वाले वृद्ध, अशक्त, दिव्यांगजन और बच्चों के लिए गोदौलिया से मैदागिन तक निशुल्क ई-रिक्शा का संचालन किया जाएगा। सावन में श्री काशी विश्वनाथ धाम में एक करोड़ से ज्यादा श्रद्धालुओं के आने की संभावना है।

श्री काशी विश्वनाथ धाम में तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। मंडलायुक्त एस राजलिंगम ने बताया कि इस बार सावन में बाबा के दरबार में कोई भी वीआईपी या वीवीआईपी नहीं होगा। सावन भर प्रोटोकॉल दर्शन नहीं होंगे। इस पर पूरी तरह से प्रतिबंध रहेगा। दर्शन के लिए सभी श्रद्धालु कतार में लगकर ही आएंगे। कोई श्रद्धालु दलालों के झांसे में न आए। यदि कोई व्यक्ति विशेष दर्शन के नाम पर रुपये मांगता है या अपनी दुकान से प्रसाद लेने पर दर्शन में सहायता का दावा करता है, तो वह आपको ठगने का प्रयास कर रहा है। इसकी जानकारी निकटतम पुलिस या फिर मंदिर के कर्मी को दी जा सकती है। उधर, मंदिर न्यास ने श्रद्धालुओं से अपील की है कि वे खाली पेट कतार में न लगें। इस सावन में चार सोमवार पड़ रहे हैं। हर सोमवार को बाबा विश्वनाथ के अलग-अलग श्रृंगार किए जाएंगे। 14 जुलाई को पहले सोमवार को चल प्रतिमा श्रृंगार, दूसरे सोमवार (21 जुलाई) को गौरी-शंकर (शंकर-पार्वती) श्रृंगार, तीसरे सोमवार (28 जुलाई) को अर्धनारीश्वर श्रृंगार और चौथे व अंतिम सोमवार (चार अगस्त) को रुद्राक्ष श्रृंगार होगा। वहीं, नौ अगस्त को पूर्णिमा पर झूला श्रृंगार होगा।

मंडलायुक्त ने बताया कि स्मार्ट सिटी के सहयोग से धाम परिसर और शहर के अलग-अलग स्थानों पर बाबा विश्वनाथ की आरती और श्रृंगार के डिजिटल दर्शन की व्यवस्था की गई है। साथ ही श्री काशी विश्वनाथ मंदिर के आधिकारिक यूट्यूब चैनल पर भी दर्शन की ऑनलाइन स्ट्रीमिंग की जाएगी। व्यवस्था प्रबंधन के लिए संपूर्ण धाम में केंद्रीयकृत लोक सूचना प्रणाली (पब्लिक एड्रेस सिस्टम) और आवश्यक स्थानों पर स्थानीय लोक सूचना प्रणाली (लोकल पब्लिक एड्रेस सिस्टम) की व्यवस्था रहेगी। मंडलायुक्त ने बताया कि श्री काशी विश्वनाथ धाम में दर्शन के लिए आने वाले श्रद्धालुओं के लिए कुल पांच स्थानों पर चिकित्सकीय टीम की तैनाती की जाएगी।

आजम खान के बेटे अब्दुल्ला की मुश्किलें नहीं हो रहीं कम, इस मामले में गैर जमानती वारंट जारी

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

मुरादाबाद। समाजवादी पार्टी के नेता आजम खां और उनके परिवार की मुश्किलें कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। मुरादाबाद की एमपी-एमएलए कोर्ट ने रामपुर से पूर्व विधायक अब्दुल्ला आजम के खिलाफ गैर-जमानती वारंट (एनबीडब्ल्यू) जारी किया है। अब्दुल्ला के खिलाफ ये वारंट साल 2008 के एक मामले में जारी किया गया है।

अब्दुल्ला आजम पर साल 2008 में छजलैट थाना क्षेत्र में सड़क जाम करने और सरकारी काम में बाधा डालने के मामले में कार्रवाई की गई है। पूरे मामले में आजम खान, अब्दुल्ला आजम सहित नौ सपा नेताओं पर मुकदमा दर्ज किया गया था। घटना 31 दिसंबर 2007 के रामपुर आतंकी हमले के बाद पुलिस चेकिंग के दौरान हुई, जब आजम खान के काफिले की गाड़ी रोकने पर सपा कार्यकर्ताओं ने हंगामा और सड़क जाम किया। इस दौरान जमकर हंगामा देखने को मिला था।

आजम की अपील हो चुकी खारिज

एमपी-एमएलए कोर्ट ने 13 फरवरी 2023 को दोनों को दोषी ठहराते हुए दो-दो साल की सजा और तीन-तीन हजार रुपये जुर्माना लगाया था। इसके खिलाफ आजम खान और अब्दुल्ला ने अपील दायर की थी, हालांकि कई बार पेश न होने के कारण एडीजे-3 कोर्ट ने अब्दुल्ला आजम के खिलाफ एनबीडब्ल्यू जारी किया है। इसके पहले ही आजम खान की अपील खारिज हो चुकी है और उनकी सजा बरकरार है।

सेशन कोर्ट में अपील पर सुनवाई विचाराधीन

विशेष लोक अभियोजक ने बताया कि इस मामले में अब्दुल्ला आजम को दो साल की सजा का ऐलान हुआ था। सजा के खिलाफ एमपी-एमएलए की सेशन कोर्ट में अपील पर सुनवाई विचाराधीन है, इसके बाद भी कोर्ट में सुनवाई के बावजूद अब्दुल्ला आजम हाजिर नहीं हो रहे हैं। शुक्रवार को कोर्ट ने इसे गंभीरता से लेते हुए अब्दुल्ला के खिलाफ गैर जमानती वारंट जारी किया है।

नहीं कम हो रहीं आजम खान की मुश्किलें कम

आजम खान और उनके परिवार की मुश्किलें कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। अब्दुल्ला आजम पर स्टाम्प चोरी केस में कोर्ट ने 4 करोड़ 64 लाख जुर्माना लगाया था। जिस पर पिछले दिनों कोर्ट ने आरसी जारी किए जाने की कार्रवाई की थी। इसके अलावा भी कई मामले आजम और उनके परिवार पर चल रहे हैं। आजम खान लंबे समय से जेल में बंद हैं।

सम्पूर्ण समाधान दिवस में आये 172 मामलों में 23 का हुआ निस्तारण

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

सुलतानपुर। जिलाधिकारी कुमार हर्ष की अध्यक्षता पुलिस अधीक्षक कुंवर अनुपम सिंह मुख्य विकास अधिकारी अंकुर कौशिक व ज्वाइंट मजिस्ट्रेट/उपजिलाधिकारी लम्भुआ गामिनी सिंगला की उपस्थिति में तहसील सभागार लम्भुआ में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें जिलाधिकारी द्वारा आये हुए फरियादियों की समस्याओं/शिकायतों को गम्भीरता पूर्वक सुनकर उसका निस्तारण मौके पर उपस्थित अधिकारियों से किये जाने का निर्देश दिया। जिलाधिकारी द्वारा सम्पूर्ण समाधान दिवस के अवसर पर उपस्थित अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि जिन विभागों की शिकायतें आज प्राप्त हुई हैं उन विभागों के अधिकारी सन्दर्भित प्रकरण को गम्भीरता से देखे और उसका निस्तारण सुनिश्चित करें। उन्होंने राजस्व व पुलिस विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया कि राजस्व विभाग के प्रकरणों को गम्भीरता से लेते हुए निस्तारण कराना सुनिश्चित करें। इसी प्रकार अन्य सम्बन्धित विभागों के अधिकारी अपने-अपने विभाग के प्रार्थना पत्रों का निस्तारण समयबद्ध ढंग से करना सुनिश्चित करें। जिला स्तरीय सम्पूर्ण समाधान दिवस में जिलाधिकारी के समक्ष कुल 172 शिकायती प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए, जिसमें 23 शिकायतों का निस्तारण जिलाधिकारी द्वारा मौके पर उपस्थित अधिकारियों से कराया गया। शेष शिकायतों के सम्बन्ध में सम्बन्धित विभाग के अधिकारियों द्वारा ससमय करने के निर्देश दिये गये हैं। इसी प्रकार अन्य समस्त तहसीलों में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन कर जन शिकायतें सुनी गयी और सम्बन्धित तहसील स्तरीय अधिकारियों द्वारा निस्तारित किए गये।तत्पश्चात जिलाधिकारी, पुलिस अधीक्षक व मुख्य विकास अधिकारी द्वारा लम्भुआ तहसील परिसर में वृक्षारोपण अभियान के अन्तर्गत आम, मौलश्री का पौधरोपण किया गया।

डायरिया के प्रति जन जागरूकता के लिए तीन प्रचार वाहन रवाना

जिला प्रतिरक्षण अधिकारी ने दिखाई हरी झंडी, कहा- बच्चों को डायरिया से बचाने के लिए जागरूकता जरूरी

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

मुरादाबाद। डायरिया के प्रति जन जागरूकता के लिए शनिवार को जिला प्रतिरक्षण अधिकारी अधिकारी डॉ. संजीव कुमार बेलवाल ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय से तीन प्रचार वाहनों को रवाना किया। इस मौके पर चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अमित सक्सेना भी उपस्थित रहे। यह प्रचार वाहन विभिन्न क्षेत्रों में जाकर समुदाय को शून्य से पांच साल तक के बच्चों में डायरिया के लक्षण, कारण और बचाव आदि के बारे में प्रचार-प्रसार करेंगे। इस मौके पर डॉ. बेलवाल ने कहा कि शून्य से पांच साल तक के बच्चों को डायरिया से सुरक्षित बनाने के लिए जनजागरूकता बहुत जरूरी है। इसी को ध्यान में रखते हुए डायरिया के प्रति जागरूकता सम्बन्धी संदेशों वाले पोस्टर-बैनर से सुसज्जित यह प्रचार वाहन समस्त 70 वार्डों में जैसे आदर्श नगर, चाऊ की बस्ती, फकीरपुरा, हरथला, कानून गोयान, कोठीवाल नगर, मझोला, बांग्ला गाँव, सीपीएच नया गाँव, गाड़ीखाना, काशीराम नगर, बरबालान, वारसी नगर, ईएसआई टाउन हाल, इंदिरा कालोनी, गुलाबबाड़ी, पीतल बस्ती कंजरी सराय, किसरोल, लालबाग आदि मोहल्लों एवं ग्रामीण क्षेत्रों से होकर गुजरेंगे। डॉ. बेलवाल ने कहा कि जिले में 16 जून से 31 जुलाई तक डायरिया रोको अभियान चलाया जा रहा है। डायरिया रोको अभियान में पापुलेशन सर्विसेज इंटरनेशनल इंडिया (पीएसआई इंडिया) और केनव्यू भी सहयोग कर रहे हैं। अभियान की इस साल की थीम- "डायरिया की रोकथाम, सफाई और ओआरएस से रखें अपना ध्यान" तय की गयी है। इस अभियान का उद्देश्य बच्चों में डायरिया की रोकथाम, ओआरएस व जिंक के उपयोग को प्रोत्साहन और जनसामान्य में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाना है। डायरिया रोको अभियान के प्रभावी संचालन एवं अधिक से अधिक जनसामान्य तक स्वास्थ्य सन्देश पहुंचाने के लिए प्रमुख सार्वजनिक स्थलों पर ओआरएस व जिंक कार्नर बनाये जा रहे हैं। निजी अस्पतालों व चिकित्सकों से भी ओआरएस कार्नर बनाने की अपील की गयी है। डॉ. बेलवाल का कहना है कि बारिश और उमस में बच्चा डायरिया की चपेट में कई कारणों से आ सकता है, जैसे- दूषित जल पीने से, दूषित हाथों से भोजन बनाने या बच्चे को खाना खिलाने, खुले में शौच करने या बच्चों के मल का ठीक से निस्तारण न करने आदि से। इसलिए शौच और बच्चों का मल साफ़ करने के बाद, भोजन बनाने और खिलाने से पहले हाथों को साबुन-पानी से अच्छी तरह अवश्य धुलें। डायरिया का सही इलाज ओआरएस का घोल और जिंक के टेबलेट हैं, जिन्हें उम्र के अनुसार निश्चित अवधि तक जरूर दें। उन्होंने कहा कि बच्चे को दिन भर में तीन या तीन से अधिक बार दस्त हो तो समझना चाहिए कि बच्चा डायरिया से ग्रसित है और ऐसे में उसको तत्काल ओआरएस का घोल देना चाहिए ताकि शरीर में पानी की कमी न होने पाए, साथ ही निकटतम स्वास्थ्य केंद्र पर संपर्क करना चाहिए। इस मौके पर जिला कार्यक्रम प्रबंधक रघुबीर सिंह, चंद्र शेखर, प्रमोद कुमार, सचिन, पीएसआई इंडिया से मोहम्मद रिजवान, ममता सैनी और स्वास्थ्य कर्मी मौजूद रहे।

राजस्व कर्मियों की मिली भगत से भू-माफियाओं के हौसले बुलंद

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

सुलतानपुर। सदर तहसील क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायतों की शासकीय भूमि पर इन दिनों धड़ल्ले से अवैध कब्जा हो रहा है। शिकायत है कि भूमाफियाओं के संरक्षण में लोग रातों रात बिल्डिग खड़े कर रहे हैं। आरोप यह भी है कि इस खेल में न केवल भूमाफिया, बल्कि राजस्व अमला और पंचायत प्रतिनिधि भी शामिल हैं। सदर तहसील क्षेत्र में लंबे अरसे से अतिक्रमण को ले कर चर्चा में है। आम आदमी से लेकर करोड़पति लोगों ने बेशकीमती सरकारी जमीन को घेर कर झोपड़ी, बिल्डिग, दुकानें, छोटे-छोटे कारखाने बना रखे हैं। बानगी के तौर पर टांडा बांदा राजमार्ग पर ग्राम सभा आंकारीपुर में ग्राम समाज की जमीन को भूमाफियाओं ने प्लानिंग कर बेंच दिया। ग्राम समाज की करोड़ों की जमीन बेंच दिया। इसी प्रकार तहसील क्षेत्र में तमाम भूमाफिया गरीबों और दलितों की जमीन पर अवैध कालोनियों को बसा रहे है। वही दूसरा मामला सदर तहसील क्षेत्र के उघरपुर ग्राम सभा से जुड़ा है।जहां इसी ग्राम सभा के निवासी गजेन्द्र सिंह व राम जीवावन यादव ने गाटा संख्या 1153(तालाब), 2231व 2230 में हो अवैध निर्माण को अतिक्रमण मुक्त कराए जाने की मांग की है। इसी क्रम में टांडा बांदा राजमार्ग पर ग्राम सभा उघरपुर का ही चर्चित चौराहा जो महेश्वर गंज के नाम से जाना जाता है जो पूरी तरीके से दर्जनों दुकानदारों द्वारा सरकारी जमीन को अवैध कब्जा कर के अतिक्रमण कर लिया गया है। अयोध्या-प्रयागराज राजमार्ग स्थित पकड़ी गांव जहां बेशकीमती सरकारी जमीन पर अवैध प्लाटिग कर के बेचने का खेल जारी है। लखनऊ-वाराणसी राज्य मार्ग पर इस्लामगंज चौराहे जो शासकीय जमीन घिरा हुआ है जिसे अवैध रूप से दुकान बनाकर कब्जा कर अतिक्रमण किया गया है। अवैध कब्जे के इस खेल में भूमाफियाओं के साथ ही राजस्व अमला और पंचायत प्रतिनिधियों की मिलीभगत की आशंका इसलिए होती है।

आदित्य से लव मैरिज...फिर करन से अफेयर, घर छोड़ प्रेमी संग भागी; ढूंढकर पति ने मारा, गौरी के कत्ल की कहानी

आर्यावर्त संवाददाता

हाथरस। हाथरस के सहपऊ कोतवाली क्षेत्र के गांव नगला कली में बृहस्पतिवार की दोपहर हुई गौरी की हत्या और एक हमलावर के भी मारे जाने की घटना में पुलिस ने मृतका के पति और उसके तीन दोस्तों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है। गौरी के पिता की ओर दर्ज कराई गई रिपोर्ट में घटना में मारे गए अमन को भी नामजद किया गया है। पुलिस ने गौरी के प्रेमी करन को भी हिरासत में ले रखा है।

नुमाइश रोड अलीगढ़ निवासी गौरी के पिता राजू ने थाने पर दी तहरीर में गौरी के पति आदित्य कुमार उर्फ जीतू एवं अमन निवासी नसरतपुर जिला कासगंज एवं रिंकू नगला भवानी जिला कासगंज और एक अज्ञात को नामजद किया गया है। इन पर गौरी की चाकू से गोद कर हत्या का आरोप लगाया है।

रिपोर्ट के अनुसार, गौरी ने साढ़े तीन साल पहले आदित्य उर्फ जीतू के साथ प्रेम विवाह किया था और उसके साथ रह रही थी। आदित्य को शराब एवं गांजा पीने की आदत लग गई थी। वह अपनी पत्नी से मारपीट करता था। उसी दौरान गौरी की करन से मुलाकात हो गई। वह 26 जून को करन के साथ भाग आई। करन अपना गांव छोड़कर अपने मौसा रंजीत निवासी नगला कली में रहने लगा। बृहस्पतिवार की दोपहर आदित्य और उसके तीन साथियों ने नगला कली में आकर गौरी की चाकू से गोद कर हत्या कर दी।

पुलिस ने इस मामले में मुकदमा दर्ज कर लिया है। अब पुलिस गौरी की हत्या के आरोपी पति और उसके दोस्तों की तलाश कर रही है। अमन का आगरा में और गौरी का हाथरस में पोस्टमार्टम किया गया है। अमन के परिजनों की ओर से अभी कोई तहरीर नहीं दी गई है। पुलिस अधीक्षक चिरंजीव नाथ सिन्हा ने बताया कि हत्यारोपियों की तलाश में दबिशें दी जा रही हैं। इस मामले में मृतका के पिता की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।

मौसा के घर पर पड़ा है सन्नाटा

नगला कली में दोहरे हत्याकांड के बाद मौसा रंजीत के घर पर सन्नाटा पसरा हुआ है। परिवार के सदस्य घर से गायब है। पुलिस ने गांव में कई बार पहुंचकर पूछताछ की और जांच पड़ताल की।

10 मिनट में हुआ पूरा घटनाक्रम

इधर, ईंट से आदित्य के दोस्तों ने करन के सिर पर वार कर दिया। महज 10 मिनट में हुए पूरे घटनाक्रम ने वहां मौजूद लोगों के होश फाख्ता कर दिए। ग्रामीणों को आता देख आदित्य अपने दोस्तों के साथ भाग जाने में सफल हो गया, लेकिन भीड़ को अपनी ओर बढ़ता देख एक ही बाइक पर आदित्य और उसके तीन दोस्त मौके से भाग गए, जबकि हमलावर अमन लहूलुहान हालत में वहीं पड़ा रहा। इधर, प्रेमिका की मौत होने के बाद प्रेमी करन उसकी लाश के पास बैठकर विलाप करता रहा।

लिवर फटने और खून बहने से हुई गौरी की मौत

शुक्रवार को गौरी का पोस्टमार्टम किया गया। पोस्टमार्टम के बाद पिता राजू बेटी के शव को लेकर अलीगढ़ चले गए। इधर, पोस्टमार्टम रिपोर्ट के अनुसार, चाकू के वार से गौरी का लिवर फट गया था, जिससे बहुत खून बह गया। लिवर फटने और ज्यादा खून बहने की वजह से गौरी की मौत हुई थी।

यह है मामला

मूल रूप से अलीगढ़ शहर के नुमाइश ग्राउंड इलाके की 24 वर्षीय गौरी ने तीन वर्ष पहले कासगंज के नसरतपुर के आदित्य संग प्रेम विवाह किया था। शादी के कुछ दिन बाद ही दोनों में अनबन शुरू हो गई। इसी बीच आदित्य के फुफेरे भाई यानि गौरी के रिश्ते के देवर करन निवासी हसनपुर बारू से गौरी के प्रेम संबंध हो गए। इन्हीं प्रेम संबंधों में 26 जून को करन व गौरी नसरतपुर से चले आए। करन गौरी को लेकर अपनी मौसी के गांव सहपऊ के नगला कली पहुंच गया। तब से वहीं रह रहा था।

दोनों को बात करते देख उग्र हो गया आदित्य

यह खबर जब आदित्य को हुई तो वह बृहस्पतिवार को अपने तीन दोस्तों संग दो बाइकों से नगला कली पहुंच गया। यहां दोपहर करीब ढाई बजे घर के चबूतरे पर खड़े करन और गौरी आपस में बात कर रहे थे। उन्हें देख आदित्य उग्र हो गया। इस दौरान आदित्य और करन के बीच विवाद शुरू हो गया। इस झगड़े में जब गौरी बीच में आई तो प्लानिंग के तहत चाकू लेकर आए आदित्य ने गौरी पर कई वार करते हुए उसकी हत्या कर दी। बीच-बचाव में करन आया तो उसे भी ईंट मारकर घायल कर दिया।

इस बीच घायल करन ने भी जवाब में ईंट पत्थर फेंके, जिसमें एक ईंट आदित्य के साथ आए उसके दोस्त नदरई कासगंज के अमन के सिर में जा लगी। जिससे वह भी गंभीर रूप से घायल हो गया। कुछ देर तक दोनों ओर से लाठी-डंडे भी चले। मगर चीख पुकार पर आसपास के ग्रामीणों को आता देख आदित्य व उसके दो दोस्त तो भाग गए। मगर घायल अमन और मृत महिला का प्रेमी करन वहीं रह गए। खबर पर पहुंची पुलिस टीम ने आनन फानन दोनों घायलों को सीएचसी पहुंचाया। जहां से अमन को आगरा रेफर किया गया। मगर सिर में गंभीर चोट के चलते उसकी भी रास्ते में मौत हो गई। बाद में पुलिस ने फॉरेंसिक जांच के बाद शव पोस्टमार्टम को भेजे। वहीं पुलिस टीम फरार आरोपियों की तलाश में भी जुट गई।

प्रेमिका की मौत पर फूट-फूटकर रोया प्रेमी

सहपऊ क्षेत्र के गांव नगला कली में महिला गौरी की हत्या के बाद उसका प्रेमी फूट-फूटकर रोया। वह कह रहा था कि तू मुझे छोड़कर नहीं जा सकती। बृहस्पतिवार की दोपहर करीब 3.30 बजे अपने मौसा के यहां करन अपनी प्रेमिका गौरी के साथ भविष्य के सपने बुन रहा था। इस दौरान उसकी प्रेमिका का पति आदित्य अपने तीन दोस्तों के साथ दो बाइकों से वहां पहुंच गया। पति को सामने देख गौरी के होश फाख्ता हो गए। गौरी को प्रेमी के साथ देख आदित्य अपना आपा खो बैठा और विवाद शुरू हो गया। उस दौरान मौसा रंजीत घर में नहीं था।

विवाद ने तूल पकड़ लिया और दोनों पक्ष घर के सामने के खाली खेत में पहुंच गए। वहां मारपीट शुरू हो गई। बताया गया कि आदित्य के दोस्तों ने करन को पकड़ लिया। गौरी जैसे ही करन को बचाने के लिए आगे बढ़ी तो आदित्य ने गौरी पर चाकू से हमला कर दिया और उसकी हत्या कर दी। करन ने भी इस दौरान गौरी को बचाने के लिए ईंट से अमन के सिर पर प्रहार कर दिया, और अमन को गंभीर रूप से घायल कर दिया।

बौद्ध और सिख श्रद्धालुओं की आस्था को सम्मान, उत्तर प्रदेश सरकार शुरू करेगी 'बौद्ध तीर्थ दर्शन योजना' और 'पंच तख्त यात्रा योजना'

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक विरासत से जुड़े स्थलों की यात्रा को सुलभ और साकार बनाने की दिशा में एक ऐतिहासिक निर्णय लिया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि तीर्थ यात्राएं भारतीय संस्कृति की आत्मा हैं, जो व्यक्ति को न केवल आत्मिक शांति प्रदान करती हैं, बल्कि सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता की भावना को भी प्रबल करती हैं। इसी दृष्टिकोण से राज्य सरकार बौद्ध और सिख समुदाय के श्रद्धालुओं के लिए दो विशेष तीर्थ यात्रा योजनाओं का संचालन प्रारंभ करेगी।मुख्यमंत्री आज अपने सरकारी आवास पर धर्मार्थ कार्य विभाग की एक उच्च स्तरीय बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रदेश में 'बौद्ध तीर्थ दर्शन योजना' और 'पंच तख्त यात्रा योजना' प्रारंभ की जाए, ताकि श्रद्धालुओं को अपनी आस्था से जुड़े पवित्र स्थलों की यात्रा में किसी प्रकार की आर्थिक या प्रशासनिक बाधा न झेलनी पड़े। उन्होंने कहा कि यह सरकार की जिम्मेदारी है कि वह सभी समुदायों की धार्मिक मान्यताओं का सम्मान करते हुए उन्हें समुचित सुविधाएं और अवसर उपलब्ध कराए।'बौद्ध तीर्थ दर्शन योजना' का उद्देश्य उत्तर प्रदेश के हिन्दू और बौद्ध श्रद्धालुओं को देश के विभिन्न भागों में स्थित प्रमुख बौद्ध स्थलों की यात्रा की सुविधा प्रदान करना है। इस योजना में विशेष रूप से बौद्ध भिक्षुओं को प्राथमिकता दी जाएगी ताकि वे अपने आध्यात्मिक जीवन के महत्वपूर्ण केंद्रों का दर्शन कर सकें। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि इस योजना से न केवल श्रद्धालुओं को लाभ मिलेगा, बल्कि बौद्ध तीर्थ स्थलों के प्रति पर्यटन भी प्रोत्साहित होगा।वहीं दूसरी ओर, 'पंच तख्त यात्रा योजना' सिख श्रद्धालुओं के लिए एक अनूठी पहल होगी, जिसके अंतर्गत उत्तर प्रदेश के सिख श्रद्धालुओं को भारत के पांच प्रमुख तख्त साहिब स्थलों की यात्रा कराई जाएगी। इनमें श्री आनंदपुर साहिब, श्री अकाल तख्त साहिब (अमृतसर), श्री दमदमा साहिब (तलवंडी साबो), श्री तख्त सचखंड हजूर साहिब (नांदेड़) और श्री हरमंदिर जी साहिब (पटना साहिब) शामिल हैं। ये स्थल सिख पंथ की आध्यात्मिक और ऐतिहासिक धरोहर के प्रतीक हैं, जिनका दर्शन हर सिख श्रद्धालु का सपना होता है।मुख्यमंत्री ने यह भी निर्देश दिए कि दोनों योजनाओं के लिए आवेदन की प्रक्रिया पूरी तरह ऑनलाइन होनी चाहिए, जिससे प्रक्रिया में पारदर्शिता बनी रहे और आवेदन करने वाले को कोई कठिनाई न हो। उन्होंने अधिकारियों से यह सुनिश्चित करने को कहा कि योजना का लाभ विशेष रूप से आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को मिले, ताकि वे भी अपने जीवन में एक बार इन पवित्र स्थलों की यात्रा कर सकें। योजनाओं का संचालन भारतीय रेलवे की सहायक संस्था आईआरसीटीसी के सहयोग से किया जाएगा, और प्रत्येक चयनित श्रद्धालु को न्यूनतम ₹10,000 की राशि अनुदान के रूप में प्रदान की जाएगी।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इन योजनाओं को प्रदेश की समावेशी विकास नीति के अनुरूप बताया और कहा कि यह कदम 'सबका साथ, सबका विकास' की भावना को और अधिक सशक्त बनाएगा। साथ ही, इससे उत्तर प्रदेश की धार्मिक सहिष्णुता, सांस्कृतिक पर्यटन और राष्ट्रीय एकता को नया आयाम मिलेगा। उन्होंने कहा कि यह पहल 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के विचार को जमीनी स्तर पर उतारने का सशक्त माध्यम बनेगी और प्रदेश की धार्मिक-सांस्कृतिक विविधता को सम्मान और सहयोग की दिशा मिलेगी।

लखनऊ में अतिक्रमण के खिलाफ विशेष अभियान, सार्वजनिक मार्ग हुए मुक्त

लखनऊ। शहर में अतिक्रमण को लेकर सख्त रुख अपनाते हुए नगर निगम लखनऊ ने शनिवार को जोन-1 और जोन-6 में व्यापक अभियान चलाया। माननीय महापौर सुषमा खर्कवाल के निर्देश एवं नगर आयुक्त गौरव कुमार के आदेशानुसार यह कार्रवाई की गई, जिसमें अस्थायी अतिक्रमण हटाकर सार्वजनिक मार्गों को पूरी तरह से मुक्त कराया गया।जोन-1 में विक्रमादित्य मार्ग से प्रारंभ होकर कालीदास मार्ग, सिविल अस्पताल, हजरतगंज और अटल चौक तक अभियान चलाकर फुटपाथों और सार्वजनिक स्थानों से अवैध कब्जे हटाए गए। बालाकदर रोड से लेकर हरिओम मंदिर, बाल्मीकि मार्ग, नॉवेल्टी चौराहा, नगर निगम मुख्यालय और लालबाग क्षेत्र से लेकर कालीदास मार्ग तक फैले इलाकों में भी अतिक्रमण को समाप्त किया गया। इस अभियान में पोस्टर, बैनर समेत आधा ट्रक सामान जब्त किया गया।

गांवों को सशक्त और स्वच्छ बनाने की दिशा में पंचायतीराज मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने की बड़ी समीक्षा बैठक

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के पंचायतीराज मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने शनिवार को पंचायतीराज निदेशालय, अलीगंज लखनऊ में विभागीय योजनाओं, बजट और विकास कार्यों की गहन समीक्षा बैठक की। बैठक में उन्होंने ग्राम्य विकास को मजबूती देने की दिशा में विभागीय अधिकारियों को स्पष्ट संदेश देते हुए कहा कि ग्राम पंचायत भवनों को जनसंपर्क व सेवा का केंद्र बनाया जाए, न कि केवल नाम मात्र की इमारत। उन्होंने पंचायत भवनों में ताले लगे होने की शिकायतों को अत्यंत गंभीर बताते हुए कहा कि भविष्य में ऐसी स्थिति किसी भी हालत में स्वीकार नहीं की जाएगी।बैठक में मंत्री ने निर्देश दिया कि पंचायत सहायकों के अवकाश की जानकारी पंचायत भवन के नोटिस बोर्ड पर प्रदर्शित की जाए और सभी पंचायत उत्सव भवनों में एक जैसी रंगाई-पुताई की जाए ताकि एक अनुशासित व सौंदर्यपरक वातावरण का निर्माण हो सके।उन्होंने राज्यव्यापी वृक्षारोपण अभियान को औपचारिकता न मानते हुए ग्राम्य जीवन की हरियाली और जलवायु संतुलन के लिए अनिवार्य बताया। साथ ही वित्तीय अनुशासन, पारदर्शिता और डिजिटल प्रक्रियाओं को मजबूत करने की आवश्यकता जताते हुए ओएसआर व पंचायतीराज पोर्टल की समीक्षा की।मंत्री ने परफॉर्मेंस ग्रांट के अंतर्गत कराए गए कार्यों की गुणवत्ता पर बल देते हुए कहा कि एसएनए 'स्पर्श' पोर्टल पर सभी जिलों से वित्तीय विवरण समय पर फीड किया जाए ताकि किसी प्रकार की वित्तीय अनियमितता से बचा जा सके।स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के तहत सामुदायिक शौचालयों की नियमित मॉनिटरिंग, संचालन व भुगतान में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के निर्देश देते हुए उन्होंने कहा कि स्थानीय स्तर पर आत्मनिर्भरता से संचालित व्यवस्थाएं ही ग्राम पंचायतों की साख को मजबूत करेंगी।बैठक में प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन को पंचायत स्तर पर जन जागरूकता के माध्यम से आंदोलनात्मक स्वरूप देने, गोबरधन योजना व कान्हा गौशालाओं से प्राप्त गोबर के वैज्ञानिक उपयोग हेतु बायोगैस प्लांट, जैविक खाद और वर्मी कम्पोस्ट निर्माण को प्राथमिकता देने के निर्देश भी दिए गए।मंत्री ने स्पष्ट किया कि इन योजनाओं से पंचायतों को आर्थिक आत्मनिर्भरता मिलेगी और प्राप्त आय पंचायत खातों में जमा कर विकास कार्यों में पारदर्शी रूप से उपयोग होनी चाहिए।प्रमुख सचिव पंचायतीराज अनिल कुमार ने जिला पंचायत राज अधिकारियों को निर्देशित किया कि योजनाओं की डीपीआर समयबद्ध तरीके से तैयार कर जिला पंचायतों को भेजी जाए। भूमि विवादों के शीघ्र समाधान के साथ कार्य आरंभ करने के लिए आवश्यक प्रस्ताव जल्द प्रस्तुत किए जाएं।

बीबीडी थाना क्षेत्र से गैंगेस्टर एक्ट में वांछित दो शातिर अपराधी गिरफ्तार, संगठित गिरोह का पर्दाफाश

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत बीबीडी थाना पुलिस को एक और बड़ी सफलता मिली है। थाना क्षेत्र में सक्रिय संगठित आपराधिक गिरोह के दो सक्रिय सदस्यों को गैंगेस्टर एक्ट के तहत गिरफ्तार किया गया है। पकड़े गए आरोपियों की पहचान रवि रावत उर्फ किशन और लवकुश रावत उर्फ अऊवा के रूप में हुई है, जिन पर राजधानी के कई थानों में गंभीर आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं।पुलिस आयुक्त लखनऊ के निर्देश पर अपराधियों की धरपकड़ और संगठित अपराध को जड़ से खत्म करने के उद्देश्य से चलाए जा रहे अभियान के अंतर्गत बीबीडी थाना प्रभारी निरीक्षक के नेतृत्व में यह गिरफ्तारी की गई। संयुक्त पुलिस आयुक्त, पुलिस उपायुक्त (पूर्वी), अपर पुलिस उपायुक्त एवं सहायक पुलिस आयुक्त विभूतिखंड के कुशल पर्यवेक्षण में गठित टीम ने इंदिरा नहर के किनारे जुग्गौर मार्ग से चेकिंग के दौरान मुखबिर की सूचना पर इन दोनों वांछितों को गिरफ्तार किया।गिरफ्तार रवि रावत उर्फ किशन पुत्र श्यामलाल रावत, निवासी जुग्गौर मोहल्ला गोदइया, थाना बीबीडी, उम्र 25 वर्ष, पर हत्या के प्रयास, लूट, अवैध शस्त्र अधिनियम, धोखाधड़ी और गैंगेस्टर एक्ट सहित कुल 12 गंभीर आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं। वह एक सक्रिय संगठित गिरोह का सरगना है और अपने गिरोह के सदस्यों लवकुश रावत, रोहित रावत और दीपक वाल्मीकि के साथ मिलकर राजधानी और आसपास के जिलों में कई घटनाओं को अंजाम दे चुका है। उसका नाम थाना बीबीडी के सक्रिय हिस्ट्रीशीटरों की सूची में शामिल है और उसका एचएस नंबर A-03 दर्ज है।लवकुश रावत उर्फ अऊवा पुत्र विशुनलाल, निवासी पंडितपुर, जुग्गौर, उम्र 21 वर्ष, गिरोह का सहयोगी है, जिस पर भी बीबीडी थाने में कई संगीन मुकदमे दर्ज हैं। इन दोनों के खिलाफ 4 जुलाई को थाना बीबीडी में गिरोहबंद एवं समाजविरोधी क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम 1986 की धारा 3(1) के तहत एफआईआर संख्या 157/2025 दर्ज की गई थी।पुलिस की जांच में यह भी सामने आया है कि यह गिरोह चोरी, नकबजनी, लूट व अवैध शस्त्र के प्रयोग जैसे अपराधों को आर्थिक लाभ व दबदबा कायम करने के उद्देश्य से अंजाम देता रहा है। इनके आपराधिक कृत्यों के कारण जनता में भय और असुरक्षा का माहौल व्याप्त था। यह गिरोह अंतर्जनपदीय स्तर पर सक्रिय था।गिरफ्तार आरोपियों को बीबीडी थाना पुलिस द्वारा मा. न्यायालय में पेश कर रिमांड पर भेजा गया है। पुलिस अब इस गिरोह के अन्य सदस्यों की भी सरगर्मी से तलाश कर रही है ताकि पूरे नेटवर्क को ध्वस्त किया जा सके।इस कार्रवाई में उपनिरीक्षक मुकेश पाल, हेड कांस्टेबल हिमांशु राय और हेड कांस्टेबल निर्दोष कुमार शामिल रहे, जिन्होंने मुस्तैदी और साहस के साथ इन कुख्यात अपराधियों को गिरफ्त में लिया।राजधानी लखनऊ में अपराध और संगठित गिरोहों के खिलाफ यह कार्रवाई न केवल कानून-व्यवस्था को सशक्त करने की दिशा में एक अहम कदम है, बल्कि इससे यह स्पष्ट हो गया है कि पुलिस किसी भी हालत में अपराधियों को बख्शने के मूड में नहीं है।

सूचना विभाग के 1700 करोड़ के बजट के दबाव में मीडिया का पक्षपाती खेल, अपना दल (एस) ने लगाया आरोप

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के सूचना विभाग द्वारा जारी 1700 करोड़ रुपये के बजट के प्रभाव में कुछ मीडिया समूह अपने एजेंडा के तहत लगातार अपना दल (एस) के खिलाफ झूठी और भ्रामक खबरें फैला रहे हैं। पार्टी ने स्पष्ट किया है कि इस दबाव में मीडिया के एक वर्ग को रोजाना अपना दल (एस) को तोड़ने, विधायकों के पाला बदलने और पार्टी के अस्तित्व पर सवाल उठाने की झूठी रिपोर्टें बनानी पड़ती हैं।अपना दल (एस) ने इस राजनीतिक साजिश को बेबाकी से उजागर करते हुए कहा कि वह लाखों वंचितों और पिछड़ों की आवाज है, जिसे बार-बार तोड़ने के प्रयासों के बावजूद पार्टी मजबूत खड़ी है। पार्टी ने मीडिया को समझदारी की नसीहत देते हुए कहा कि रोजाना आधारहीन खबरें फैलाने की जगह पार्टी के अस्तित्व को स्वीकार कर लें और झूठे दावों से निजात पाएं।पार्टी ने यह भी कहा कि वह किसी भी प्रकार की साजिश और राजनीतिक दबाव के आगे झुकेगी नहीं और दलित-पिछड़ों के हितों के लिए पहले से अधिक मजबूती से संघर्ष करती रहेगी।अपना दल (एस) की ओर से यह भी कहा गया कि यह मीडिया दबाव केवल सत्ता समर्थित कुछ समूहों के हित में हो रहा है, जो राजनीतिक रूप से कमजोर पार्टियों को निशाना बनाते हैं। पार्टी ने इस मामले में महाकवि पाश की कविता के माध्यम से संदेश दिया कि सच्चाई और संघर्ष हमेशा जीवित रहते हैं, भले ही झूठ के बादल कितने भी घने क्यों न हों।यह पूरा प्रकरण उत्तर प्रदेश की राजनीतिक जद्दोजहद में मीडिया के प्रभाव और सत्ता के दबाव के बीच की जटिलताओं को बयां करता है, जहाँ खबरें कितनी भी गलत हों, परंतु सच्चाई का सशक्त संघर्ष जारी रहता है।

ठाकुरगंज पुलिस की तत्परता से घर में चोरी की वारदात का खुलासा, शातिर चोर गिरफ्तार

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। पुलिस कमिश्नरेट लखनऊ के पश्चिमी जोन अंतर्गत थाना ठाकुरगंज पुलिस को एक बड़ी सफलता मिली है। क्षेत्र में हाल ही में हुई एक घर में घुसकर चोरी की वारदात को अंजाम देने वाले शातिर चोर को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी के कब्जे से चोरी की गई नकदी, मोबाइल फोन, घड़ी और घटना में प्रयुक्त सब्बल बरामद किया गया है। यह गिरफ्तारी थाना ठाकुरगंज पुलिस द्वारा सटीक सूचना और सक्रियता के आधार पर की गई।घटना का खुलासा करते हुए पुलिस ने बताया कि 26 जून 2025 को वादी कृष्ण गोपाल वर्मा पुत्र रामा शंकर वर्मा, निवासी 442/192, हरदोई रोड, जरनैलगंज, बालागंज, लखनऊ, अपने परिवार सहित धार्मिक यात्रा के लिए उज्जैन (मध्य प्रदेश) गए हुए थे। जब वह 29 जून को लौटे तो देखा कि उनके घर के दरवाजे व खिड़कियां टूटी हुई थीं और घर में चोरी की वारदात हो चुकी थी। इस मामले में थाना ठाकुरगंज पर तत्काल एफआईआर संख्या 368/2025 धारा 305(ए)/331(3)/324(2) बीएनएस दर्ज की गई।पुलिस कमिश्नर लखनऊ के आदेशानुसार अपराधियों की धरपकड़ एवं पूर्व में घटित घटनाओं के सफल अनावरण हेतु विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसी अभियान के अंतर्गत पुलिस उपायुक्त पश्चिमी श्री विश्वजीत श्रीवास्तव, अपर पुलिस उपायुक्त पश्चिमी श्री धनंजय कुशवाहा, एवं सहायक पुलिस आयुक्त चौक श्री राजकुमार सिंह के पर्यवेक्षण में प्रभारी निरीक्षक ठाकुरगंज श्री श्रीकांत राय के नेतृत्व में एक टीम गठित की गई।इस टीम को मुखबिर के माध्यम से सूचना प्राप्त हुई कि घटना में संलिप्त एक अभियुक्त बरदानी मंदिर के पास संदिग्ध स्थिति में घूम रहा है। इस सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए 5 जुलाई 2025 को सुबह लगभग 11:10 बजे आरोपी मोहम्मद शानू पुत्र स्व. रईस, निवासी रईस नगर, थाना ठाकुरगंज, उम्र करीब 26 वर्ष को गिरफ्तार कर लिया।गिरफ्तारी के समय आरोपी के पास से चोरी में प्रयुक्त एक सब्बल, ₹1160 नगद, एक ब्लैकबेरी कीपैड मोबाइल फोन, तथा एक घड़ी बरामद हुई। पूछताछ में आरोपी ने जुर्म कबूल कर लिया और बताया कि उसने ही वादी के घर में घुसकर यह चोरी की थी। बरामदगी के आधार पर पूर्व दर्ज मुकदमे में धारा 317(2) बीएनएस की वृद्धि की गई है, और आरोपी के विरुद्ध अग्रिम विधिक कार्रवाई की जा रही है।गिरफ्तार आरोपी के खिलाफ पहले से दर्ज मुकदमा संख्या 368/2025 (धारा 305(ए)/331(3)/324(2) बीएनएस) में यह कार्रवाई की गई है। गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम में उपनिरीक्षक रविंद्र कुमार, उपनिरीक्षक पंकज सिंह, हेड कांस्टेबल अरुण कुमार मिश्रा, एवं कांस्टेबल देवेंद्र सिंह शामिल रहे।

सूचना विभाग के 1700 करोड़ के बजट के दबाव में मीडिया का पक्षपाती खेल, अपना दल (एस) ने लगाया आरोप

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के सूचना विभाग द्वारा जारी 1700 करोड़ रुपये के बजट के प्रभाव में कुछ मीडिया समूह अपने एजेंडा के तहत लगातार अपना दल (एस) के खिलाफ झूठी और भ्रामक खबरें फैला रहे हैं। पार्टी ने स्पष्ट किया है कि इस दबाव में मीडिया के एक वर्ग को रोजाना अपना दल (एस) को तोड़ने, विधायकों के पाला बदलने और पार्टी के अस्तित्व पर सवाल उठाने की झूठी रिपोर्टें बनानी पड़ती हैं।अपना दल (एस) ने इस राजनीतिक साजिश को बेबाकी से उजागर करते हुए कहा कि वह लाखों वंचितों और पिछड़ों की आवाज है, जिसे बार-बार तोड़ने के प्रयासों के बावजूद पार्टी मजबूत खड़ी है। पार्टी ने मीडिया को समझदारी की नसीहत देते हुए कहा कि रोजाना आधारहीन खबरें फैलाने की जगह पार्टी के अस्तित्व को स्वीकार कर लें और झूठे दावों से निजात पाएं।पार्टी ने यह भी कहा कि वह किसी भी प्रकार की साजिश और राजनीतिक दबाव के आगे झुकेगी नहीं और दलित-पिछड़ों के हितों के लिए पहले से अधिक मजबूती से संघर्ष करती रहेगी।अपना दल (एस) की ओर से यह भी कहा गया कि यह मीडिया दबाव केवल सत्ता समर्थित कुछ समूहों के हित में हो रहा है, जो राजनीतिक रूप से कमजोर पार्टियों को निशाना बनाते हैं। पार्टी ने इस मामले में महाकवि पाश की कविता के माध्यम से संदेश दिया कि सच्चाई और संघर्ष हमेशा जीवित रहते हैं, भले ही झूठ के बादल कितने भी घने क्यों न हों।यह पूरा प्रकरण उत्तर प्रदेश की राजनीतिक जद्दोजहद में मीडिया के प्रभाव और सत्ता के दबाव के बीच की जटिलताओं को बयां करता है, जहाँ खबरें कितनी भी गलत हों, परंतु सच्चाई का सशक्त संघर्ष जारी रहता है।

लखनऊ में चोरी की बड़ी साजिश नाकाम, नाका हिण्डोला पुलिस ने तीन शातिर चोरों को रंगे हाथों किया गिरफ्तार

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में अपराध और अपराधियों पर लगाम कसने के लिए पुलिस लगातार सक्रिय है। इसी क्रम में नाका हिण्डोला थाना पुलिस ने बीती रात एक अहम कार्रवाई करते हुए तीन शातिर अपराधियों को शिवपुरी पार्क, गणेशगंज से उस समय गिरफ्तार किया, जब वे बंद घरों में चोरी की साजिश रच रहे थे। पुलिस ने इनके कब्जे से दो पेचकस और एक लोहा काटने वाली आरी भी बरामद की है, जिनका उपयोग ताले तोड़ने के लिए किया जाना था।घटना का खुलासा उस समय हुआ जब थाना नाका हिण्डोला की टीम नियमित रात्रि गश्त पर थी। इसी दौरान एक मुखबिर से सूचना मिली कि शिवपुरी पार्क में कुछ संदिग्ध लोग चोरी की योजना बना रहे हैं। सूचना मिलते ही पुलिस टीम सक्रिय हुई और तत्काल मौके पर पहुंचकर पार्क की घेराबंदी की। वहां तीन व्यक्ति अंधेरे में संदिग्ध अवस्था में बैठे मिले, जो पुलिस को देखते ही भागने लगे। मगर पुलिस की तत्परता से वे भाग नहीं सके और तीनों को मौके पर ही पकड़ लिया गया।पुलिस ने जब उनसे रात में अंधेरे में पार्क में मौजूद होने का कारण पूछा तो वे कोई स्पष्ट जवाब नहीं दे सके। सख्ती से पूछताछ करने पर उन्होंने चोरी की योजना में शामिल होने की बात स्वीकार की। पुलिस ने जब उनकी तलाशी ली तो उनके पास से दो पेचकस और एक लोहा काटने वाली आरी बरामद हुई। पूछताछ में तीनों ने बताया कि वे बंद घरों के ताले या खिड़कियां तोड़कर अंदर घुसने की योजना बना रहे थे।गिरफ्तार अभियुक्तों की पहचान नसीम पुत्र कय्युम निवासी अकरौली, थाना बनियाठेर, जनपद संभल; हीरालाल पुत्र रामदयाल निवासी ग्राम बेरीखेड़ा रहोली, थाना बनियाठेर, जनपद संभल; और फैजान खान पुत्र उरमान निवासी कुरानी मस्जिद के पास, थाना मझौला, जनपद मुरादाबाद के रूप में हुई है। तीनों अभियुक्तों के विरुद्ध थाना नाका हिण्डोला में मु.अ.सं. 121/2025, धारा 313 बीएनएस के तहत मुकदमा दर्ज किया गया है।पुलिस जांच में यह भी सामने आया कि मुख्य अभियुक्त नसीम एक हिस्ट्रीशीटर है और उसके विरुद्ध मुरादाबाद, लखनऊ और संभल के विभिन्न थानों में 3/25 आयुध अधिनियम, 380, 457, 411, 451 जैसी गंभीर धाराओं में आठ से अधिक आपराधिक मामले दर्ज हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि वह एक पेशेवर अपराधी है, जो लंबे समय से चोरी और अवैध गतिविधियों में लिप्त रहा है।इस पूरी कार्रवाई को थाना नाका हिण्डोला के प्रभारी निरीक्षक वीरेंद्र त्रिपाठी के नेतृत्व में उपनिरीक्षक गौरव कुमारी, सुधांशु रंजन, धीरज गुप्ता, अंजनी तिवारी और देवेन्द्र यादव की टीम ने अंजाम दिया। उनकी सतर्कता और तत्परता से एक बड़ी वारदात टल गई और तीन अपराधी पुलिस की गिरफ्त में आ गए।इस त्वरित कार्रवाई से स्थानीय नागरिकों में सुरक्षा की भावना मजबूत हुई है और नाका पुलिस की कार्यशैली की सराहना की जा रही है।

सुशान्त गोल्फ सिटी इलाके में महिला के साथ चैन स्नेचिंग, मुकदमा दर्ज

लखनऊ। सुशान्त गोल्फ सिटी में बीते 2 जुलाई की दोपहर एक महिला से बाइक सवार बदमाशों ने चैन स्नैचिक कर ली। पीड़िता के बेटे ने सुशान्त गोल्फ सिटी थाने पर तहरीर देकर मुकदमा दर्ज कराया है।

पीडित शैलेन्द्र सिंह निवासी फ्रेन्स कालोनी थाना सुशान्त गोल्फ सिटी ने बताया कि मेरी माता रेनू सिंह 2 जुलाई की दोपहर रोज की तरह कोलोनी की अनुपमा देवी के साथ सुबह 12:30 बजे रोज की तरह वापस आ रही तभी दो बाइक सवार बदमाशों ने चैन छीन कर फरार हो गए। जिसके बाद घर पहुंच कर मामला बताया। पुलिस ने तहरीर देकर मुकदमा दर्ज कर लुटेरों की तलाश में जुटी है।

बीबीडी थाना क्षेत्र से गैंगेस्टर एक्ट में वांछित दो शातिर अपराधी गिरफ्तार, संगठित गिरोह का पर्दाफाश

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत बीबीडी थाना पुलिस को एक और बड़ी सफलता मिली है। थाना क्षेत्र में सक्रिय संगठित आपराधिक गिरोह के दो सक्रिय सदस्यों को गैंगेस्टर एक्ट के तहत गिरफ्तार किया गया है। पकड़े गए आरोपियों की पहचान रवि रावत उर्फ किशन और लवकुश रावत उर्फ अऊवा के रूप में हुई है, जिन पर राजधानी के कई थानों में गंभीर आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं।पुलिस आयुक्त लखनऊ के निर्देश पर अपराधियों की धरपकड़ और संगठित अपराध को जड़ से खत्म करने के उद्देश्य से चलाए जा रहे अभियान के अंतर्गत बीबीडी थाना प्रभारी निरीक्षक के नेतृत्व में यह गिरफ्तारी की गई। संयुक्त पुलिस आयुक्त, पुलिस उपायुक्त (पूर्वी), अपर पुलिस उपायुक्त एवं सहायक पुलिस आयुक्त विभूतिखंड के कुशल पर्यवेक्षण में गठित टीम ने इंदिरा नहर के किनारे जुग्गौर मार्ग से चेकिंग के दौरान मुखबिर की सूचना पर इन दोनों वांछितों को गिरफ्तार किया।गिरफ्तार रवि रावत उर्फ किशन पुत्र श्यामलाल रावत, निवासी जुग्गौर मोहल्ला गोदइया, थाना बीबीडी, उम्र 25 वर्ष, पर हत्या के प्रयास, लूट, अवैध शस्त्र अधिनियम, धोखाधड़ी और गैंगेस्टर एक्ट सहित कुल 12 गंभीर आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं। वह एक सक्रिय संगठित गिरोह का सरगना है और अपने गिरोह के सदस्यों लवकुश रावत, रोहित रावत और दीपक वाल्मीकि के साथ मिलकर राजधानी और आसपास के जिलों में कई घटनाओं को अंजाम दे चुका है। उसका नाम थाना बीबीडी के सक्रिय हिस्ट्रीशीटरों की सूची में शामिल है और उसका एचएस नंबर A-03 दर्ज है।लवकुश रावत उर्फ अऊवा पुत्र विशुनलाल, निवासी पंडितपुर, जुग्गौर, उम्र 21 वर्ष, गिरोह का सहयोगी है, जिस पर भी बीबीडी थाने में कई संगीन मुकदमे दर्ज हैं। इन दोनों के खिलाफ 4 जुलाई को थाना बीबीडी में गिरोहबंद एवं समाजविरोधी क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम 1986 की धारा 3(1) के तहत एफआईआर संख्या 157/2025 दर्ज की गई थी।पुलिस की जांच में यह भी सामने आया है कि यह गिरोह चोरी, नकबजनी, लूट व अवैध शस्त्र के प्रयोग जैसे अपराधों को आर्थिक लाभ व दबदबा कायम करने के उद्देश्य से अंजाम देता रहा है। इनके आपराधिक कृत्यों के कारण जनता में भय और असुरक्षा का माहौल व्याप्त था। यह गिरोह अंतर्जनपदीय स्तर पर सक्रिय था।गिरफ्तार आरोपियों को बीबीडी थाना पुलिस द्वारा मा. न्यायालय में पेश कर रिमांड पर भेजा गया है। पुलिस अब इस गिरोह के अन्य सदस्यों की भी सरगर्मी से तलाश कर रही है ताकि पूरे नेटवर्क को ध्वस्त किया जा सके।इस कार्रवाई में उपनिरीक्षक मुकेश पाल, हेड कांस्टेबल हिमांशु राय और हेड कांस्टेबल निर्दोष कुमार शामिल रहे, जिन्होंने मुस्तैदी और साहस के साथ इन कुख्यात अपराधियों को गिरफ्त में लिया।

भविष्य के युद्धों के लिए तैयार होती भारतीय सेना

वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार आने के बाद से ही भारत अपनी सेनाओं को आत्मनिर्भर, स्वदेशी तकनीक से समृद्ध, सुदृढ़ व सशक्त बनाने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। भारतीय सेना को भविष्य की रक्षा चुनौतियों लिए इस प्रकार तैयार किया जा रहा है कि भूमि से लेकर वायु और समुद्र की गहराई से लेकर अंतरिक्ष की ऊंचाईयों तक अपनी सुरक्षा के लिए किसी अन्य पर निर्भर न रहना पड़े। आज अति आधुनिक ड्रोन से लेकर अविश्वसनीय मारक क्षमता वाली मिसाइलों तक का निर्माण भारत में किया जा रहा है।

विगत दिनों ईरान-इजराइल के मध्य संघर्ष के बीच ईरान के शक्तिशाली व मजबूत परमाणु संयंत्रो को नष्ट करने की क्षमता न होने के कारण इजराइल को भी अमेरिका की शरण में जाना पड़ा था। ऐसी ही परिस्थतियों से बचने के लिए भारत अब बंकर ब्लस्टर बम बनाने की दिशा में भी अग्रसर है। वर्तमान समय में कुछ ही राष्ट्रों के पास बंकर ब्लस्टर जैसी सुविधा उपलब्ध है और जब भारत भी उस श्रेणी में आ जाएगा। जब भारत का यह स्वदेशी बंकर ब्लस्टर बम बनकर तैयार हो जाएगा तब हमारी अग्नि-5 मिसाइल दुश्मन के मजबूत ठिकानों और तहखानों को मिनटों में ध्वस्त करक वापस चली आएगी।

भारतीय रक्षा अनुसंधान एवं संगठन अग्नि 5 मिसाइल के दो नये एडवांस प्रारूप विकसित कर रहा है जिसमें प्रथम प्रारूप बंकर ब्लस्टर वॉरहेड या विस्फोटक ले जाने वाला होगा जो जमीन के भीतर 80 से 100 मीटर तक जाकर दुश्मन के ठिकानों को ध्वस्त करेगा जबकि दूसरा प्रारूप विस्फोटक ले जाने वाला होगा। ये दोनों ही प्रारूप दुश्मन के डिफेंस सिस्टम, न्यूक्लियर सिस्टम, रडार सिस्टम, कमांड एंड कंट्रोल सेंटर और हथियार डिपो को ध्वस्त करके वापस लौट आएंगे। अग्नि -5 बंकर ब्लस्टर मिसाइल जमीन, सड़क और मोबाइल लांचर से दागी जाएगी। अग्नि-5 भारत की एक ऐसी मिसाइल है जो एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप तक निशाना लगा सकती है। इसकी रेंज 5 से 7 हजार किमी तक हैं ये परमाणु हथियार भी ले जा सकती है। भारत का बंकर ब्लस्टर बम अमेरिकी बम से भी अधिक क्षमतावान बनाया जा रहा है।भारत की बंकर ब्लस्टर मिसाइल अमेरिकी बम से अधिक गहराई तक निशाना लगा सकती है। भारत को चीन और पाकिस्तान से पैदा हुए खतरे को देखते हुए ही इस प्रकार की मिसाइल का निर्माण किया जा रहा है।

भारतीय नौसेना को मिला तमाल- इसी प्रकार ब्रहमोस मिसाइलों से लैस अब तक का सबसे घातक आधुनिक स्टील्थ युद्धपोत आईएनएस तमाल अब भारतीय नौसेना में शामिल हो गया है जिसके कारण अब समुद्र में भी भारत की ताकत बढ़ गई है। इस बहुददेशीय अतिआधुनिक युद्धपोत का जलावतरण रूस के केलिनिनग्राद में हुआ। नौसेना के पश्चिमी बेड़े में शामिल यह युद्धपोत हिंद सागर में तैनात होगा और पाकिस्तान से लगती सीमा पर निगरानी में भारत की सबसे बड़ी ताकत बन जायेगा। तमाल युद्धपोत विगत दो दशकों में रूस से प्राप्त क्रियाक श्रेणी के युद्धपोतों की श्रृंखला में आठवां युद्धपोत है। यह पूर्ववर्ती संस्करणों की तुलना में अधिक उन्नत है। इसमें लंबवत प्रक्षेपित सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलें उन्नत 100 मिलीमी की तोप, मानक 30 मिलीमीटर गन क्लोज -इन हथियार प्रणाली के अलावा आधुनिक समय की प्रणाली अत्यधिक भार वाले टारपीडो तत्काल हमला करने वाले पनडुब्बी रोधी, रॉकेट और अनेक निगरानी एवं अग्नि नियंत्रण रडार तथा अन्य प्रणालियां शामिल हैं।

युद्धपोत का नाम तमाल देवताओं के राजा इंद्र की पौराणिक तलवार से लिया गया है। इसकी मारक क्षमता भी उसी तरह तेज, आक्रामक और निर्णायक है। इसका शुभंकर भारतीय पौराणिक कथाओं के अमर भालू जाम्बवंत और रूसी राष्ट्रीय पशु यूरेशियन भूरे भालू की समानता से प्रेरित है। तमाल युद्धपोत का निर्माण रूस के कैलिनिनग्राद स्थित यांतर शिपयार्ड में हुआ है और इसमें 26 प्रतिशत स्वदेशी उपकरण हैं। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह आखिरी युद्धपोत है जो विदेश में बना है अब ऐसा कोई भी युद्धपोत भारत में ही बनेगा जिसके बाद भारत की नौसेना की शक्ति और बढ़ जाएगी। इस युद्धपोत के कुशल संचालन व रखरखाव के लिए 250 नौसेना कर्मियों ने रूस में प्रशिक्षण प्राप्त किया है। यह बहु मिशन युद्धपोत भारत के समुद्री हितों के क्षेत्र में पारंपरिक और गैर पारंपरिक दोनों तरह के खतरों से निपटने में सक्षम है। भारत की नोसेना को एक और स्वदेशी युद्धपोत उदयगिरि का उपहार भी मिला है। इस युद्धपोत में सुपरसोनिक सतह से सतह से मार करने वाली प्रणाली लगी है। इसमें 76 मिमी गन, 30 मिमी और 12.7 मिमी की रैपिड फायर गन सहित डीजल इंजन और गैस टर्बाइन युक्त सीओडीजी प्रणाली है। इस 3900 टन वजनी और 125 मीटर लंबे युद्धपोत में सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलें लैस हैं। यह देनों ही युद्धपोत भारत की समुद्री सीमा की सुरक्षा में प्रमुख भूमिका निभाने वाले हैं।

कथावाचक कांड की आड़ में- सनातन पर हमला

सपा मुखिया अखिलेश यादव यह बात अच्छी तरह से जानते हैं कि वर्तमान समय में बाबा बागेश्वर धाम की लोकप्रियता चरम सीमा पर है। बाबा बागेश्वर के लाखों भक्त तथा प्रशंसक हैं, वे जहां भी कथा सुनाने जाते हैं वहां लाखों लोगों की भीड़ उमड़ती है।

मृत्युंजय दीक्षित

इटावा के कथावाचक कांड को राजनीतिक रंग देकर उसमें स्वयं फंसते नजर आ रहे सपा मुखिया अखिलेश यादव ने बाबा बागेश्वर धाम आचार्य धीरेंद्र शास्त्री पर ही हमला बोल दिया और उन पर कथा करने के लिए अंडर द टेबल 50 लाख रुपए लेने का आरोप लगाकर नया विवाद उत्पन्न करने का असफल प्रयास किया है। सपा मुखिया जब इटावा की घटना पर भारतीय जनता पार्टी को घेरने में सफल नहीं हुए तब उन्होंने हिंदू राष्ट्र का नारा देने वाले धीरेंद्र शास्त्री जी पर बयान देकर सनसनी मचाने का प्रयास किया। वास्तव में अखिलेश यादव धीरेन्द्र शास्त्री जी की आड़ में अपनी पीडीए राजनीति को हवा देने का प्रयास कर रहे हैं।

सपा मुखिया अखिलेश यादव यह बात अच्छी तरह से जानते हैं कि वर्तमान समय में बाबा बागेश्वर धाम की लोकप्रियता चरम सीमा पर है। बाबा बागेश्वर के लाखों भक्त तथा प्रशंसक हैं, वे जहां भी कथा सुनाने जाते हैं वहां लाखों लोगों की भीड़ उमड़ती है। उनके ऊपर सपा मुखिया ने सुनियोजित षड्यंत्र के अंतर्गत आरोप लगाए हैं। सपा मुखिया अखिलेश यादव घोर जातिवाद की राजनीति कर रहे हैं और टीवी चैनलों पर अपने प्रवक्ताओं से बहस करवा रहे हैं कि क्या कथा कहना केवल एक जाति का ही अधिकार है? जब वह इस बहस में पिछड़ गए और फंसने लगे तब बाबा बागेश्वर पर हमलावर हो गये। बाबा बागेश्वर ने अखिलेश के आरोपों का उत्तर देते हुए स्पष्ट रूप से कहा कि अगर दक्षिणा नहीं लेंगे तो कैंसर अस्पताल कैसे बनेगा? उसमें गरीबों का निःशुल्क उपचार कैसे होगा? बाबा बागेश्वर धाम गरीब कन्याओं का विवाह कैसे संपन्न करवाएगा? बाबा बागेश्वर यदि हनुमानजी का आशीर्वाद लेकर लोगों की समस्या का समाधान करते हैं तो इससे लोगों को परेशानी क्यों हो रही है ?

ज्ञातव्य है कि बाबा बागेश्वर सोशल मीडिया पर भी एक सेलेब्रिटी की तरह हैं। उनके फेसबुक पर साढ़े 8 करोड़ सोशल मीडिया एक्स पर दो लाख तथा इंस्टाग्राम पर भी दो लाख से अधिक फालोअर्स हैं जबकि करोड़ों लोग उनके यूटयूब चैनल को नियमित रूप से देखते हैं। अपनी कथा व उपदेशों के माध्यम से वह जनमानस को हिन्दू एकता और राष्ट्रवाद का पाठ पढ़ाते हैं यही कारण है कि सपा मुखिया अखिलेश यादव अन्य स्वार्थी नेता उनसे उन पर सामूहिक हमले करते हैं। विगत वर्ष जब बाबा बागेश्वर कथा करने के लिए बिहार गये थे तब वहां के विरोधी दलों के नेताओं ने उनको जेल मे डालने की बात तक कही थी।

बाबा बागेश्वर जी से उन सभी राजनैतिक दलों व नेताओं को समस्या उत्पन्न हो रही है जो जातिवाद व मुस्लिम तुष्टीकरण की राजनीति कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाह रहे हैं। बाबा बागेश्वर धाम जातिवाद को कैंसर के समकक्ष बताते हैं और हिंदू समाज को एक बनाए रखने के लिए काम करते हैं। हिन्दू एकता के लिए की गई उनकी पहली पदयात्रा बहुत सफल व लोकप्रिय रही थी, अब वह एक बार फिर नई दिल्ली से वृंदावन तक पदयात्रा पर निकलने वाले हैं।

सच्चाई यह है कि सपा मुखिया अखिलेश यादव का बाबा पर यह ताजा हमला उनकी हिंदू संत समाज व सनातन विरोधी मानसिकता को ही दर्शाता है। जो लोग अयोध्या, मथुरा व काशी विश्वनाथ कॉरिडोर के प्रबल विरोधी रहे हों, जिन लोगों ने अयोध्या में निहत्थे कारसेवकों का नरसंहार किया हो, जिन्होंने कुम्भ का उपहास किया हो वो एक हिन्दू राष्ट्र की बात करने वाले युवा संत का विरोध ही करेंगे। जब महाराष्ट्र के पालघर में संतों को मुस्लिम भीड़ ने पीट पीट कर मार डाला था तब सपा मुखिया मौन हो गए थे।

सपा मुखिया ने केवल बाबा पर हमला नहीं किया है अपितु सभी कथावाचकों और संतो सहित सनातन धर्म व उसकी एकता पर किया है। सपा मुखिया को स्पष्ट रूप से रामायण, महाभारत, भागवत कथा, आरती, मंदिर, गौशालाओं, गीता आदि सभी से नफरत है। सपा मुखिया को हर उस अच्छी चीज से नफरत है जिससे हिन्दू समाज का गौरव बढ़ता है। सपा के लोग प्रायः रामचरित मानस आदि ग्रंथों का अपमान करने से नहीं चूकते कभी फाड़ते हैं कभी जलाते हैं। है। सपा मुखिया गौशालाओं से बदबू आती है जैसी बातें कहकर भगवान श्रीकष्ण व समस्त यदुवंशी समाज का अपमान कर चुके हैं। सपा मुखिया ने पहले कथावाचक घटना को राजनैतिक रंग देकर फिर बाबा बागेश्वर पर हमला करके एक बहुत ही निम्न राजनैतिक चाल चली है। उत्तर प्रदेश और बिहार ही नहीं वरन पूरे देश को यह समझना होगा। यह समय जातिवाद की राजनीति से ऊपर उठकर स्वार्थी राजनेताओं को पूरी तरह से घूल चटाने का समय आ गया है ।

अजब-गजब

इंसानों के शरीर में प्रवेश कर चुकी है ये घातक चीज, वैज्ञानिकों ने जताई चिंता

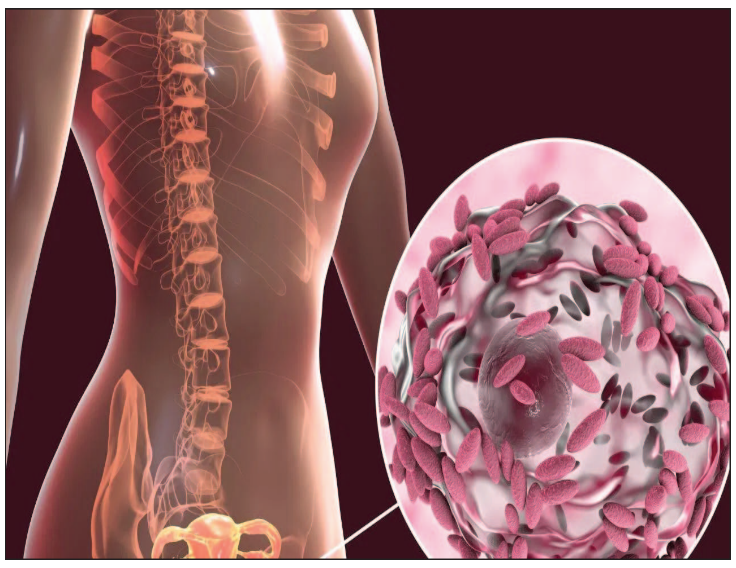

प्लास्टिक हमारे रोजमर्रा के जीवन का एक अहम हिस्सा बन चुका है, हम जानते हैं कि ये हमारे लिए नुकसानदायक है, लेकिन बावजूद इसके हम इसका भरपूर इस्तेमाल करते हैं। इसका इस्तेमाल इतना ज्यादा बढ़ चुका है कि ये हमारे प्राइवेट पार्ट तक पहुंच चुका है। जी, हां इससे जुड़ी एक चौंकाने वाली रिपोर्ट का खुलासा हुआ है। जिसमें ये कहा गया है कि हमारे दिल की बीमारियों से होने वाली मौत के लिए प्लास्टिक ही जिम्मेदार है। 100 में 13 मौतें इस केस में प्लास्टिक के कारण ही होती है।

ये प्लास्टिक हमारे फेफड़ों, लीवर, किडनी, खून, दिमाग और यहां तक कि प्राइवेट पार्ट में पहुंच रहे हैं। शोध को लेकर एक बात कही गई है कि प्लास्टिक इंसानों के प्रजनन तंत्र तक भी पहुंच चुके हैं, जिसकी वजह से आने वाले समय में बच्चों को पैदा करने में काफी ज्यादा दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। रिपोर्ट की माने तो वैज्ञानिकों ने पुरुषों के सीमेन और महिलाओं के ओवरी फ्लूइड में माइक्रोप्लास्टिक कण पाएं जो इंसानों की सभ्यता के लिए काफी ज्यादा खतरनाक है।

इसको लेकर वैज्ञानिकों ने कारण बताया कि लोग बाद स्टायरोफोम जैसे पॉलीस्टायरीन और नायलॉन जिम्मेदार है। माइक्रोप्लास्टिक्स के स्वास्थ्य पर प्रभाव को लेकर वैज्ञानिकों ने स्पष्ट रूप से कहा है कि इसका असर अभी इंसानों पर तो देखने को नहीं मिला रहा है, लेकिन उन जानवरों पर असर दिख रहा है, जिनका DNA ज्यादातर इंसानों से मिलता है और उम्मीद है कि बहुत जल्द इंसानों के ऊपर भी बराबर इनका असर देखने को मिलेगा। हर साल लगभग 10 से 40 मिलियन मीट्रिक टन माइक्रोप्लास्टिक पर्यावरण में छोड़े जाते हैं। जिसमें से इंसान 250gram प्लास्टिक हर साल निगल रहा है।

माइक्रोप्लास्टिक्स गर्भाशय, प्लेसेंटा और यहां तक कि मानव अंडकोष में भी बड़ी मात्रा में पाए जा चुके हैं। ये प्लास्टिक हमारे शरीर में हवा में सांस लेने से और खाने के जरिए पहुंचता है। इससे बचने के बड़े ही साधारण उपाय है अगर हम इसका इस्तेमाल करे तो बच सकते हैं। इसके लिए हम लोगों को प्लास्टिक की जगह कांच की बोतल में पानी पीना पड़ेगा। इसके साथ ही माइक्रोवेव में प्लास्टिक कंटेनरों में खाना गर्म नहीं करना चाहिए।

ब्लॉग

दलाई लामा के चयन पर चीन का साजिशपूर्ण हस्तक्षेप

ललित गर्ग

तिब्बत के आध्यात्मिक नेता एवं वर्तमान 14वें दलाई लामा, तेनजिन ग्यात्सो की उत्तराधिकार प्रक्रिया न केवल बौद्ध धर्म और तिब्बत की संस्कृति से जुड़ा विषय है, बल्कि यह अंतरराष्ट्रीय राजनीति, मानवाधिकार और भारत-चीन संबंधों के संदर्भ में भी अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। चीन द्वारा इस धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रक्रिया में हस्तक्षेप करने का प्रयास न केवल धार्मिक स्वतंत्रता का हनन है, बल्कि यह वैश्विक जनमत की भी अवहेलना है। इन स्थितियों में उत्तराधिकार के मसले पर भारत की भूमिका एक निर्णायक मार्गदर्शक के रूप में उभरती है और इसे दृष्टि में रखते हुए भारत ने दलाई लामा का पक्ष लिया है। ऐसा करने में कुछ भी अप्रत्याशित नहीं हैं। भारत शुरू से तिब्बतियों के अधिकार, उनके हितों और उनकी परंपराओं व मूल्यों के समर्थन में खड़ा रहा है। केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू का बयान चीन के लिए यह संदेश भी है कि इस संवेदनशील मसले पर उसकी मनमानी नहीं चलेगी।

चीन, दलाई लामा के उत्तराधिकारी के चयन में हस्तक्षेप करने की कोशिश कर रहा है, यह दावा करते हुए कि यह धार्मिक और ऐतिहासिक प्रक्रिया का हिस्सा है। हालांकि, दलाई लामा और तिब्बती समुदाय का कहना है कि यह अधिकार केवल उनके पास है और चीन का हस्तक्षेप धार्मिक स्वतंत्रता का उल्लंघन है। चीन, 'स्वर्ण कलश' प्रणाली का उपयोग करके अपने पसंदीदा उम्मीदवार को स्थापित करना चाहता है। चीन का कहना है कि दलाई लामा का उत्तराधिकारी चुनने का अधिकार उसे 'स्वर्ण कलश' प्रणाली के माध्यम से है, जो 1793 में किंग राजवंश के समय से चली आ रही है। इस प्रणाली में, संभावित उत्तराधिकारियों के नाम एक कलश में डाले जाते हैं और फिर एक नाम निकाला जाता है।

दलाई लामा केवल तिब्बत के धार्मिक नेता नहीं हैं, वे तिब्बती अस्मिता, स्वतंत्रता और आत्म-सम्मान के प्रतीक हैं। वर्तमान 14वें दलाई लामा, तेनजिन ग्यात्सो, 1959 में चीन की दमनकारी नीतियों के कारण तिब्बत छोड़कर भारत आए और धर्मशाला में निर्वासित तिब्बती सरकार की स्थापना हुई। भारत ने न केवल उन्हें शरण दी, बल्कि एक शांतिपूर्ण संघर्ष के पथप्रदर्शक के रूप में वैश्विक स्तर पर उनके विचारों को मंच भी प्रदान किया। वर्तमान दलाई लामा ने इस पद के लिए अगले शख्स को चुनने की सारी जिम्मेदारी गाडेन फोडरंग ट्रस्ट को दे दी है। उन्होंने कहा है कि इस मामले में किसी और को हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। उनका इशारा चीन की ओर था। रिजिजू ने भी इस बात का समर्थन किया है। वहीं, चीन ने इस मसले में साजिशपूर्ण हस्तक्षेप करते हुए कहा है कि उत्तराधिकारी का चयन चीनी मान्यताओं के अनुसार और पेइचिंग की मंजूरी से होना चाहिए। चीन दलाई लामा की उत्तराधिकार प्रक्रिया पर नियंत्रण चाहता है ताकि तिब्बती जनता को अपने ही धार्मिक नेता से अलग किया जा सके। 2007 में चीनी सरकार ने एक 'धार्मिक मामलों पर नियंत्रण कानून' लागू किया जिसके अंतर्गत दलाई लामा जैसे धार्मिक नेताओं की नियुक्ति भी राज्य की अनुमति से ही संभव बताई गई। यह न केवल बौद्ध धर्म के सिद्धांतों के विरुद्ध है, बल्कि यह तिब्बती जनता की आस्था और पहचान का गला घोंटने जैसा है।

1959 में जब दलाई लामा को कम्युनिस्ट सरकार के दमन के चलते भारत में शरण लेनी पड़ी थी, तब से हालात बिल्कुल बदल गए हैं- चीन बेहद ताकतवर हो चुका है और तिब्बत कमजोर। इसके बाद भी अगर तिब्बत का मसला जिंदा है, तो वजह हैं दलाई लामा। चीन इसे समझता है और इसी वजह से इस पद पर अपने प्रभाव वाले किसी शख्स को बैठाना चाहता है। चीन की योजना यह है कि जब वर्तमान दलाई लामा का देहांत हो, तो वह अपनी पसंद का एक 'दलाई लामा' घोषित करे, जिसे वैश्विक समुदाय भले ही स्वीकार न करे, लेकिन चीन उसकी पहचान को जबरन वैधता प्रदान करे। यह एक "राजनीतिक कठपुतली" खड़ी करने जैसा है, जिससे तिब्बत पर उसका शासन वैचारिक रूप से मजबूत हो सके। लेकिन भारत, जो दलाई लामा और तिब्बती निर्वासित समुदाय का स्वागत करता रहा है, अब उस नाजुक मोड़ पर है जहाँ केवल नैतिक समर्थन पर्याप्त नहीं होगा। चीन की विस्तारवादी नीति और आक्रामक कूटनीति को देखते हुए भारत को अपनी रणनीतिक स्थिति स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करनी होगी।

चीन ने तिब्बत की पहचान को मिटाने की हर मुमकिन कोशिश कर ली है। दलाई लामा के पद पर दावा ऐसी ही एक और कोशिश है। उसकी वजह से यह मामला धर्म से आगे बढ़कर वैश्विक राजनीति का रूप ले चुका है, जिसका असर भारत और उन तमाम जगहों पर पड़ेगा, जहां तिब्बत के लोगों ने शरण ली है। भारत पर तो चीन लंबे समय से दबाव डालता रहा है कि वह दलाई लामा को उसे सौंप दे। चीन और तिब्बत की लड़ाई भारतीय भूमि पर दशकों से चल रही है और नई दिल्ली-पेइचिंग के बीच तनाव का एक बड़ा कारण बनती रही है। दलाई लामा की घोषणा के अनुसार, उनका उत्तराधिकारी तिब्बत के बाहर का भी हो सकता है- अनुमान है कि भारत में मौजूद अनुयायियों में से कोई एक, तो यह तनाव और बढ़ सकता है। लेकिन, इसमें भारत के लिए मौका भी है। वह चीन पर कूटनीतिक दबाव डाल सकता है, जो पहलगाम जैसी घटना में भी पाकिस्तान के साथ खड़ा रहा और बॉर्डर से लेकर व्यापार तक, हर जगह राह में रोड़े अटकाने में लगा है।

धर्मशाला, जहाँ वर्तमान दलाई लामा रहते हैं, अब विश्व स्तर पर तिब्बती संस्कृति एवं बौद्ध परंपराओं का केंद्र बन गया है। भारत को इस केंद्र को आधिकारिक मान्यता देनी चाहिए और संयुक्त राष्ट्र जैसे मंचों पर इस धार्मिक स्वतंत्रता के प्रश्न को उठाना चाहिए। अब जबकि दलाई लामा स्वयं कह चुके हैं कि उनके उत्तराधिकारी का चयन भारत में हो सकता है तो भारत सरकार को इस पर एक स्पष्ट नीति बनानी चाहिए कि वह चीन द्वारा घोषित किसी भी 'नकली' दलाई लामा या अनुचित हस्तक्षेप को मान्यता नहीं देगा। भारत को अमेरिका, जापान, यूरोपीय संघ जैसे लोकतांत्रिक देशों के साथ समन्वय स्थापित करके इस विषय पर वैश्विक समर्थन, कूटनीतिक दबाव और अंतरराष्ट्रीय समन्वय तैयार करना चाहिए। अमेरिका भी पहले ही कह चुका है कि दलाई लामा का उत्तराधिकारी केवल तिब्बती परंपराओं के अनुसार चुना जाएगा। अमेरिका में तिब्बती बौद्धों की धार्मिक स्वायत्तता को लेकर डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन पार्टी दोनों ही मुखर रही हैं। इतना ही नहीं अमेरिकी सरकार अगले दलाई लामा के चयन में चीन के दखल को भी अमान्य करार देती आई है।

चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापक माओत्से तुंग की कमान में चीनी सेना लंबे समय तक तिब्बत पर कब्जे की कोशिश में जुटी रही। इसके खिलाफ जब दलाई लामा के नेतृत्व में तिब्बती बौद्धों ने आवाज उठाई तो चीनी सेना ने इसे बर्बरता से कुचल दिया। इसके बाद 1959 में चीन के तिब्बत पर कब्जा करने के बाद दलाई लामा तिब्बतियों के एक बड़े समूह के साथ भारत आ गए और यहां से ही तिब्बत की निर्वासित सरकार का संचालन करने लगे। तिब्बत में इस घटना ने पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। तब से दलाई लामा ने हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला को अपना घर बना लिया, जिससे बीजिंग नाराज हो गया और वहां उनकी उपस्थिति चीन और भारत के बीच विवाद का विषय बनी रही। भारत में बसे तिब्बती शरणार्थियों को शिक्षा, रोज़गार और यात्रा से संबंधित नागरिक अधिकार देने की दिशा में ठोस कदम उठाकर भारत उनके प्रति अपनी प्रतिबद्धता को और मजबूत कर सकता है। भारत में इस वक्त करीब 1 लाख से ज्यादा तिब्बती बौद्ध रहते हैं, जिन्हें पूरे देश में पढ़ाई और काम की स्वतंत्रता है। दलाई लामा को भारत में भी काफी सम्मान दिया जाता है।

दलाई लामा के उत्तराधिकारी का प्रश्न केवल एक व्यक्ति के चयन का विषय नहीं, बल्कि यह बौद्ध संस्कृति, तिब्बती आत्मनिर्णय और धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा का सवाल है। चीन की तानाशाही मानसिकता इसे नियंत्रित करना चाहती है, जबकि भारत को इसकी स्वतंत्रता की रक्षा करनी है। भारत को इस धर्म-राजनीति के संघर्ष में विवेकपूर्ण, दृढ़, निर्णायक और न्यायोचित भूमिका निभाते हुए न केवल तिब्बती जनता का, बल्कि विश्व भर के धार्मिक अधिकारों का भी संरक्षक बनना चाहिए। यही भारत की 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की नीति की सच्ची अभिव्यक्ति होगी।

कांवड़ यात्रा मार्ग पर दुकानदारों को अपनी पहचान नहीं करनी होगी सार्वजनिक, QR कोड में छिपी होगी हर जानकारी

आर्यावर्त संवाददाता

कानपुर। उत्तर प्रदेश में कांवड़ यात्रा मार्ग पर दुकानदारों को अब अपनी पहचान सार्वजनिक करने की अनिवार्यता से छूट मिल गई है, लेकिन खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग (एफएसडीए) ने एक नया नियम लागू किया है। इसके तहत हर दुकानदार को अपनी दुकान पर क्यूआर कोड युक्त प्रपत्र प्रदर्शित करना होगा। इस क्यूआर कोड को स्कैन करते ही ग्राहक दुकानदार का नाम, पता, लाइसेंस नंबर, मोबाइल नंबर और ईमेल जैसे विवरण आसानी से जान सकेंगे।

कांवड़ यात्रा मार्ग पर दुकानों के नाम और मालिकों की जानकारी को लेकर पहले भी विवाद हो चुके हैं। पिछले साल मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर दुकानदारों के नाम प्रदर्शित करने का आदेश जारी किया गया था, जिसे सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई। अदालत ने इस पर अंतरिम रोक लगा दी थी। इसके बाद 24 सितंबर 2024 को यूपी सरकार ने राज्यभर के भोजनालयों के लिए मालिकों, प्रबंधकों और कर्मचारियों के नाम-पते प्रदर्शित करने का आदेश जारी किया। हालांकि, एफएसडीए एक्ट में नाम जाहिर करने का कोई प्रावधान न होने के कारण अब दुकान का नाम और क्यूआर कोड प्रदर्शित करना अनिवार्य किया गया है।

क्यूआर कोड से ग्राहक संतुष्टि और फीडबैक

एफएसडीए ने ग्राहक संतुष्टि के लिए एक विशेष प्रपत्र तैयार किया है, जिसमें दुकान का लाइसेंस नंबर, नाम, पता, मोबाइल नंबर, ईमेल और टोल-फ्री नंबर के साथ क्यूआर कोड शामिल है। ग्राहक इस कोड को स्कैन कर दुकानदार की पूरी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे और फूड सेफ्टी कनेक्ट एप के जरिए फीडबैक भी दे सकेंगे। यह व्यवस्था यात्रियों के लिए भोजन की गुणवत्ता और पारदर्शिता सुनिश्चित करने में मददगार साबित होगी।

नए सिस्टम के तहत ग्राहक खाद्य पदार्थों में मिलावट की शिकायत भी दर्ज कर सकेंगे। शिकायत में ग्राहक को यह बताना होगा कि उन्होंने क्या खाया और किसमें मिलावट की आशंका है। शिकायत अपलोड होते ही विभाग के कंट्रोल रूम को सूचना मिलेगी, और नजदीकी खाद्य निरीक्षक तुरंत जांच के लिए पहुंचेगा। प्राथमिक जांच में मिलावट की पुष्टि होने पर संबंधित खाद्य पदार्थ को नष्ट कराया जाएगा।

मिलावटखोरी रोकने के लिए एफएसडीए ने व्यापक रणनीति बनाई है। कांवड़ यात्रा मार्गों और धार्मिक स्थलों पर जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाएंगे, जिनमें श्रद्धालुओं को खाद्य पदार्थों में मिलावट की पहचान करने के तरीके बताए जाएंगे। इसके अलावा, विभाग की मोबाइल वैन भी तैनात रहेगी, जहां लोग खाद्य पदार्थों की जांच करा सकेंगे।

11 जुलाई से शुरू होगी कांवड़ यात्रा

सावन मास में हर साल होने वाली कांवड़ यात्रा इस बार 11 जुलाई से शुरू होगी। इस दौरान लाखों शिवभक्त गंगाजल लेकर भगवान शिव का जलाभिषेक करेंगे। यात्रा मार्ग पर भोजन की शुद्धता और पवित्रता सुनिश्चित करने के लिए यह नई व्यवस्था लागू की गई है, ताकि श्रद्धालुओं को सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण भोजन मिल सके। यह कदम न केवल पारदर्शिता को बढ़ावा देगा, बल्कि कांवड़ यात्रियों के लिए सुरक्षित और विश्वसनीय अनुभव भी सुनिश्चित करेगा।

जीजा–साली से अकेले में हुई एक भूल, फिर कर बैठे ऐसा कांड, पहुंच गए जेल

आर्यावर्त संवाददाता

मुजफ्फरनगर। साली को यूं तो मजाक-मजाक में जीजा की आधी घर वाली कहा जाता है। मगर कुछ लोग इस रिश्ते को शर्मसार करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ते। उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में जीजा-साली ने भी कुछ ऐसा ही किया। साली-जीजा में अफेयर चला। प्यार में दोनों ने सारी हदें पार कर डालीं। दोनों के बीच संबंध बने। फिर साली प्रेग्नेंट हो गई। कहीं किसी को इसका पता न चल जाए तो जीजा ने साली का अबॉर्शन करवा दी। बस इसके बाद उन्होंने जो कुछ भी किया, उसी से वो जेल पहुंच गए।

दोनों ने भ्रूण को शहर में कूड़े के एक ढेर में जाकर फेंक दिया। बाद में इस फेंके हुए भ्रूण की जानकारी पुलिस को हुई। उन्होंने फिर 100 से ज्यादा सीसीटीवी कैमरे खंगाले। जिसमें जीजा-साली दिख गए। पुलिस ने दोनों को गिरफ्तार कर लिया। बात घर तक पहुंची तो साली की बहन बोली- मुझे को इसकी कभी भनक ही नहीं लग पाती, अगर पुलिस हमें ये सब न बताती। मेरे पति और बहन दोनों ने ही मुझे और हमारे परिवार को धोखा दिया है।

पुलिस लाइन में प्रेसवार्ता करते हुए एसएसपी संजय कुमार वर्मा ने बताया- 24 जून को रुड़की चौकी चुंगी के पास कूड़े के ढेर में भ्रूण पड़ा मिला था। इस मामले में अज्ञात के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर पुलिस खुलासे के लिए जुटी थी। कोतवाली नगर प्रभारी निरीक्षक उमेश रोरिया ने अपनी टीम के साथ घटनास्थल के आसपास लगे लगभग 100 सीसीटीवी कैमरे खंगाले।

जीजा-साली पर एक्शन

पुलिस ने इस मामले में अभिषेक निवासी उत्तरी रामपुरी व उसकी साली प्रिया निवासी उत्तरी रामपुरी को गिरफ्तार कर लिया है। मामले में खुलासा हुआ है कि अभिषेक और प्रिया में अवैध संबंध हो गए। इसी दौरान प्रिया गर्भवती हो गई। दोनों के संबंधों की किसी को जानकारी न हो इसके लिए प्रिया का गर्भपात करवा कर भ्रूण को कूड़े के ढेर पर फेंका गया था। बताया जा रहा है कि भ्रूण 6 माह का था। पुलिस को इसकी जानकारी हुई तो मामले की जांच हुई। पुलिस का कहना है कि मामले में आरोपियों के खिलाफ जांच जारी है। दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया है। मामले में दोनों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

मुहर्रम पर्व पर ताजिया व कर्बला स्थल का एसएसपी ने भ्रमण कर लिया जायजा

आर्यावर्त संवाददाता

मीरजापुर। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने शनिवार को मुहर्रम पर्व पर ताजिया व कर्बला स्थल आदि का निरीक्षण व भ्रमण कर जायजा लिया तथा सम्बन्धित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिया सोमेन बर्मा वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा मुहर्रम पर्व को सौहार्दपूर्ण माहौल में आपसी भाई चारे को कायम रखते हुए निर्बाध रुप से सकुशल सम्पन्न कराए जाने हेतु जनपद के थाना अदलहाट क्षेत्रांतर्गत ग्राम नारायणपुर व गरौड़ी में रखे जाने वाले ताजिया व कर्बला स्थलों सहित विभिन्न स्थानों पर भ्रमण व निरीक्षण कर सुरक्षा-व्यवस्था का जायजा लेते हुए सम्बन्धित अधिकारीगण को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। इस दौरान धर्मगुरूओं व स्थानीय लोगो से वार्ता कर त्यौहार को हर्षोल्लास व शान्तिपूर्ण तरीके से आपसी भाईचारे को कायम रखते हुए मनाने की अपील की गयी। इसी क्रम में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जनपद मीरजापुर द्वारा जनपद के समस्त थाना क्षेत्रों में प्रभारी निरीक्षक व थानाध्यक्ष गण सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण द्वारा थाना क्षेत्र में सतर्क दृष्टि रखते हुए भ्रमणशील रहकर मुहर्रम पर्व पर जुलूस कार्यक्रम को सकुशल सम्पन्न कराये जाने हेतु निर्देश दिए गए।

बीएनएसएस लागू होने के बाद आपराधिक मामलों में अग्रिम जमानत पर अब प्रतिबंध नहीं

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि एक जुलाई, 2024 से भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) लागू होने के बाद अब उत्तर प्रदेश में मृत्युदंड या आजीवन कारावास से दंडनीय आपराधिक मामलों में अग्रिम जमानत देने पर लगा प्रतिबंध प्रभावी नहीं है। कोर्ट ने कहा कि बीएनएसएस की धारा 482, जो अब अग्रिम जमानत को नियंत्रित करती है। ऐसे में सीआरपीसी की धारा 438(6) के तहत पहले से मौजूद किसी भी प्रतिबंध को बरकरार नहीं रखा गया है। यह फैसला न्यायमूर्ति चंद्र धारी सिंह की पीठ ने अब्दुल हमीद की दूसरी अग्रिम जमानत अर्जी को स्वीकार करते हुए सुनाया।

दरअसल, सीआरपीसी की धारा 438(6) के तहत उत्तर प्रदेश संशोधन अधिनियम, 2019 से हत्या या आजीवन कारावास से संबंधित मामलों में अग्रिम जमानत पर प्रतिबंध लगाया गया था।

बीबीडी ग्रुप के खिलाफ आईटी की बड़ी कार्रवाई, लखनऊ में 100 करोड़ की बेनामी संपत्ति जब्त

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में आयकर विभाग ने एक बड़ी कार्रवाई को अंजाम देते हुए BBD ग्रुप के खिलाफ शिकंजा कस दिया है। विभाग ने बेनामी संपत्ति निषेध अधिनियम के तहत कार्रवाई करते हुए लगभग 100 करोड़ रुपए मूल्य की संपत्तियों को जब्त किया है। इन संपत्तियों में अयोध्या रोड के आसपास स्थित कई अहम जमीनें शामिल हैं। ये जमीने 2005 से 2015 के बीच लगभग 8 हेक्टेयर खरीदी गईं थी।

आयकर विभाग की जांच में यह तथ्य सामने आया कि जिन जमीनों की खरीद हुई थी वह मुख्य रूप से उत्तरधौना, जुग्गौर, टेराखास, सरायशेख और सेमरा गांवों में स्थित थीं। हैरानी की बात यह है कि ये जमीनें बीबीडी ग्रुप के दलित कर्मचारियों के नाम पर रजिस्टर्ड की गई थीं। इन संपत्तियों की कुल कीमत करीब 100 करोड़ रुपए आंकी गई है। आयकर विभाग की जांच में यह खुलासा हुआ कि जिन बेनामी संपत्तियों की बात की जा रही है उनके असली मालिक BBD ग्रुप की मुखिया अलका दास और उनके बेटे विराज सागर दास हैं।

अयोध्या रोड पर महत्वपूर्ण संपत्तियां जब्त

ये संपत्तियां दो कंपनियों विराज इंफ्राटाउन और हाईटेक प्रोटेक्शन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के नाम पर पंजीकृत की गई थीं। जब्त की गई संपत्तियों में लखनऊ के तेजी से उभरते क्षेत्रों में स्थित अयोध्या रोड के कई महत्वपूर्ण भूखंड शामिल हैं। इन भूखंडों पर इस समय बड़े पैमाने पर निर्माण कार्य हो रहा है, जो BBD ग्रुप के विभिन्न परियोजनाओं का हिस्सा बताया जा रहा है।

बेनामी निषेध इकाई द्वारा की गई इस कार्रवाई से पहले आयकर विभाग ने कई महीनों तक विस्तृत जांच और सबूत जुटाने करने का काम किया। जांच के दौरान यह साफ हुआ कि, संबंधित संपत्तियां ऐसे व्यक्तियों के नाम पर दर्ज थीं, जिनकी आय का कोई वैध स्रोत नहीं था। जिससे कि इतनी महंगी संपत्तियां खरीदना संभव हो सके। बेनामी संपत्ति निषेध अधिनियम 1988 के अंतर्गत आयकर विभाग ने इन संपत्तियों को जब्त किया है।

मांगों को लेकर सफाई कर्मियों का नगर निगम में प्रदर्शन

प्रयागराज। सफाई कर्मियों ने प्रयागराज नगर निगम में अपनी विभिन्न मांगों को लेकर शनिवार को जमकर प्रदर्शन किया। इस दौरान बड़ी संख्या में सफाईकर्मी मौजूद रहे। निगम के सफाई कर्मियों के साथ ही महाकुंभ में कार्य करने वाले सफाई कर्मी भी शामिल रहे। प्रदर्शन के दौरान कर्मचारियों ने जमकर नारेबाजी की। नगर निगम में प्रदर्शन करने पहुंचे सफाई कर्मियों ने कहा कि महाकुंभ के समाप्ति के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मेले में काम करने वाले सफाई कर्मियों को 10-10 हजार रुपये देने की घोषणा की थी। इसका भुगतान अभी तक नहीं हो सका। इसके साथ ही सफाई कर्मियों की सफाई नायक के पद पर पदोन्नति करने, सीएम की घोषणा के अनुसार मानदेय 16 हजार प्रतिमाह करने, मृत जानवर उठाने के लिए प्रत्येक वार्ड में वाहन दिए जाने, मृत पशुओं को फेंकने के लिए स्थान निर्धारित किए जाने, वर्षा को देखते हुए रेनकोट देने, निगम के आउट सोर्सिंग कर्मचारियों का वेतन बढ़ाने समेत अन्य मांगे रखी।

शराब की जगह बोतल में पानी मिलाकर बेचते थे, गाजीपुर में कैसे हुआ फर्जीवाड़ा? दो अरेस्ट

आर्यावर्त संवाददाता

गाजीपुर। यूपी के गाजीपुर के सैदपुर थाना क्षेत्र के भद्रसेन हसनपुर डगरा गांव में कंपोजिट शराब की दुकान पर करीब एक माह पूर्व आबकारी विभाग की टीम ने छापेमारी की थी। छापेमारी में दुकान पर शराब में पानी मिलाकर बेचे जाने की बात पता चली थी। इस पर उस वक्त कार्रवाई करते हुए दुकान को सीज कर दिया गया था। साथ ही दुकान के मालिक और सेल्समैन को गिरफ्तार भी किया गया था।

अब इस मामले में जिला अधिकारी ने सुनवाई के दौरान फैसला देते हुए दुकान को पूर्ण रूप से निरस्त कर दिया है। जिला अधिकारी के इस फैसले के बाद जिले में शराब के व्यवसाय से लगे हुए दुकानदारों में हड़कंप की स्थिति है, क्योंकि इस तरह ही कई अन्य दुकानों का भी संचालन जिले में धड़ल्ले से चल रहा है।

दरअसल, आबकारी विभाग के अधिकारियों को करीब एक माह पहले एक शिकायत के जरिये पता चला था कि यहां की कंपोजिट शराब की दुकान पर शराब की बोतलों की सील तोड़कर उसमें पानी मिलाकर बेचा जाता है। इस शिकायत के मिलने पर आबकारी के अधिकारी दुकान पर पहुंचे। इसके बाद जब जांच की तो मामला सही पाया। फिर उसी वक्त तत्काल प्रभाव से दुकान के मालिक और सेल्समैन को सैदपुर पुलिस के हवाले कर दिया गया। पुलिस ने दोनों को गिरफ्तार कर लिया।

शराब की बोतलों पर बारकोड गलत थे

जांच के दौरान टीम ने अंग्रेजी शराब की बोतलों पर बियर के होलोग्राम और स्टीकर लगे पाए थे। आबकारी विभाग की टीम ने शराब की बोतलों की जांच की तो बोतलों की मानक कि तीव्रता 42। 8 की जगह 33। 6 थी। इसी तरह जांच के दौरान कुल 87 अंग्रेजी शराब की बोतलों पर बारकोड भी गलत पाया गए थे।

इस मामले में जिला आबकारी अधिकारी ने तत्काल प्रभाव से दुकान को निरस्त कर दिया था। इसके बाद इस मामले की सुनवाई के लिए जिला अधिकारी के पास पत्र भेजा था, जिस पर अब जिला अधिकारी ने भी सुनवाई करते हुए इस प्रकरण में शराब की दुकान को निरस्त कर दिया है।

स्टेशुदा भूमि पर दबंग भूमाफिया जबरन अवैध कब्जा करने की फिराक में,जिम्मेदार मौन

गोण्डा। जिले के थाना कौड़िया क्षेत्र के ग्राम कोटिया मदारा स्थित गाटा सं० 604 में एक गरीब पीड़ित की रोड किनारे की बेशकीमती भूमि पर दबंग भूमाफियाओं की नजर है और पीड़ित का आरोप है कि दबंग भूमाफिया लोग कानूनगो और कौड़िया पुलिस की मिलीभगत से स्टे आदेश को दरकिनार कर विवादित भूमि पर जबरन अवैध कब्जा करने की कोशिश कर रहे हैं। मामला ग्राम न्यायालय तहसील कर्नलगंज में विचाराधीन है, जहां न्यायालय ने भूमि की यथास्थिति बनाए रखने का स्थगनादेश जारी किया है। इसके बावजूद दबंग भूमि की नवैयत बदलने की फिराक में हैं। पीड़ित पिछले आठ महीनों से अपनी जमीन बचाने के लिए अधिकारियों के चक्कर काट रहा है,लेकिन कोई सुनवाई नहीं हो रही है।

पत्नी के थे तीन बॉयफ्रेंड, फिर भी पति ने किया माफ... दरियादिली का मिला ऐसा सिला, गंवा बैठा अपनी ही जान

आर्यावर्त संवाददाता

मथुरा। अवैध संबंधों का अंजाम कभी भी अच्छा नहीं होता। कहते हैं न कि इश्क और मुश्क छिपाए नहीं छिपता। उत्तर प्रदेश के मथुरा में एक पति को अपने पत्नी के अफेयर का पता चल गया। फिर भी उसने दरियादिली दिखाते हुए पत्नी को माफ कर दिया। लेकिन दोबारा वो उसे धोखा न दे, इसलिए बीवी पर थोड़ी सख्ती बरतना शुरू कर दिया। यानि उस पर हमेशा पति नजर रखता। पति शायद जानता नहीं था कि ऐसा करना उस पर ही भारी पड़ जाएगा।

पत्नी को पति की ये हरकतें पसंद नहीं आ रही थीं। उसकी सख्ती के कारण वो प्रेमी से भी नहीं मिल पा रही थी। इसलिए पत्नी ने प्रेमी के साथ मिलकर पति का ही काम तमाम कर डाला। शुक्रवार को पुलिस ने मृतक की पत्नी और प्रेमी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने हत्या में प्रयोग किया गया बांक, खून से सनी टी-शर्ट, मोबाइल समेत अहम सबूत बरामद किए हैं। पति की हत्या के इतर पुलिस को आरोपी महिला के ऐसे-ऐसे कांडों का पता चला है जो वाकई हैरान कर देने वाले हैं।

दिल दहला देने वाला ये मामला कोसीकलां गांव का है। पुलिस ने बताया- ऐंच गांव निवासी 27 वर्षीय गोविंद घर से शराब के नशे में निकला था। इसकी जानकारी गोविंद की पत्नी कविता ने अपने बॉयफ्रेंड गुंजार उर्फ गुलजार उर्फ भोले को दी। कविता ने ही बताया कि गोविंद शराब के नशे में धुत्त है। जब तक यह जिंदा रहेगा तब तक हम दोनों नहीं मिल सकते हैं। यदि चाहते हो कि आगे मुलाकात होती रहे तो गोविंद को आज ही रास्ते से हटा दो। यह जानकारी मिलने के बाद गुंजार बांक लेकर घर से निकला और रास्ते में सुनसान स्थान देखकर उसने गोविंद के गले पर बांक से प्रहार कर उसकी हत्या कर डाली। गुंजार ने गोविंद की गर्दन पर कई बार किए। इसके कारण गोविंद लहुलुहान हो गया। मरने से पहले उसने अपनी जान बचाने के लिए गुंजार से हाथापाई भी की, लेकिन वह अपनी जान बचाने में सफल नहीं हो पाया।

कई लोगों से अवैध संबंध

पुलिस जांच में इस बात का भी खुलासा हुआ है कि मृतक गोविंद की पत्नी कविता के गांव के गुंजार उर्फ गुलजार उर्फ भोले से ही अवैध संबंध नहीं थे। कविता के रिश्ते में देवर लगने वाले युवक से भी संबंध थे। इसी देवर ने उसे मोबाइल फोन दिया थे, जिससे वह गुंजार से बात करती थी। इससे पहले 2020 तक बरसाना के युवक से भी अवैध संबंध रहे। इसकी जानकारी गोविंद को लगी तो घर में खूब झगड़ा हुआ। मामला थाने तक पहुंचा, लेकिन कविता के माफी मांगने और समझौता होने के बाद के बाद मामला रफा दफा हो गया। इस बार गुलजार के बारे में पता चला तब भी पति ने उसे माफ तो किया पर उस पर सख्ती बरतना शुरू कर दिया था। फिलहाल मामले की जांच जारी है।

53 सालों में 25 बार बाढ़, इस बार भी गाजीपुर के 252 गांवों में अलर्ट; कैसे निपटेगा प्रशासन?

आर्यावर्त संवाददाता

गाजिपुर। गाजीपुर में 1971 से लेकर 2024 तक 53 सालों में 25 बार बाढ़ आ चुकी है। पिछले दो साल से यहां लगातार नदियों का जल स्तर चेतावनी बिंदु को पार कर जा रहा है। इस बार पहले से तैयार प्रशासन ने 252 गांवों को चिह्नित किया है, जहां आगामी दिनों में बाढ़ का खतरा है। इन गांवों को दो श्रेणियों में बांटा गया है। 128 गांवों को अति संवेदनशील और 124 को संवेदनशील श्रेणी में रखकर निगरानी की जा रही है।

जिले में गंगा के बढ़ाव से मुहम्मदाबाद और जमानिया तहसील में सबसे अधिक तबाही होती है। गाजीपुर जनपद गंगा किनारे बसा हुआ है। गंगा के साथ ही अन्य आठ नदियां भी गाजीपुर में बहती हैं, लेकिन सबसे ज्यादा बाढ़ का असर गंगा नदी के बढ़ते जल स्तर के बाद

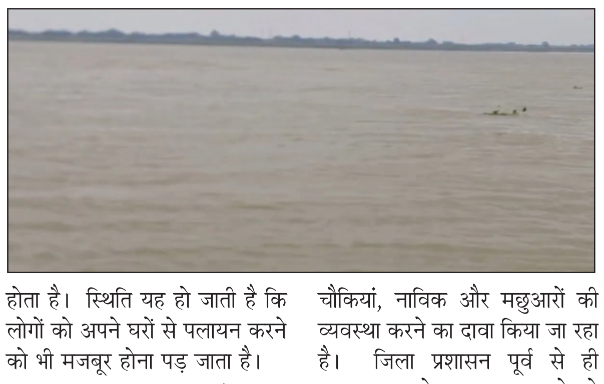

होता है। स्थिति यह हो जाती है कि लोगों को अपने घरों से पलायन करने को भी मजबूर होना पड़ जाता है।

जिला प्रशासन बाढ़ से पहले करता है तैयारी का दावा

हालांकि जिला प्रशासन बाढ़ से पहले ही बाढ़ राहत की तैयारी का दावा भी करता है। इस बार भी जिला प्रशासन के द्वारा बाढ़ राहत सामग्री के टेंडर के साथ ही बाढ़ राहत केंद्र, बाढ़ चौकियां, नाविक और मछुआरों की व्यवस्था करने का दावा किया जा रहा है। जिला प्रशासन पूर्व से ही व्यवस्था करते हुए जनपद को दो श्रेणियां में बांटता है, जिसमें 128 गांव अति संवेदनशील और 124 गांव संवेदनशील श्रेणी में आते हैं।

रेवतीपुर ब्लाक के गांव पहले होते हैं बाढ़ प्रभावित

इन्हीं को ध्यान में रखते हुए उनकी निगरानी की जाती है। जब बाढ़ आती है, तो सबसे ज्यादा प्रभावित मोहम्दाबाद और जमानिया तहसील के गांव होते हैं। गाजीपुर के रेवतीपुर ब्लाक के करीब 10 गांव सबसे पहले बाढ़ प्रभावित गांवों में शुमार हो जाते हैं। इसका कारण ये है कि गंगा जहां अपने सामान्य जलस्तर से थोड़ी भी बढ़ती है इन गांवों को अपने चपेट में ले लेती है। इसलिए जिला प्रशासन का इन गांवों पर विशेष फोकस रहता है।

गंगा का सामान्य जलस्तर 59.906 मीटर

गंगा के जलस्तर की बात करें तो सामान्य जलस्तर 59। 906 मीटर है, जबकि चेतावनी बिंदु 61। 550 मीटर है। वहीं खतरा बिंदु 63। 105 मीटर है। साल 2023 और 2024 में गंगा का जलस्तर चेतावनी बिंदु पर करते हुए 61। 570 मीटर पहुंच गया था। नदियों के निम्न स्तर तक जल का स्तर पहुंचने पर जिले के करीब 200 से ऊपर गांव प्रभावित होते हैं। वहीं मध्य जल स्तर पहुंचने पर 300 से ऊपर गांव और उच्च जल स्तर पहुंचने पर 400 से ऊपर गांव बाढ़ से प्रभावित हो जाते हैं।

2024 में गंगा खतरे के निशान को कर गई थी पार

गाजीपुर में साल 1971 से लेकर साल 2024 के जलस्तर की बात करें तो साल 1978 में 65। 220 मीटर, 1981 में 65। 125 मीटर, 1996 में 65। 80 मीटर, 2013 में 65। 240 मीटर, 2016 में 65। 040 मीटर के बाद साल 2023 और 2024 में गंगा ने खतरे का निशान पार करते हुए जनपद के ग्रामीण इलाकों में रहने वाले किसानों और पशुपालकों के साथ ही खेती को व्यापक रूप से प्रभावित किया था।

आगामी बाढ़ से निपटने के लिए पूरी तैयारी

अपर जिलाधिकारी और नोडल आपदा प्रबंधन दिनेश कुमार के अनुसार, आगामी बाढ़ से निपटने के लिए पूरी तैयारी कर ली गई है। शासन के निर्देश पर मॉक ड्रिल भी कर दिया गया है। इस बार के मॉक ड्रिल में रेलवे को भी जोड़ा गया था, क्योंकि बाढ़ के दौरान रेलवे ट्रैक बाधित हो जाता है, तो कैसे रेलवे ट्रैक को सही कर रेलवे को संचालन किया जाए। इसके साथ ही उन्होंने बताया कि तैयारी के क्रम में बाढ़ राहत केंद्र, शरणालय, बाढ़ चौकिया, प्रभावित इलाकों में लगाई जाने वाली नाव के साथ ही गोताखोर और अन्य व्यवस्थाओं की तैयारियां मुकम्मल कर ली गई हैं।

10 खोए मोबाइल फोन को बरामद कर आवेदकों को किया सुपुर्द

आर्यावर्त संवाददाता

बाराबंकी। थाना कोतवाली नगर पुलिस द्वारा CEIR पोर्टल के माध्यम से 10 अदद खोए मोबाइल को बरामद कर आवेदकों को सुपुर्द किया गया । आवेदकगण अशोक कुमार निवासी मो0पुर खाला, राम किशोर निवासी धौरहरा, दुर्गेश कुमार निवासी रामनगर, उमा देवी निवासी काशीराम कालोनी, नेहा श्रीवास्तव निवासी लखपेड़ाबाग, अतुल कुमार निवासी आवास विकास कालोनी, कैलाश चन्द्र वर्मा निवासी दीनदयाल नगर पैसार, विनोद कुमार निवासी जहांगीराबाद, राजेश कुमार निवासी अभय नगर, ओम प्रकाश निवासी कोतवाली नगर बाराबंकी द्वारा अपने-अपने मोबाइल फोन गुम हो जाने के सम्बन्ध में थाना कोतवाली नगर में CEIR (सेन्ट्रल इक्विपमेन्ट आईडेन्टिटी रिजस्टर) पोर्टल पर शिकायत दर्ज करायी थी। उक्त शिकायत पर कार्यवाही करते हुये थाना कोतवाली नगर पुलिस द्वारा बरामद कर सभी आवेदकों को सुपुर्द किया गया।

हर बात पर झगड़ता है पार्टनर? ये पांच ट्रिक्स करेंगे कमाल

अगर आप चाहते हैं कि आपके और पार्टनर के बीच प्यार बना रहे तो बात-बात की बहस को समझदारी से हैंडल करना सीखिए। यहां ऐसे पांच तरीके बताए जा रहे हैं, जिनसे आप ऐसी स्थिति को शांति से संभाल सकते हैं।

किसी भी रिश्ते में थोड़ा बहुत बहस होना सामान्य है, लेकिन जब बात-बात पर लड़ाई रोज का हिस्सा बन जाए तो ये रिश्ते की नींव को हिला सकता है। खासकर अगर कपल के बीच हर छोटी बात पर बहस होती हो तो आपको कुछ ठोस कदम उठाने की जरूरत है। रिश्ते में झगड़ा नहीं, समझदारी जरूरी है।

लेकिन अगर आपका पार्टनर हर छोटी बात पर बहस या गुस्सा करता है तो रिश्ता टूटने से पहले कुछ समझदारी भरे कदम उठाना जरूरी है। अगर आप चाहते हैं कि आपके और पार्टनर के बीच प्यार बना रहे तो बात-बात की बहस को समझदारी से हैंडल करना सीखिए।यहां ऐसे पांच तरीके बताए जा रहे हैं, जिनसे आप ऐसी स्थिति को शांति से संभाल सकते हैं।

सुनना सीखें, जवाब देना नहीं

अधिकतक लड़ाई या बहस इस कारण होती है कि लोग अपने पार्टनर को सुनते नहीं, बल्कि जवाब देते हैं। झगड़े के दौरान तुरंत प्रतिक्रिया देने के बजाय चुपचाप सुनना सीखें। कभी-कभी पार्टनर को सिर्फ अपनी भड़ास निकालनी होती है। उनकी बात सुनकर आप उनका गुस्सा शांत कर सकते हैं लेकिन आपकी तुरंत की गई प्रतिक्रिया विवाद को और बढ़ा सकती है।

भाषा पर नियंत्रण

लड़ाई-झगड़े के दौरान अक्सर लोग अमर्यादित हो जाते हैं और अपनी भाषा पर काबू नहीं रख पाते। तू-तड़ाक की भाषा की उपयोग न करके सम्मान के साथ अपनी बात रखें। इस बात का ध्यान रखें कि पार्टनर पर आरोप लगाने के बजाय मैं पर फोकस करें। जैसे लड़ाई में पार्टनर से ये कहना कि तुम हमेशा ही ऐसा करते हो, विवाद को बढ़ा सकता है। इसके बजाय कहें कि जब ऐसा होता है तो मुझे बुरा लगता है।

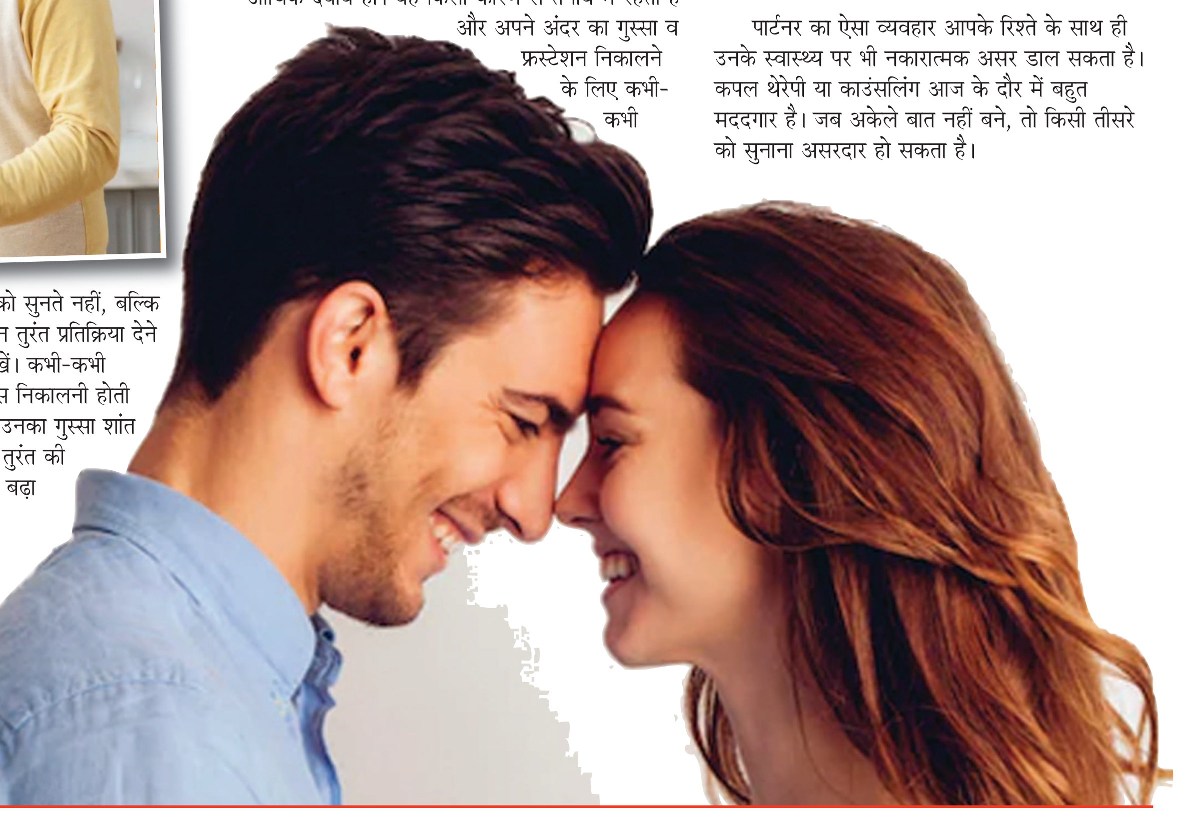

लड़ाई की जड़ पहचाने

अगर पार्टनर हर छोटी बात पर गुस्सा करे तो हो सकता है कि आपके पार्टनर पर दफ्तर, परिवार या आर्थिक दबाव हो। वह किसी कारण से तनाव में रहता है और अपने अंदर का गुस्सा व फ्रस्टेशन निकालने के लिए कभी-कभी लड़ाई केवल बहाने से करता है। इसलिए उनके इस बर्ताव का असली कारण जानने का प्रयास करें।

थोड़ी दूरी भी जरूरी है

हर बार बहस में उलझने की बजाय कुछ देर का भावनात्मक स्पेस दें। इससे टकराव कम होता है और सोचने का वक्त मिलता है। पार्टनर के गुस्सा होने या विवाद की स्थिति के बाद थोड़ी दूरी भी जरूरी है। उन्हें इमोशनल और फिजिकल स्पेस दें।

प्रोफेशनल हेल्प लेने में हिचकें नहीं

पार्टनर का ऐसा व्यवहार आपके रिश्ते के साथ ही उनके स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक असर डाल सकता है। कपल थेरेपी या काउंसलिंग आज के दौर में बहुत मददगार है। जब अकेले बात नहीं बने, तो किसी तीसरे को सुनाना असरदार हो सकता है।

मेकअप में कई तरीकों से इस्तेमाल किया जा सकता है फाउंडेशन

फाउंडेशन एक मेकअप प्रोडक्ट है, जो त्वचा के रंग को समान बनाने और उसे चमकदार दिखाने में मदद करता है। आमतौर पर फाउंडेशन का उपयोग चेहरे पर बेस बनाने के लिए किया जाता है, लेकिन इसके कई अन्य उपयोग भी हैं। इस लेख में हम आपको फाउंडेशन के कुछ अनोखे और असरदार उपयोगों के बारे में बताएंगे, जिससे आप अपने मेकअप रूटीन को और भी खास बना सकती हैं।

लिपस्टिक के बेस के रूप में करें इस्तेमाल

फाउंडेशन का इस्तेमाल लिपस्टिक के बेस के रूप में किया जा सकता है। अगर आपके पास लिपस्टिक है, जो हल्की या फिर बहुत ज्यादा रंगीन नहीं है तो उसे लगाने से पहले अपने होठों पर थोड़ा सा फाउंडेशन लगाएं। इससे लिपस्टिक का रंग और गहरा दिखेगा और वह पूरे दिन टिकेगी। इसके अलावा फाउंडेशन लगाने से आपके होंठों का रंग और भी गहरा और आकर्षक दिखेगा, जिससे आपका लुक और भी खास लगेगा।

आईशैडो को लंबे समय तक बनाए रखने के लिए करें उपयोग

फाउंडेशन का उपयोग आईशैडो के बेस के रूप में भी किया जा सकता है। अगर, आपकी आईशैडो जल्दी धुंधली हो जाती है या फिर फैल जाती है तो उसे लगाने से पहले अपनी पलकें पर थोड़ा सा फाउंडेशन लगाएं। इससे आईशैडो लंबे समय तक टिकी रहेगी और आपकी आंखें खूबसूरत दिखेंगी। इसके अलावा फाउंडेशन लगाने से आईशैडो का रंग भी ज्यादा गहरा और आकर्षक दिखेगा, जिससे आपका लुक और भी खास लगेगा।

दाग-धब्बों को छिपाने के लिए करें इस्तेमाल

फाउंडेशन का उपयोग दाग-धब्बों को छिपाने के लिए भी किया जा सकता है। अगर आपके चेहरे पर कोई दाग-धब्बा हो तो उसे छिपाने के लिए फाउंडेशन का उपयोग करें। इसके लिए थोड़ी मात्रा में फाउंडेशन लेकर उसे दाग-धब्बे पर अच्छे से लगाएं। इससे दाग-धब्बा धीरे-धीरे छिप जाएगा और आपकी त्वचा साफ-सुथरी दिखेगी। फाउंडेशन लगाने से न केवल दाग-धब्बे छिपेंगे बल्कि आपकी त्वचा का रंग भी समान लगेगा, जिससे आपका चेहरा और भी निखर जाएगा।

गालों पर रंगत लाने के लिए करें इस्तेमाल

फाउंडेशन का उपयोग गालों पर रंगत लाने के लिए भी किया जा सकता है। अगर आपके पास ब्लश नहीं है या फिर आपका ब्लश बहुत जल्दी खत्म हो जाता है तो थोड़ी मात्रा में फाउंडेशन लेकर अपनी गालों पर हल्के हाथों से लगाएं। इससे आपके गालों पर प्राकृतिक रंग आएगा और मेकअप भी लंबे समय तक बरकरार रहेगा। इसके अलावा फाउंडेशन लगाने से गालों का रंग और भी निखर जाएगा, जिससे आपका लुक और भी खास लगेगा।

कंसीलर के रूप में करें उपयोग

फाउंडेशन का उपयोग कंसीलर के रूप में भी किया जा सकता है। अगर आपके पास कंसीलर नहीं है या फिर वह आपके चेहरे के रंग से मेल नहीं खाती तो थोड़ी मात्रा में फाउंडेशन लेकर अपनी आंखों के नीचे, नाक के पास या फिर किसी भी जगह पर जहां कंसीलर की जरूरत हो वहां लगाएं। इसके बाद इसे अच्छी तरह मिलाएं ताकि कोई भी लाइन न दिखे और आपका चेहरा साफ-सुथरा दिखे।

मानसून में मंजिल से ज्यादा खूबसूरत नजर आते हैं दक्षिण भारत के ये ट्रेन रूट

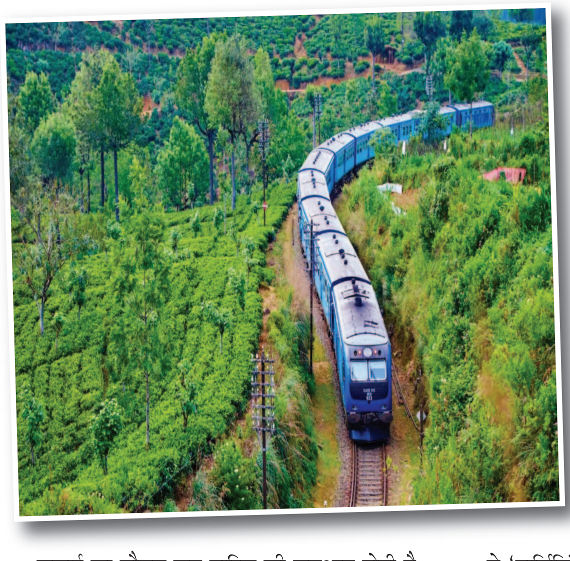

जुलाई का मौसम जब बारिश की शुरुआत होती है तो दक्षिण भारत देखने लायक होता है. मानसून के मौसम में दक्षिण भारत के ट्रेन रूट का सफर इतना शानदार होता है कि आपको इस सफर को खत्म करने का ही दिल नहीं करेगा। धुली-धुली पहाड़ियां, बादलों से ढकी घाटियां और झरनों की कलकल करती आवाज एक अलग ही एक्सपीरियंस देते हैं। मौसम का मजा दोगुना तब हो जाता है जब आप ट्रेन की खिड़की से बाहर झांकते हैं। जी हां, दक्षिण भारत के कुछ ट्रेन रूट्स ऐसे हैं जो इस मौसम में किसी फिल्मी फ्रेम से कम नहीं लगते।

समंदर के ऊपर से गुजरती पम्बन ब्रिज की ट्रेन हो या कोकण रेलवे की सुरंगों से होती रोमांचक यात्रा, हर रूट पर बारिश की बूंदें जैसे कुछ अलग ही दृश्य देती हैं। कभी घने जंगलों के बीच से रेल धीरे-धीरे आगे बढ़ती है, तो कभी चाय के बागानों और झीलों के पास से गुजरती हुई आंखों को ठंडक देती है। तो अगर आप भी इस मानसून दक्षिण भारत की यात्रा करना चाहते हैं तो हम आपके लिए 5 ऐसे ट्रेन रूट लाए हैं जो आपकी जर्नी को एक अलग ही अनुभव देंगे।

1- मंडपम से रामेश्वरम रेल मार्ग

ये भारत का सबसे रोमांचक और अनोखा रेलमार्ग है, जो पम्बन ब्रिज से होकर गुजरता है। पम्बन ब्रिज एक समुद्र के ऊपर बना पुल है, जहां से गुजरते हुए ऐसा लगता है जैसे ट्रेन समंदर के बीचों-बीच चल रही हो। मानसून के मौसम में इस रूट की खूबसूरती कई गुना बढ़ जाती है। समुद्र की ऊंची लहरें, ठंडी हवा और दूर-दूर तक फैला पानी मन मोह लेता है। बारिश की बूंदें जब ट्रेन की खिड़कियों पर गिरती हैं और आसमान बादलों से ढक जाता है, तो यह अनुभव और भी यादगार बन जाता है।

2- कन्याकुमारी से त्रिवेंद्रम

यह रेल मार्ग भारत के दक्षिणी छोर से शुरू होता है और केरल की राजधानी त्रिवेंद्रम तक जाता है। रास्ते में नारियल के पेड़, हरे-भरे खेत, झीलें और समुद्री किनारे दिखते हैं जो इसे बेहद खास बनाते हैं। मानसून में यह रूट हरियाली से भर जाता है और नजारे इतने सुंदर हो जाते हैं कि आप कैमरा उठाने से खुद को रोक नहीं पाएंगे। ट्रेन खिड़की से बाहर देखते हुए महसूस होता है जैसे आप किसी नेचुरल पैंटिंग की गैलरी से गुजर रहे हों।

3- जलपाईगुड़ी से दार्जिलिंग

ये 'दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे; का हिस्सा है और यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट के रूप में मान्यता प्राप्त है। ये छोटी सी ट्रेन पहाड़ों की ढलानों, संकरे मोड़ों, सुरंगों और चाय बागानों से गुजरती है। मानसून के मौसम में कोहरा जब इन पटरियों से लिपट जाता है और बारिश की बूंदें चाय के पत्तों पर गिरती हैं, तब दृश्य अद्भुत हो जाता है। ट्रेन की धीमी रफ्तार यात्रियों को हर पल को जीने और महसूस करने का मौका देती है।

4- मैसूर से हसन

ये रेल मार्ग कर्नाटक राज्य के भीतर फैला हुआ है, जो मैसूर से शुरू होकर हसन तक जाता है। रास्ते में आप हरियाली से भरे खेत, पुराने मंदिर, पहाड़ियों और छोटे गांवों को निहार सकते हैं। मानसून के समय यहां की मिट्टी की सोंधी खुशबू, ताजगी से लहराते धान के खेत और हरे पेड़ आंखों को सुकून देते हैं। ये यात्रा तेज नहीं बल्कि सुकूनदायक होती है, जहां शांति और प्रकृति दोनों आपका स्वागत करती हैं।

5। मेंगलुरु से गोवा

ये रूट कोंकण रेलवे के सबसे प्रसिद्ध मार्गों में से एक है, जो पश्चिमी घाट और समुद्र के किनारे-किनारे चलता है। मानसून में इस रूट पर सैकड़ों छोटे-बड़े झरने बहने लगते हैं, बादल पहाड़ियों को ढक लेते हैं और सुरंगों में से निकलती ट्रेन रोमांच पैदा करती है। यहां के पुल, घाटियां और प्राकृतिक दृश्य इतने सुंदर होते हैं कि हर मुसाफिर मंत्रमुग्ध हो जाता है। खास बात यह है कि इस सफर में हर मिनट नया नजारा देखने को मिलता है, जो एक अलग ही एक्सपीरियंस देता है।

सेहत की बात: क्या कॉफी पीने से मौत का खतरा कम होता है? रोजाना कितने कप कॉफी पीना सुरक्षित

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के अध्ययन में पाया गया कि दिन में 3 से 4 कप कॉफी पीने वाले लोगों में कई प्रकार की बीमारियों के कारण मृत्यु का खतरा 15% तक कम हो सकता है।

कॉफी दुनियाभर में लोगों की पसंदीदा पेय रही है। बड़ी संख्या में ऐसे भी लोग हैं जिनके दिन की शुरुआत कॉफी के साथ होती है और दिनभर में 3-4 कप कॉफी पी जाते हैं। कॉफी सेहत के लिए फायदेमंद है या हानिकारक, इसको लेकर लंबे समय से चर्चा होती रही है। इसके अध्ययनों के परिणाम भी मिले-जुले हैं। हालांकि कुछ शोध इस तरफ इशारा करते हैं कि कॉफी का अगर संयमित मात्रा में सेवन किया जाता है तो इससे मौत के खतरे को कम किया जा सकता है।

पिछले वर्षों में कई वैज्ञानिक अध्ययनों में दावा किया गया है कि कॉफी पीना सेहत को कई प्रकार से लाभ दे सकता है, इतना ही नहीं इससे गंभीर बीमारियों से मौत का खतरा भी कम हो सकता है।

कॉफी पीने से कम होता है असमय मृत्यु का खतरा

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के एक अध्ययन (2015) में पाया गया कि दिन में 3 से 4 कप कॉफी पीने वाले लोगों में कई प्रकार की बीमारियों के कारण असमय मृत्यु का खतरा 15% तक कम हो सकता है। शोधकर्ताओं के अनुसार, नियमित रूप से कॉफी पीने वाले लोगों में हृदय रोग, स्ट्रोक, टाइप-2 डायबिटीज और न्यूरोलॉजिकल बीमारियों से मृत्यु का जोखिम कम पाया गया।

अध्ययनकर्ताओं ने बताया कि पूरे दिन की खपत की तुलना में सुबह की कॉफी के सेवन के ज्यादा बेहतर परिणाम हो सकते हैं। इसके अलावा कॉफी का सेवन अगर दूध-चीनी के बिना किया जाए तो ये ज्यादा प्रभावी हो सकती है।

अध्ययनों में क्या पता चला?

शोधकर्ताओं ने पाया कि कॉफी में कई बायोएक्टिव यौगिक जैसे एंटीऑक्सीडेंट्स, कैफीन, क्लोरोजेनिक एसिड आदि होते हैं जो शरीर में इंफ्लेमेशन को कम करते हैं और मेटाबॉलिज्म को बेहतर बनाते हैं। कोशिकाओं को क्षति से बचाने में भी कॉफी पीने को फायदेमंद पाया गया है।

जर्नल ऑफ न्यूट्रिशन में प्रकाशित शोध की रिपोर्ट से पता चलता है कि लिवर, हार्ट, मेटाबॉलिज्म और मस्तिष्क सभी के लिए कॉफी फायदेमंद है पर इसके लाभ तभी मिलते हैं जब इसमें कोई एडिक्टिव जैसे दूध-चीनी न मिलाया जाए।

हृदय रोगों का कम होता है खतरा

शोधकर्ताओं ने बताया कि मध्यम मात्रा में कॉफी का सेवन, विशेष रूप से फिल्टर्ड कॉफी, हृदय रोग के जोखिमों को कम करने में सहायक है। यह संभवतः कॉफी में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट और अन्य लाभकारी यौगिकों की उपस्थिति के कारण होता है जो सूजन और ऑक्सीडेटिव तनाव स्ट्रेस को कम करते हैं। रक्त वाहिकाओं के कार्य को बेहतर बनाने में भी कॉफी के सेवन को लाभकारी पाया गया है। हालांकि अत्यधिक कॉफी का सेवन, विशेष रूप से अनफिल्टर्ड कॉफी का संभावित रूप से नकारात्मक असर हो सकता है।

डायबिटीज में लाभप्रद

अध्ययनों से संकेत मिलता है कि ब्लैक कॉफी पीने से मधुमेह के विकसित होने या फिर जिन लोगों को पहले से ही ये दिक्कत है उसे कंट्रोल करने में लाभ मिल सकता है। कॉफी की प्रतिक्रिया में शरीर अधिक इंसुलिन का उत्पादन करता है, जो रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने में सहायक है। हालांकि ध्यान रखें कि इसका संयमित मात्रा में ही सेवन किया जाना चाहिए। इसी तरह ब्लैक कॉफी लिवर की सफाई में मदद करती है और लिवर सिरोसिस, फैटी लिवर और हेपेटाइटिस जैसे रोगों से बचाव कर सकती है।

कितना कॉफी पीना सुरक्षित?

अमर उजाला से बातचीत में आहार विशेषज्ञ पारुल शर्मा ने बताया कि दिन में 2 से 4 कप कॉफी (200–400 mg कैफीन) को सामान्यतः सुरक्षित माना जाता है। इससे अधिक मात्रा में कैफीन नुकसानदायक हो सकता है। यहां ध्यान देने वाली बात ये है कि कैफीन सेंसिटिव लोगों में कॉफी बेचैनी, दिल की धड़कन बढ़ने जैसी समस्याएं पैदा कर सकती है, इसलिए इसकी मात्रा का ध्यान रखें।

कॉफी न केवल थकान दूर करती है, बल्कि जीवन की गुणवत्ता बढ़ा सकती है, बशर्ते कि इसका सेवन संतुलित मात्रा में हो। यह दिल, मस्तिष्क, लिवर और मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक असर डाल सकती है, हालांकि अधिक कैफीन कई प्रकार से नुकसानदायक हो सकती है।

इस तारीख तक मुफ्त में अपडेट करवा लें अपना आधार, वरना बाद में देने पड़ेंगे पैसे

क्या आपने अपने 10 साल पुराने आधार कार्ड को अपडेट करवा लिया है? अगर नहीं तो आपको इसकी आखिरी तारीख जान लेनी चाहिए, वरना बाद में आपको इसके लिए पैसे देने पड़ सकते हैं।

आपको चाहे बैंक से जुड़ा काम हो, स्कूल में बच्चे का दाखिला करवाना हो, किसी सरकारी या गैर-सरकारी योजना से जुड़ना हो, किसी कंपनी का सिम कार्ड लेना हो या किसी अन्य तरह का काम हो आदि। ऐसे में आपको एक दस्तावेज चाहिए होता है और वो है आपका आधार कार्ड।

दरअसल, भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण यानी यूआईडीएआई द्वारा भारत के नागरिकों को ये जारी किया जाता है। ऐसे में अगर आपका आधार कार्ड 10 साल पुराना हो गया है तो शायद आपने अब तक इसे अपडेट करवा लिया होगा? अगर आपने अब तक ऐसा नहीं किया है तो तुरंत करवा लें, क्योंकि बाद में आपको इसके लिए पैसे देने पड़ सकते हैं। तो चलिए जानते हैं आप कैसे अपने आधार कार्ड को कैसे अपडेट करवा सकते हैं। आगे आप इस बारे में जान सकते हैं...

आधार कार्ड को अपडेट करवाने का ये है तरीका :

स्टेप 1

अगर आपने अब तक अपने आधार कार्ड को अपडेट नहीं करवाया है तो करवा लें

इसके लिए आपको आपको सबसे पहले यूआईडीएआई की आधिकारिक वेबसाइट uidai.gov.in/en पर जाना है

फिर यहां पर आपको कई ऑप्शन दिखेंगे, लेकिन आपको 'अपडेट आधार' वाले ऑप्शन पर क्लिक करना है और फिर 'डॉक्यूमेंट अपडेट' वाले विकल्प पर क्लिक करें

स्टेप 2

इसके बाद आपको 'Click To Submit' वाले बटन पर क्लिक करना होता है

फिर आपको अपना 12 अंकों का आधार कार्ड नंबर भरना होता है

साथ ही स्क्रीन पर दिया हुआ कैप्चा कोड भी दर्ज करें

अब 'लॉगिन विद ओटीपी' वाले बटन पर क्लिक करें

इसके बाद आप देखेंगे कि आपके रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर (आधार से लिंक मोबाइल नंबर) पर एक ओटीपी आएगा

इस आए हुए ओटीपी को भरें और लॉगिन कर लें

स्टेप 3

इसके बाद आपको दस्तावेज अपडेट करने हैं जिसमें एक तो अपना पहचान पत्र और दूसरा अपना एड्रेस प्रूफ

ऐसे में पहले अपना पहचान पत्र और फिर एड्रेस प्रूफ अपलोड करें

फिर इन्हें सबमिट कर दें और आप देखेंगे कि आपकी रिक्वेस्ट पेंडिंग में चली गई है

अब अगर दस्तावेज सही हैं तो कुछ दिनों में ये सफलतापूर्वक अपडेट हो जाते हैं, वरना आपको दोबारा ये काम करना होता है।

अब ये है आखिरी तारीख

अगर आपका आधार कार्ड 10 साल पुराना हो गया है तो आपको यूआईडीएआई के मुताबिक, इसे अपडेट करवाना होगा। इसकी अब नई आखिरी तारीख 14 जून 2026 है यानी लगभग एक साल, लेकिन आप अपने इस काम को जल्द से जल्द करवा लें ताकि आप बाद में इस काम को भूल न जाएं।

फेक सिम कार्ड पर सरकार का बड़ा एक्शन, एआई 'शील्ड' से होगी धारकों की पहचान, करोड़ों कनेक्शन होंगे बंद

नई दिल्ली ,04 जुलाई । देश में फर्जी सिम कार्ड के जरिए हो रहे फ्रॉड पर लगाम लगाने के लिए दूरसंचार विभाग ने अपनी मुहिम तेज कर दी है। विभाग अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित 'एआई' तकनीक का इस्तेमाल करेगा, जो एक सुरक्षा कवच की तरह काम करेगी। इस नई प्रणाली से न केवल फर्जी दस्तावेजों के जरिए सिम खरीदना असंभव हो जाएगा, बल्कि मौजूदा यूजर्स के सिम कार्ड भी पहले से ज्यादा सुरक्षित होंगे।

दूरसंचार विभाग ने अपने आधिकारिक एक्स हैंडल पर यह जानकारी साझा करते हुए बताया, सिम फ्रॉड के खिलाफ भारत का फेक शील्ड। नकली या फर्जी दस्तावेजों से मोबाइल सिम के दुरुपयोग को रोकने के लिए, दूरसंचार विभाग ने ्रस्ञ्जक्र विकसित किया है, जो भारत के टेलीकॉम इकोसिस्टम को सुरक्षित, स्मार्ट और धोखाधड़ी-रोधी बना रहा है। विभाग ने इसे प्रौद्योगिकी के साथ-साथ विश्वास, पारदर्शिता और सुरक्षा की दिशा में एक बड़ा कदम बताया है।

विभाग के अनुसार, एक अत्याधुनिक टूल है जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और फेस रिकग्निशन यानी चेहरे की पहचान पर काम करता है। जब भी कोई नया सिम जारी होगा या पुराने को वेरिफाई किया जाएगा, तो यह टूल यूजर के चेहरे का मिलान उसके द्वारा दिए गए दस्तावेज की फोटो से करेगा। अगर किसी ने फर्जी दस्तावेज का इस्तेमाल किया है, तो ्रह्व इस गड़बड़ी को तुरंत पकड़ लेगा और वेरिफिकेशन फेल होने पर सिम कार्ड को ब्लॉक कर दिया जाएगा।

इस तकनीक के जरिए पूरे सब्सक्राइबर डेटाबेस की जांच की जाएगी और फर्जी पाए गए सभी कनेक्शनों को निष्क्रिय कर दिया जाएगा। सरकार का यह कदम बढ़ते साइबर अपराधों को रोकने में बेहद कारगर साबित होने की उम्मीद है।

गौरतलब है कि हाल के दिनों में सरकार ने साइबर अपराध में इस्तेमाल हो रहे 4.2 करोड़ से अधिक मोबाइल कनेक्शनों को ब्लॉक किया है। इन नंबरों का इस्तेमाल आम लोगों को कॉल या मैसेज के जरिए ठगने के लिए किया जा रहा था। 'संचार साथी' पोर्टल पर मिली शिकायतों के आधार पर यह बड़ी कार्रवाई की गई थी।

साइबर फ्रॉड पर सरकार का एक और बड़ा प्रहार, 22 लाख व्हाटसएप अकाउंट किए बैन

नई दिल्ली, एजेंसी। देश में बढ़ते साइबर अपराध और ऑनलाइन धोखाधड़ी पर नकेल कसते हुए दूरसंचार विभाग ने एक और बड़ी कार्रवाई की है। विभाग ने धोखाधड़ी वाले कॉल और मैसेज में इस्तेमाल हो रहे 22 लाख व्हाटसएप अकाउंट्स को ब्लॉक कर दिया है। यह कदम 'संचार साथी' पोर्टल पर आम नागरिकों द्वारा दर्ज की गई शिकायतों के आधार पर उठाया गया है।

दूरसंचार विभाग ने अपने आधिकारिक हैंडल के माध्यम से इस कार्रवाई की जानकारी साझा की। पोस्ट में लिखा गया, साइबर ठगी पर रोकथाम! 'संचार साथी' की मदद से 22 लाख साइबर अपराधों से जुड़े व्हाट्सएप अकाउंट्स को ब्लॉक किया गया है। फर्जी अकाउंट्स, धोखाधड़ी और साइबर ठगों पर रोक लगाने का यह कदम, डिजिटल भारत को सुरक्षित और भरोसेमंद बना रहा है।

यह कार्रवाई सरकार द्वारा साइबर अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे व्यापक अभियान का हिस्सा है। इससे पहले भी विभाग ने साइबर क्राइम में लिप्त 4.2 करोड़ से अधिक मोबाइल कनेक्शनों को बंद किया था। यही नहीं, धोखाधड़ी में इस्तेमाल हो रहे 27 लाख मोबाइल हैंडसेट के द्वरूश्वद्ध नंबर को भी ब्लैकलिस्ट कर उन्हें 'डब्बा' बना दिया गया है, जिससे वे किसी भी नेटवर्क पर काम करने लायक नहीं रहे हैं।

'संचार साथी' पोर्टल पर आप भी कर सकते हैं शिकायत

दूरसंचार विभाग ने आम जनता से अपील की है कि वे किसी भी तरह के संदिग्ध या धोखाधड़ी वाले कॉल और मैसेज की तुरंत 'संचार साथी' पोर्टल पर शिकायत करें। इससे अपराधियों पर कार्रवाई करने में मदद मिलती है।

बांग्लादेश में चुनाव से पहले हिंदुओं का अल्टीमेटम, संसद में आरक्षण दो नहीं तो वोट नहीं

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदू समुदाय ने साफ शब्दों में ऐलान कर दिया है कि जब तक उन्हें संसद में आरक्षित सीटें और अलग चुनाव व्यवस्था नहीं मिलती, तब तक वे किसी भी राष्ट्रीय चुनाव में हिस्सा नहीं लेंगे। ये चेतावनी शुक्रवार को ढाका स्थित नेशनल प्रेस क्लब के बाहर आयोजित मानव श्रृंखला और विरोध सभा के दौरान दी गई।

बांग्लादेश नेशनल हिंदू महासभा के नेताओं का कहना है कि हर राष्ट्रीय चुनाव हिंदी समुदाय के लिए किसी सजा से कम नहीं होता। आरक्षित सीटों और अलग चुनाव प्रणाली के अभाव में हिंदुओं की संसद में कोई उपस्थिति नहीं होती। इस कारण उन्हें वर्षों से उत्पीड़न झेलना पड़ रहा है। नेताओं ने कहा है कि अगर सरकार उनकी मांगों पर ध्यान नहीं देती तो हिंदू समुदाय मतदान केंद्रों का बहिष्कार और लोकतांत्रिक प्रक्रिया से खुद को अलग कर लेगा।

हमले, गिरफ्तारी और संपत्ति हड़पने के आरोप

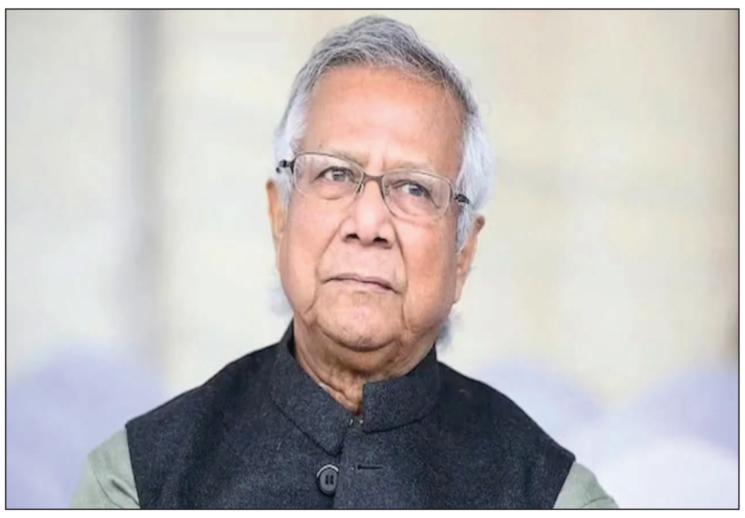

इस विरोध कार्यक्रम में हिंदू महासभा के अध्यक्ष दिनबंधु रॉय, कार्यकारी अध्यक्ष प्रदीप कुमार पाल, महासचिव गोविंद चंद्र प्रमाणिक और संगठन के अन्य वरिष्ठ नेता शामिल रहे।

विरोध सभा में वक्ताओं ने लालमोनिरहाट में परेश चंद्र शील और विष्णुपद शील पर धर्म का अपमान करने के आरोप में हुई गिरफ्तारी की निंदा की। उन्होंने इसे झूठे मुकदमे बताते हुए हिंदुओं पर बढ़ते अत्याचार का उदाहरण कहा। सभा में मंदिरों और मूर्तियों की तोड़फोड़, हिंदू घरों पर हमले, महिलाओं के साथ हिंसा, जमीन हड़पने और जबरन धर्मांतरण की घटनाओं का भी विरोध हुआ।

"हमारी जमीन, हमारे मंदिर—सब छीना गया"

वक्ताओं ने आरोप लगाया कि अब तक करीब 26 लाख एकड़ हिंदू समुदाय की संपत्ति 'दुश्मन संपत्ति कानून' के तहत जब्त की जा चुकी है। ढाका में कई मंदिरों और देवता से जुड़ी संपत्तियों को भी अवैध तरीके से कब्जा कर लिया गया है। हिंदू महासभा के नेताओं ने कहा कि बांग्लादेश की आजादी के बाद लोगों को उम्मीद थी कि सभी धर्मों को समान अधिकार मिलेंगे, लेकिन सच्चाई यह है कि प्रशासनिक ढांचे से लेकर संवैधानिक सुधार तक कहीं भी हिंदू समुदाय की भागीदारी नहीं है। यहां तक कि संवैधानिक संशोधनों में भी उनकी राय नहीं ली जाती।

इजराइली जासूस नहीं मिले तो ईरान ने बलूचों पर उतारा गुस्सा, महिला की मौत 12 घायल

तेहरान। इजराइल के साथ 12 दिनों की जंग के बाद ईरान में जासूसों की धड़पकड़ तेजी से जारी है। इस बीच खबर है कि ईरान की इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (IRGC) ने इजराइली जासूसों की तलाश के नाम पर ईरान के ही एक गांव में धावा बोल दिया।

दक्षिण-पूर्वी ईरान के सिस्तान-बालूचिस्तान प्रांत के गोनिच गांव में हुए इस हमले में एक 40 वर्षीय महिला की मौत हो गई जबकि 12 लोग घायल हो गए। घायलों में महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं। मानवाधिकार संगठन हालवश के मुताबिक ये कार्रवाई बेहद बर्बर थी। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि हमले के दौरान एक 21 साल की गर्भवती महिला को IRGC सैनिकों ने लात मारी, जिससे उसका गर्भपात हो गया। गांव वालों और चश्मदीदों के अनुसार, हमला अचानक हुआ और

IRGC ने ड्रोन और भारी सैन्य वाहनों का इस्तेमाल किया। गांव के अधिकतर लोग बलूच समुदाय से हैं, जो पहले से ही ईरानी सरकार की नीतियों से नाराज चल रहे हैं। IRGC का कहना है कि उन्हें इलाके में पांच इजराइली जासूसों की मौजूदगी की सूचना थी, जो मोसाद से जुड़े बताए जा रहे हैं। लेकिन IRGC के अपने ही मीडिया हाउस 'तस्नीम' की इस रिपोर्ट पर सवाल खड़े हो रहे हैं क्योंकि न तो किसी संदिग्ध की तस्वीर दिखाई गई, न नाम बताए गए और न ही गिरफ्तारी की कोई पुष्टि।

ये कोई पहला मौका नहीं है जब बलूच समुदाय को निशाना बनाया गया हो। ईरान में अल्पसंख्यक बलूच लंबे समय से हाशिए पर हैं। न विकास, न अधिकार और ऊपर से बार-बार का सैन्य दमन। ताजा घटना ने एक बार फिर दिखा।दिया है कि IRGC जब चाहे जहां चाहे, आम नागरिकों को सुरक्षा खतरा बताकर उन पर कार्रवाई कर सकती है।

"जासूस तो बहाना है, असली मकसद दबाना है"

मानवाधिकार संगठनों का आरोप है कि जासूसों की मौजूदगी का दावा एक बहाना है, असल में यह हमला बलूच नागरिकों की आवाज दबाने के लिए किया गया। संगठन ने अंतरराष्ट्रीय मंचों से अपील की है कि गोनिच गांव में हुई इस कार्रवाई की स्वतंत्र जांच कराई जाए और ईरान के भीतर मानवाधिकार हनन की घटनाओं पर नजर रखी जाए।

अमेरिका में पैर पड़ते ही खूंखार हो जाते हैं नेतन्याहू, सबूत के लिए ये नाम हैं काफी

वॉशिंगटन, एजेंसी। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू जब भी अमेरिका दौरे पर जाते हैं, उनके दुश्मनों की सांसें थमने लगती हैं। वजह? उनके दौरे अक्सर इजराइल के दुश्मनों पर घातक हमलों के साथ जुड़े रहे हैं। अब नेतन्याहू अगले हफ्ते फिर अमेरिका जाने वाले हैं, जहां उनकी मुलाकात राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से होने वाली है।

ये तीसरा मौका होगा जब नेतन्याहू बीते छह महीनों में अमेरिका जा रहे हैं। और पिछली बार की तरह इस बार भी चर्चा है कि उनके दौरे के साथ कोई बड़ा दुश्मना मारा जा सकता है। खासकर तब, जब अमेरिका और इजराइल दोनों हमास के साथ सीजफायर की कोशिशें कर रहे हैं। ये कोई संयोग नहीं लगता कि नेतन्याहू के अमेरिकी दौरों के दौरान इजराइल के दुश्मन मारे गए हों। मिसाल के तौर पर सितंबर 2024 को याद कीजिए। नेतन्याहू UN महासभा को संबोधित करने न्यूयॉर्क पहुंचे थे। ठीक उसी वक्त बेरुत में हिजबुल्लाह नेता हसन नसरल्लाह को मार गिराया गया। फिर जुलाई 2024 में जब उन्होंने अमेरिकी कांग्रेस को संबोधित किया, तो कुछ ही दिनों में ईरान की राजधानी तेहरान में हमास नेता इस्माइल हनिया को निशाना बनाकर खत्म कर दिया गया। अब नेतन्याहू फिर अमेरिका आ रहे हैं, तो सवाल है कि इस बार किसकी बारी है?

इजराइल के डिफेंस मिनिस्टर इसराइल कात्ज ने हाल ही में दोहा (कतर) में मौजूद हमास नेता खालिल अल-हैया को सीधे धमकी दी थी कि वे अगला निशाना हो सकते हैं। साथ ही गाजा स्थित सैन्य कमांडर इज्ज अल-दीन अल-हद्दाद का नाम भी सामने आया।

अमेरिका की तकनीक से लैस हैं रूस के हथियार? रिपोर्ट में हुआ चौंकाने वाला खुलासा

वॉशिंगटन, एजेंसी। रूस और यूक्रेन के बीच जारी युद्ध को तीन साल हो चुके हैं, और अमेरिका समेत पश्चिमी देशों ने रूस पर भारी पाबंदियां लगा रखी हैं। इसके बावजूद एक नई रिपोर्ट ने दुनिया को हैरान कर दिया है। ये रिपोर्ट इंटरनेशन पार्टनरशिप फॉर ह्यूमन राइट्स (IPHR), इंडिपेंडेंट एंटी करप्शन कमिशन (NAKO) और मीडिया संगठन हंटरबूक ने मिलकर तैयार की है।

रिपोर्ट में दावा किया गया है कि रूसी फाइटर जेट्स और हथियारों में आज भी अमेरिकी कंपनियों के बनाए पुर्जे इस्तेमाल हो रहे हैं। वो भी ऐसे रास्तों से जिन पर किसी का ध्यान तक नहीं जाता। रिपोर्ट से इस बात का खुलासा हुआ है कि कैसे ये पार्ट्स तीसरे देशों के जरिए रूस तक पहुंच रहे हैं। तो कैसे पार की गईं ये पाबंदियों की दीवारें? कौन हैं इस छुपे सप्लाई रूट के खिलाड़ी?

पाबंदियों को चकमा देते हुए पहुंचते हैं अमेरिकी पुर्जे

यूक्रेन पर हमले के बाद अमेरिका और उसके सहयोगी देशों ने रूस पर व्यापारिक और तकनीकी पाबंदियों की झड़ी लगा दी थी। मकसद था रूस की युद्ध-क्षमता को कमजोर करना। लेकिन इस रिपोर्ट में दावा किया गया है कि रूस ने 'इंटरमीडिएट ट्रेड रूट्स' यानी तीसरे देशों के जरिए पश्चिमी तकनीक हासिल करनी जारी रखी। यही वजह है कि रूस के फाइटर जेट्स और मिसाइल सिस्टम में अब भी अमेरिकी कंपनियों के इलेक्ट्रॉनिक कंपोनेंट्स मिल रहे हैं।

तीन संस्थाओं की संयुक्त रिपोर्ट से खुलासा

ये रिपोर्ट इंटरनेशन पार्टनरशिप फॉर ह्यूमन राइट्स (IPHR), इंडिपेंडेंट एंटी करप्शन कमिशन (NAKO) और मीडिया संगठन हंटरबूक ने मिलकर तैयार की है। रिपोर्ट में ये भी साफ किया गया है कि इन अमेरिकी कंपनियों की ओर से जानबूझकर कोई गैकानूनी काम नहीं किया गया है। ये पुर्जे अक्सर कई हाथों और देशों से गुजरते हुए रूस पहुंचते हैं जिससे कंपनियों को खुद पता नहीं होता कि उनका सामान आखिर कहां जा रहा है।

ग्लोबल सप्लाई चेन का गड़बड़झाला

आज के दौर में वैश्विक सप्लाई चेन इतनी जटिल और फैली हुई है कि यह पता लगाना लगभग नामुमकिन हो जाता है कि एक छोटा सा चिप या सर्किट आखिरकार किसके हथियार में लगेगा। रिपोर्ट में कहा गया है कि रूस ने कई छोटे एशियाई और मध्य एशियाई देशों के जरिए इन पुर्जों को मंगवाने का नेटवर्क बना लिया है। जिससे अमेरिकी पाबंदियों का सीधे उल्लंघन तो नहीं होता, लेकिन मकसद वहीं पूरा हो जाता है।

उद्धव ठाकरे के सामने राज ठाकरे का बड़ा बयान, 'सीएम देवेंद्र फडणवीस ने वह कर दिखाया जो बालासाहेब ठाकरे...'

मुंबई, एजेंसी। मुंबई में आयोजित एक संयुक्त रैली में शिवसेना (UBT) प्रमुख उद्धव ठाकरे और महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (MNS) अध्यक्ष राज ठाकरे दो दशकों बाद एक साथ मंच पर नजर आए। इस भावनात्मक क्षण में दोनों भाइयों ने एक-दूसरे को गले लगाकर बधाई दी, जिससे मंच पर मौजूद समर्थकों में उत्साह की लहर दौड़ गई।

इस कार्यक्रम की पृष्ठभूमि महाराष्ट्र सरकार द्वारा हिंदी को तीसरी भाषा के रूप में लागू करने के फैसले को रद्द किए जाने के बाद बनी, जिसने प्रदेश में भाषा को लेकर राजनीतिक बहस को फिर से गरमा दिया।

राज ठाकरे ने अपने संबोधन में कहा, "मैंने अपने एक इंटरव्यू में कहा था कि मेरा महाराष्ट्र किसी भी राजनीति और लड़ाई से बड़ा है। आज 20 साल बाद मैं और उद्धव एक साथ आए हैं। जो बालासाहेब नहीं कर पाए, वो देवेंद्र फडणवीस ने कर दिखाया। हम दोनों को साथ लाने का काम।"

भाषा को जनता पर थोपना उचित नहीं- राज ठाकरे

राज ने कहा कि वह हिंदी भाषा के खिलाफ नहीं हैं, लेकिन किसी भी भाषा को जनता पर थोपना उचित नहीं। उन्होंने जोर देते हुए कहा, "महाराष्ट्र जब एकजुट होता है तो उसका असर पूरे देश में दिखता है। किसे कौन सी भाषा सीखनी चाहिए, यह लोगों का अधिकार है, उसे जबरन थोपा नहीं जा सकता। सत्ता के बल पर लिए गए फैसले लोकतांत्रिक भावना के खिलाफ हैं।"

उन्होंने आगे बताया कि उन्होंने सरकार को तीन बार पत्र लिखा और मंत्री उनसे मिलने भी आए, पर उन्होंने दो टूक शब्दों में कह दिया– "मैं आपकी बात सुन लूंगा, लेकिन मानूंगा नहीं।" उन्होंने आगे कहा, ₹अगर कोई महाराष्ट्र के तरफ आंख उठा कर देखेगा को उनको हमारा सामना करना पड़ेगा, बीस साल बाद हम साथ आए हैं। दिख रहे हैं। इसकी जरूरी नहीं थी। बीजेपी कहां से लेकर आ गई। किसी को पूछे बीना सिर्फ और सिर्फ सत्ता के बल पर ऐसा फैसला लेना सही नहीं था।'

ठाकरे बंधुओं का यह ऐतिहासिक मिलन आने वाले नगर निगम चुनावों से पहले एक बड़ा राजनीतिक संकेत माना जा रहा है। भाषा, स्वाभिमान और महाराष्ट्र की अस्मिता जैसे मुद्दों पर दोनों नेताओं की एकता न केवल शिवसेना और MNS के कार्यकर्ताओं में जोश भर सकती है, बल्कि विपक्षी दलों के समीकरण भी बदल सकती है। अब सभी की निगाहें इस बात पर टिकी हैं कि क्या यह एकता केवल मंच तक सीमित रहेगी या आगामी चुनावी रणनीति में भी दिखाई देगी।

संजय राउत का बड़ा बयान

शिवसेना यूबीटी सांसद संजय राउत का कहना है कि हमारे लिए यह किसी त्यौहार से कम नहीं है। इतने सालों के बाद, राजनीति के कारण अलग हुए हमारे दो पारिवारिक सदस्य और हमारे शीर्ष नेता उद्धव ठाकरे और राज ठाकरे एक साथ आएंगे और एक ही मंच साझा करेंगे। यह वह क्षण है जिसका हम लंबे समय से इंतजार कर रहे थे। हमारा हमेशा से मानना रहा है कि अगर वे एक साथ आते हैं, तो हम महाराष्ट्र के हितों के खिलाफ काम करने वालों के खिलाफ मजबूती से खड़े हो सकते हैं। उनकी एकता में राज्य के लिए एक नया रास्ता तय करने और राज्य की राजनीति को नई दिशा देने की क्षमता है।

भगवान जगन्नाथ की 'बहुड़ा यात्रा' शुरू, सुरक्षा के कड़े इंतजाम ; भक्तों का सैलाब

पुरी। भगवान जगन्नाथ की 'बहुड़ा' यात्रा या वापसी रथ उत्सव शनिवार को औपचारिक 'पहांडी' रस्म के साथ शुरू हुआ। इस दौरान मूर्तियों को श्री गुंडिचा मंदिर से सारधाबली में खड़े रथों तक औपचारिक जुलूस के रूप में ले जाया गया।अधिकारियों ने बताया कि बाहुड़ा यात्रा के लिए सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। हालांकि 'पहांडी' रस्म दोपहर 12 बजे शुरू होने वाली थी, लेकिन यह सुबह 10.30 बजे शुरू हुई, जिसके दौरान त्रिदेवों- भगवान बलभद्र, देवी सुभद्रा और भगवान जगन्नाथ को एक-एक करके रथों तक ले जाया गया। भव्य रथों - तलध्वज (बलभद्र), दर्पदलन (सुभद्रा) और नंदीघोष (जगन्नाथ) को श्रद्धालु श्री गुंडिचा मंदिर से भगवान जगन्नाथ के मुख्य स्थान, 12वीं शताब्दी के मंदिर तक खींचकर ले जाएंगे, जिसकी दूरी लगभग 2.6 किलोमीटर है।

गौरतलब है कि 27 जून को भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा शुरू हुई थी। इसके दो दिन बाद 29 जून को गुंडिचा मंदिर के पास भगदड़ मच गई थी, जिसमें तीन लोगों की मौत हुई थी और करीब 50 लोग घायल हो गए थे। इस भगदड़ को ध्यान में रखते हुए बहुड़ा यात्रा के लिए सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी और ओडिशा विधानसभा में विपक्ष के नेता नवीन पटनायक ने बहुदा यात्रा के शुभ अवसर पर लोगों को शुभकामनाएं दीं।

मंगला आरती और मैलम जैसे अनुष्ठान किए गए

घंटों और शंखों और झांझों की ध्वनि के बीच सबसे पहले चक्रराज सुदर्शन को श्री गुंडिचा मंदिर से बाहर निकाला गया और देवी सुभद्रा के 'दर्पदलन' रथ पर बैठाया गया। श्री सुदर्शन भगवान विष्णु का चक्र अस्त्र है, जिनकी पूजा पुरी में भगवान जगन्नाथ के रूप में की जाती है। श्री सुदर्शन के पीछे भगवान जगन्नाथ के बड़े भाई भगवान बलभद्र थे। भगवान जगन्नाथ की बहन देवी सुभद्रा को सेवकों द्वारा 'सूर्य पहांडी' नामक विशेष जुलूस में उनके 'दर्पदलन' रथ पर लाया गया। अंत में, भगवान जगन्नाथ को उनके रथ नंदीघोष पर लाया गया। पहांडी से पहले, मंदिर के गर्भगृह से पीठासीन देवताओं के बाहर आने से पहले 'मंगला आरती' और 'मैलम' जैसे कई पारंपरिक अनुष्ठान किए गए।

पुलिस के 6000 और सीएपीएफ के 800 जवान तैनात

एक अधिकारी के अनुसार, मंदिर शहर में पुलिस के 6,000 और केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सीएपीएफ) के 800 जवान तैनात किए गए हैं। ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि भगदड़ जैसी कोई घटना दोबारा न हो। उन्होंने बताया कि मौसम अनुकूल होने के कारण बड़ी संख्या में लोगों के आने की उम्मीद है, जिसके चलते विशेष यातायात व्यवस्था भी की गई है।

275 सीसीटीवी कैमरे भीड़ और शरारती तत्वों पर रखेंगे नजर

अधिकारी ने बताया कि भीड़ और शरारती तत्वों पर नजर रखने के लिए 275 से अधिक एआई तकनीक से लैस सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। डीजीपी वाईबी खुरानिया खुद वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों के साथ तटीय शहर पुरी में मौजूद हैं, ताकि बहुड़ा यात्रा को सुरक्षित और व्यवस्थित ढंग से संपन्न कराया जा सके। खुरानिया ने संवाददाताओं से कहा, 'हमने त्योहार को सुचारू रूप से संपन्न कराने के लिए सभी संभव उपाय किए हैं।'

पैपराजी कल्चर को लेकर रितेश ने दी प्रतिक्रिया, बोले- 'हमें इनसे निपटना सीखना होगा'

शेफाली जरीवाला की मौत के बाद एक बार फिर पैपराजी कल्चर सेलेब्स के निशाने पर है। वरुण धवन समेत कई सेलेब्स पैपराजी कल्चर पर उंगली उठा चुके हैं। उनका कहना है कि पैपराजी को भी थोड़ी संवेदनाएं दिखानी चाहिए। अब इस बीच अभिनेता रितेश देशमुख ने पैपराजी कल्चर को लेकर बात की और उन्होंने बताया कि कैसे उन्होंने अपने बच्चों को पैपराजी के सामने आने और उनसे बात करने के बारे में बताया है।

मैंने बच्चों को बताय फोटो खिंचवाना सम्मान की बात

हिंदुस्तान टाइम्स के साथ बातचीत के दौरान रितेश ने कहा कि हमें पैपराजी से निपटना सीखना होगा। अभिनेता ने कहा, "हमारे बच्चे खेल खेलते हैं और वे रोजाना वहां जाते हैं। कभी-कभी, जब हम उनके मैच देखते हैं, तो कुछ पैपराजी हमारी तस्वीर खींच लेते हैं, इसलिए हमें इससे निपटना सीखना होगा। आपको बच्चों से बात करनी होगी और सुनिश्चित करना होगा कि वे खुद को हकदार न समझें। मैं अपने बेटों से बस यही कहता हूं कि फोटो खिंचवाना सम्मान की बात है। जब पैपराजी तस्वीरें मांगते हैं, तो आप उन्हें क्लिक करने के लिए धन्यवाद देते हैं और आगे बढ़ जाते हैं।"

सेलेब्रिटी किड्स के मीडिय के सामने आने का कोई नियम नहीं है

सेलेब्रिटी पेरेंट्स को अपने बच्चों के मीडिया के सामने किस तरह से लाना चाहिए या क्या करना चाहिए। इस पर बात करते हुए रितेश देशमुख ने कहा कि सेलिब्रिटी माता-पिता को अपने बच्चों को मीडिया के सामने लाने के लिए किस तरह का रवैया अपनाना चाहिए, इस बारे में कोई खास नियम नहीं है। सिर्फ इसलिए कि एक व्यक्ति कुछ करता है, इसका मतलब यह नहीं है कि दूसरे भी वैसा ही करें। मुझे लगता है कि माता-पिता जानते हैं कि उनके बच्चों के लिए क्या सबसे अच्छा है। अगर लोगों को लगता है कि वे नहीं चाहते कि उनके बच्चे मीडिया में आएं, तो इसका सम्मान किया जाना चाहिए।

हाउसफुल 5 में नजर आए थे रितेश

वर्क फ्रंट की बात करें तो रितेश देशमुख हाल ही में कॉमेडी फिल्म 'हाउसफुल 5' में नजर आए थे। इसमें उनके साथ अक्षय कुमार और अभिषेक बच्चन समेत एक बड़ी स्टारकास्ट नजर आई थी। इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन किया था। इसके अलावा रितेश इसी साल रिलीज हुई 'रेड 2' में भी बतौर विलेन नजर आए थे। इस फिल्म में अजय देवगन और वाणी कपूर भी प्रमुख भूमिकाओं में थे।

'साईं पल्लवी मेरी तरह सीता नहीं बन सकतीं', रणबीर की रामायण पर बोलीं दीपिका चिखलिया

रामानंद सागर की 'रामायण' में सीता का किरदार निभा चुकीं दीपिका चिखलिया आज भी करोड़ों लोगों के लिए 'सीता माता' हैं। हाल ही में जब नितेश तिवारी की नई फिल्म 'रामायण' का टीजर सामने आया, तो उन्होंने अमर उजाला डिजिटल से बातचीत में इस पर राय रखी।

रामानंद सागर की 'रामायण' में सीता का किरदार निभा चुकीं दीपिका चिखलिया आज भी करोड़ों लोगों के लिए 'सीता माता' हैं। हाल ही में जब नितेश तिवारी की नई फिल्म 'रामायण' का टीजर सामने आया, तो उन्होंने अमर उजाला डिजिटल से बातचीत में इस पर राय रखी। उन्होंने फिल्म के विजुअल्स की तारीफ की, लेकिन साथ ही इस बात की चिंता भी जताई कि कहीं रामायण के असली इमोशंस बड़े बजट और तकनीक के बीच खो न जाए।

'टीजर भव्य है, पर आत्मा दिखाई नहीं दी'

दीपिका चिखलिया ने कहा, 'ईमानदारी से कहूं तो मुझे विजुअल इफेक्ट्स अच्छे लगे। लेकिन मेरी अपनी राय है कि रामायण सिर्फ ग्राफिक्स या टेक्नोलॉजी नहीं है। ये एक भावनाओं की कहानी है। टीजर देखकर कहानी का अंदाजा नहीं लगा, लेकिन इतना जरूर लगा कि ये काफी मॉडर्न लग रहा है। लाइटिंग, रंगों का टोन... सब थोड़ा नया जमाने जैसा महसूस हुआ'। दीपिका ने कहा कि जब उन्होंने 'रामायण' की थी, तब तकनीक बहुत सीमित थी, लेकिन लोगों ने उस शो से दिल से जुड़ाव बनाया था। अब जो टीजर देखा, उसमें भव्यता है, लेकिन मैं इंतजार कर रही हूं यह देखने का कि क्या उसमें वो इमोशंस हैं या नहीं।'

'रणबीर को देखा...और याद आ गए अरुण गोविल'

जब दीपिका से पूछा गया कि रणबीर कपूर राम के रूप में कैसे लगे, तो उन्होंने कहा, 'जब मैंने रणबीर को राम के रूप में देखा, तो मुझे तुरंत अरुण गोविल की याद आ गई। मैं शायद कभी राम की जगह किसी और को देख ही नहीं पाऊंगी। वे 35-40 साल से हमारे लिए राम हैं'।

'साई पल्लवी मुझसे अलग होंगी, पर सीता को अच्छी तरह निभाएंगी'

सीता के रोल में साई पल्लवी के चयन पर दीपिका ने कहा, 'वो एक बहुत अच्छी एक्ट्रेस हैं। मैंने उनकी मलयालम फिल्में देखी हैं। उनकी एक्टिंग बहुत नैचुरल होती है। मुझे पूरा भरोसा है कि वे सीता का किरदार अच्छे से निभाएंगी। हां, वो मुझसे अलग होंगी, लेकिन वो अपना काम अच्छे से करेंगी'।

'पहले से पहचाने चेहरे को भगवान मानना आसान नहीं होता'

दीपिका ने बताया कि जब उन्होंने 'रामायण' में काम किया था, तब लोगों ने उन्हें सच में देवी के रूप में देखना शुरू कर दिया था। उन्होंने कहा, 'आज भी लोग मुझे और अरुण जी को राम-सीता ही मानते हैं। फर्क बस इतना है कि जब हम आए थे, तब हम बिल्कुल नए चेहरे थे। लोग हमें उसी रूप में स्वीकार कर पाए। लेकिन अब के कलाकार पहले से कई किरदार कर चुके हैं, इसलिए लोगों के लिए उन्हें भगवान के रूप में स्वीकार करना थोड़ा मुश्किल हो सकता है।'

'राम जी को दशरथ के रूप में देखना आसान नहीं'

नई फिल्म में अरुण गोविल दशरथ की भूमिका निभा रहे हैं। इस पर दीपिका ने भावुक होकर कहा, 'जब मैंने सोशल मीडिया पर उन्हें दशरथ के रूप में देखा, तो दिल से यही निकला... ये तो राम जी हैं। उनके चेहरे पर वही शांति, वही छवि है। मुझे उन्हें दशरथ के रूप में देखना थोड़ा मुश्किल लगा'।

'रामायण में खुद को सिर्फ सीता के रूप में ही देख सकती हूं'

दीपिका ने यह भी बताया कि उन्हें इस फिल्म के लिए किसी ने संपर्क नहीं किया। साथ ही उन्होंने खुद को किसी और किरदार में देखने से इनकार किया। एक्ट्रेस ने कहा, 'मैंने हमेशा कहा है कि मैं सिर्फ सीता हूं। मैं खुद को किसी और रूप में रामायण में नहीं देख सकती। अगर महाभारत जैसा कुछ होता, तो सोचती। लेकिन रामायण में नहीं'।

'रामायण को सिर्फ देखा नहीं, महसूस किया जाता है'

फिल्म के मेगा बजट (करीब 850 करोड़ रुपये) पर दीपिका ने कहा, 'रामायण सिर्फ एक कहानी नहीं है। यह रिश्तों और भक्ति की गहराई है। इसे दिखाने के लिए पैसे नहीं, भावना चाहिए। रामायण को महसूस करना होता है, सिर्फ देखना नहीं होता। मुझे बस ये डर है कि इतने बड़े बजट और भारी विजुअल्स में इमोशंस पीछे न रह जाएं। असली रामायण वही है, जिसमें भक्ति और भावनाएं हों।'

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक प्रभात पांडेय द्वारा साई ऑफसेट प्रिंटर्स 40, वासुदेव भवन कैसरबाग, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 2/74, विक्रांत खंड, गोमती नगर, लखनऊ से प्रकाशित। शाखा कार्यालय: S-15/109, सेक्टर -15, इंदिरा नगर, लखनऊ। समस्त लेख, रचनाओं एवं विज्ञापन में लेखन और विज्ञापनदाताओं के अपने विचार हैं। इसके लिए आर्यावर्त क्रांति की कोई जिम्मेदारी नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश ही होगा।
RNI No: UPHIN/2014/57034 Website: aryavartkranti.com
*सम्पादक: प्रभात पांडेय सम्पर्क: 9839909595, 8765295384 Email: aryavartkrantidainik@gmail.com